वर्ष-4 अंक-7 7 अक्टूबर,14 मूल्य-20/-

भोजपुरी माटी

पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् क मासिक मुख पत्र

पुरनका वर्ष-37 अंक-7 7 अक्टूबर 2014 मूल्य-20/-

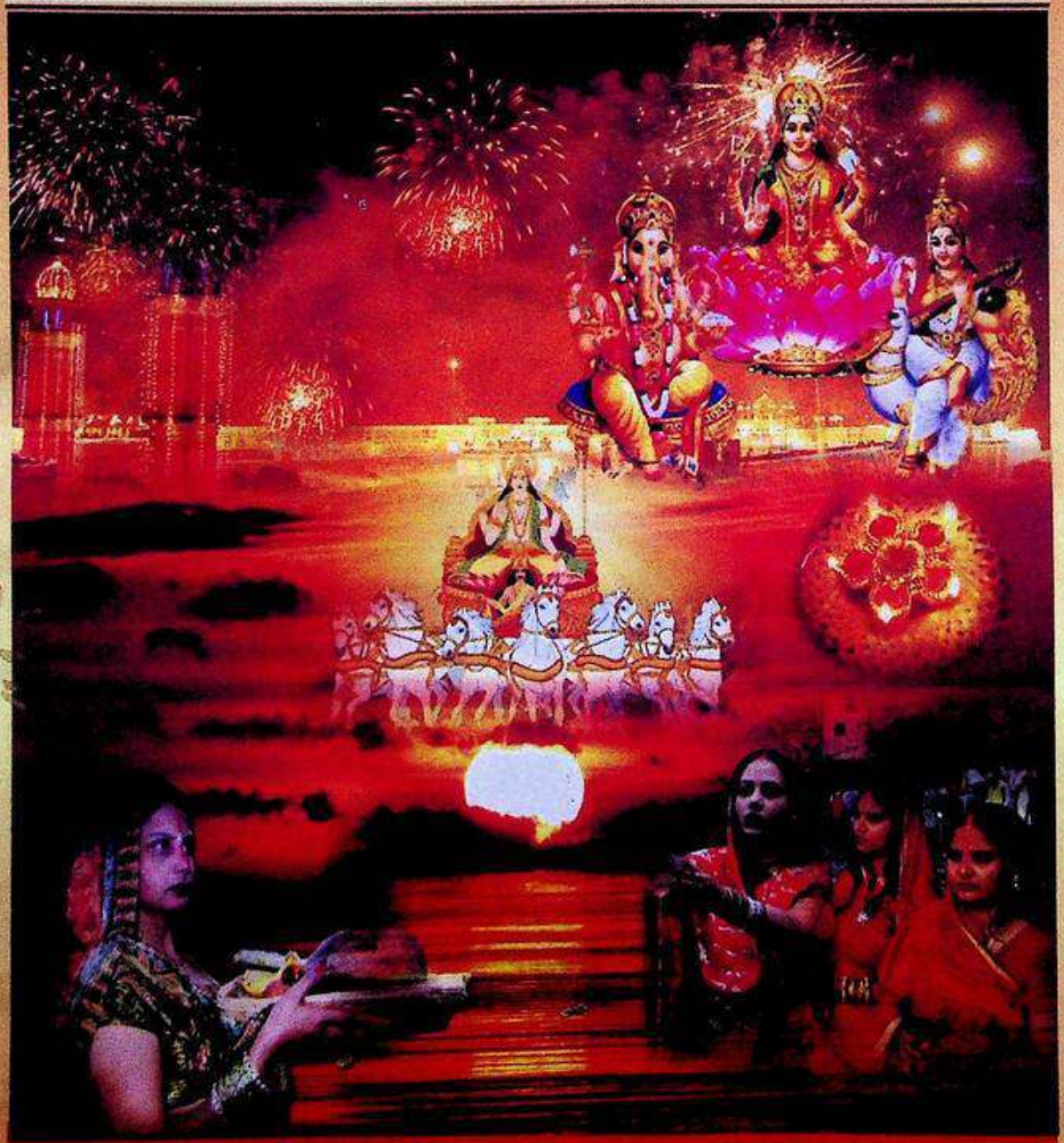

पाठकन के दीपावली आ छठ पूजा कऽ शुभकामना!

श्रद्धांजलि

शिवकुमार मिश्र (1939-2014)

पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् के प्रणेता, संस्थापक आ मंत्री (शुरु से अब तक 1972-2014 तक) भोजपुरियन के चहेता आ लोकप्रिय आदरणीय भाई **शिवकुमार मिश्र** (धौरहरा, वाराणसी) के आकस्मिक निधन 16 अक्टूबर 2014 के संध्या 5 बजे कोलकाता में हो गइल। एह दुखद समाचार से मन के बहुते चोट पहुँचल बा। शिवकुमार मिश्र जी का बारे में कुछ लिख पावे कऽ हिम्मत हमरा जइसन साधारण मनई के वश के बात नइखे।

पहिले तऽ उनका नांव का आगा स्वर्गीय शब्द लगावे में मन रो उठत बा, पर 'ईश्वर इच्छा बलीयसी' आ 'होनी के केहू टारि ना सके' इहे मानि के मन में संतोष करे के पड़ता। क्रूर नियति के कालचक्र असमय शिवकुमारजी के हमनी के बीच से छीनि लेलस। परन्तु उनकर इयाद का रूप में, उनकर कीर्ति, उनकर व्यवहार, उनकर भोजपुरी समाज के प्रति तन-मन-धन से समर्पण एगो आदर्श बनके हमेशा हमनी के बीच जीवित रही। स्व. शिवकुमार मिश्र के आत्मीय भरल व्यवहार बरबस अपना ओर लोगन के खींच लेत रहे। जे केहूओ उनका सम्पर्क में आइल, ऊ उनकर आपन होके जात रहे। उहाँ के दयावान, सहृदय, परदुख कातर आ मृदुभाषी रहलीं।

परिषद् का बारे में सदा विचार-विमर्श करे वाला, तत्पर रहेवाला, बाकी खुद खातिर कवनो चाह नाही के भावना रखेवाला शिवकुमारजी एक महान विभूति रहलीं। उहाँके हमार अग्रज रहलीं। हर काम में हमके सलाह-मशविरा देवे वाला राम जइसन हमार भइया आज अपना शरीर से नइखीं बाकिर उहाँ का अपना यश का काया में अमर बानी। उहाँके निधन से भोजपुरी समाज में जवन अभाव हो गइल, अब ऊ पूरा ना हो सके। उहाँके निधन से अब बुझाता जइसे भोजपुरी के एगो पाया ढह गइल होखे। बाकी जिनगी आ मउवत पर आदमी के कवनो वश ना होला, इहे सोचि के मन में धीरज रखि के, हम, परिषद् का ओर से, भोजपुरी माटी का ओर से स्व. शिवकुमार मिश्र जी के भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करत उनका खातिर, उनका परिवार खातिर ईश्वर से प्रार्थना करत बानी कि भगवान उनका परिवार के एह असहनीय दुख के सहे कऽ साहस आ शक्ति देस आ शिवकुमार भइया के आत्मा के शान्ति मिले, इहे प्रार्थना बा.....।

ओम् शान्तिः ओम् शान्तिः ओम् शान्तिः

– सभाजीत मिश्र

वर्ष 4 ❑ अंक 7 ❑ अक्टूबर- 2014

भोजपुरी माटी

सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक जागरण के मासिक पत्र

सम्पादक :
सभाजीत मिश्र

सम्पादकीय एवं व्यवस्थापकीय सम्पर्क :

भोजपुरी माटी

द्वारा पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद्
24सी, रवीन्द्र सरणी
कोलकाता- 700 073
दूरभाष - (033) 4007 5571
(Mob) 9339747126
G-mail : msabhajeet@gmail.com

देश में

प्रति कापी : 20 रुपये
वार्षिक शुल्क : 200 रुपये
द्वय वार्षिक : 360 रुपये
पंच वार्षिकी : 750 रुपये
आजीवन शुल्क : 1500 रुपये
(बारह वर्ष तक)

विदेश में

प्रति कापी : US $ 5 (डालर)
वार्षिक शुल्क : US $ 25 (डालर)
त्रय वार्षिक शुल्क : US $ 70 (डालर)
पंच वार्षिक शुल्क : US $ 100 (डालर)
आजीवन : US $ 500 (डालर)

मुद्रक :
मिश्रा आर्ट प्रेस
24सी रवीन्द्र सरणी, कोलकाता-73
फोन : (033) 2237 2648

! एह अंक में !

1.	राउर चिट्ठी		4
2.	महात्मा गाँधी (इयाद)	: शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम'	6
3.	देश के गद्दार ना बख्सैहें (कहानी)	: लव शर्मा 'प्रशांत'	7
4.	कवनो माई के गरीब.....(कहानी)	: डॉ. आशारानी लाल	12
5.	मोती अस लोरवा (गीत)		
	हुक ए बलमुवाऽ (गीत)	: बृजमोहन प्रसाद 'अनारी'	15
6.	दरद (कहानी)	: पारसनाथ सिंह	16
7.	दू गो गजल	: मिथिलेश 'गहमरी'	20
8.	आपन-आपन करम	: प्रो. प्रेमकुमार सिंह	21
9.	मइया लेईं ना खबरिया (गीत)	: अर्जुन पाठक 'विकल'	26
10.	हरदी गीत (गीत)	: रामेश्वरनाथ मिश्र 'विहान'	26
11.	आचार्य जीवक (नाटक)	: अनिल ओझा 'नीरद'	27
12.	कबो-कबो (लघु कथा)	: गौरीशंकर तिवारी	33
13.	कइलऽ केतनो जतन	: रामजीत राम उन्मेष	35
14.	सीता हरन रोजे-रोजे बा....	: राजनाथ सिंह 'राकेश'	35
15.	दरद न जाने कोय (नाटक)	: सुरेश कांटक	36
16.	कलयुग आ ईमानदारी (व्यंग्य)	: डॉ. उमेशजी ओझा	43
17.	विवशता कऽ वेदी पऽ	: देवेन्द्र कुमार	44
18.	गलत राह धइके ....(गीत)	: गौरीशंकर मिश्र 'मुक्त'	46
19.	आचार्य 'किरण' के इयाद.....(रपट)	: डॉ. अरुण मोहन भारवि	47
20.	दू गो गजल	: डॉ. बेकस	48
21.	बिरासत में दाग (कहानी)	: डॉ. उदय प्रताप कुशवाहा	49
22.	आस्था बा त रुन्हानो .....(रपट)	: सत्येन्द्र सिंह 'सिवानी'	52

❑ पत्रिका में छपल विचारन से संपादक के सहमति जरुरी नइखे।

www.bhojpurisahityangan.com

राउर चिट्ठी

✍ भोजपुरी माटी के जून 2014 के अंक हमरा देरी से मिलल, बाकिर मिलल। पढ़नी तऽ मन गद्‌गद् हो गइल। हर कठिनाई के पहाड़न के चीरत-फारत ई पत्रिका हौले-हौले आगहीं बढ़ रहल बा। ई भोजपुरी भाषा आ समाज के खातिर शुभ संकेत बा। एमें तनिका संदेह नइखे। पत्रिका अपना परिधि में मानव-जीवन के हर पहलू मसलन, साहित्य, कला, संगीत, सिनेमा, समाज-सेवा, राजनीति.....सभन के बड़ा बढ़िया ढ़ंग से समेटे में सफलता अर्जित कइले बा। एमें खाना–पूर्ति वाली कहीं कवनो बात के झलक नइखे। एकर केवल आ केवल श्रेय सम्पादक सभाजीत मिश्र आ उनकर टोली के बा। ए महान हस्तीयन के बुलंद हौसला के सलाम!.....

सदा की भाँति अबहीं के सम्पादकीय 'कुछ बात हऽ कि हस्ती मिटती नहीं हमारी' – उचित, सार्थक, सामयिक आ सारगर्भित लागल।

कवि मनीषी डॉ. सत्येन्द्र प्रसाद सिंह के कविता अन्तर्मन के छुए में सफल रहल। ई भाव आ भाषा में साफ आ स्पष्ट बा। नीरदजी के उपन्यास, 'आचार्य जीवक' के अंश अधिक अच्छा लागल। लेखक के उपन्यास के आचार्य कहे में हमरा कवनो संकोच नइखे।

कवि सत्येन्द्र सिंह सिवानी श्रद्ध से सम्पन्न रपट के संगही 'भोजपुरी में अश्लीलता काहें' लेख ध्यान देवे खातिर लिखल गइल बा, रचइतन के एपर तऽ ध्यान देबहीं के चाहीं, समाजो के भी। ए अंक के सब लेख, कविता, गजल, कहानी, व्यंग्य, समीक्षा, यात्रावृतांत.....सब के सब प्रशंसनीय बा, पठनीय बा आ बा उच्च स्तरीय। धन्यवाद!!.....

– प्राचार्य प्रेम कुमार सिंह (पूर्व)
हरिराम कॉलेज, मैरवा

✍ 'भोजपुरी माटी' अपना निरन्तरता आ नवीनता से भोजपुरी साहित्य में आपन एगो अलगे पहचान बना रहल बिया। जवना से भोजपुरी के झण्डा देश-विदेश सगरो शान से लहरा रहल बा। राउर साहित्य सेवा सराहनीय आ आवे वाला नयकी पीढ़ी खातिर प्रेरणादायक आ संबल प्रदान करे वाला बा। भोजपुरी माटी में आलोचनात्मक समीक्षा से भोजपुरी साहित्य अउरी पौढ़ आ दमगर होई। आ अउरी बेसी समृद्ध आ सक्षम साहित्य सामने आई।

– संजय कुमार 'सागर'
सिविल लाईन, विप्रनगर, वार्ड संख्या 17
बक्सर, बिहार-802101

✍ 'भोजपुरी माटी' पत्रिका अंक सितम्बर मिलल, पढ़के मन गद्‌गद् हो गइल, काहे कि परिषद देश से हट के हालैण्ड (निदरलैण्ड) के मशहूर भोजपुरी गायक ''राजमोहन'' के बुला के अपना के जना रहल बा, कि हम हर क्षेत्र के लोगन से मधुर सम्बन्ध रखले बानी, ई समाचार सुन के मन खुशी से बाग-बाग हो गइल।

मुक्तजी के कवितन के समीक्षा पढ़ के दिल में बड़ा खुशी भइल, मुक्तजी आजीवन आपन लेखनी चलावत रहीं, इहे प्रार्थना बा।

रामजी पाण्डे अकेला के लिखल पद 'नरेन्द्र मोदी' रोचक लागल। हमरा समझ ना आइल कि सम्पादकजी आपन सम्पादकीय काहे ना लिखेनी, हमार मन बड़ा दु:खी भइल, काहे कि सम्पादकीय पढ़े के हमार आदत हो गइल बा। ई पत्रिका भोजपुरियन के मान-सम्मान बढ़ावत रही, इहे उमीद बा।

– सुरजनारायण प्रसाद
बांगुर पार्क, रिसड़ा (हुगली)

✍ 'भोजपुरी माटी' के अंक 4-5 (जुलाई-अगस्त - 14) मिलल। सादर हार्दिक सौ-सौ धन्यवाद बा। भोजपुरी कऽ महात्मा सूर्यदेव पाठक पराग, स्वतंत्रा संग्राम कऽ द्वितीय

www.bhojpurisahityangan.com

चरण, बंगला साहित्य में चंडीदास आ विद्यापति, पाँच रात मायानगरी में (यात्रा) ई सभ आलेख सार-गर्भित अउर सराहे लायक बा। भोजपुरी सुपरस्टार सांसद मनोज तिवारी के सार्वजनिक अभिनन्दन आलेख से पूरा हाल मालूम हो जाता कि मनोज तिवारी जी के कइसे अभिनन्दन भइल। रमावती, चक्रव्यूह कहानी ए घड़ी के युग के घटना पर बा। किताबन के समीक्षा अच्छा लागल। निबंध, भजन, वीर समाधि, पहिचान बोलावेला गीत, ई सब काव्य रचना अनूठा बा। आचार्य जीवक उपन्यास अंश में संवेदनशीलता बा। लोकार्पण समारोह से 'गदहपूरना' पत्रिका के बारे में जानकारी मिलल। शुभ मंगल कामना बा।

– जनार्दन पाण्डेय विप्र

बैठनिया, पोस्ट-मठियावृत, भाया : मझौलिया

जिला : पश्चिम चम्पारण-845454

✍ रउरा अथक प्रयास आ परिश्रम से हमनी पाठक के भोजपुरी मासिक पत्र बराबर समय से मिल रहल बा। जहाँ भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन में अनेको बाधा आ रहल बा, उहाँ ई पत्रिका भोजपुरी माटी बराबर निकल रहल बिया, एह खातिर रउरा आ सब साहित्यकार के जतना धन्यवाद दीहल जा सके, ऊ थोरे बा। पत्रिका के प्रकाशन में हम आपन राय देब कि कहानी, कविता, नाटक आ जीवन वृतांत के साथ-साथ सम-सामयिक आ राजनैतिक ओजपूर्ण लेख भी प्रकाशित होखे। एह खातिर सब प्रबुद्ध लेखक लोग से आग्रह करब कि सब विचार करो। जइसे हिन्दी पत्रिका में लेख प्रकाशित होत बा, ओसही भोजपुरी में प्रकाशित होई तऽ भोजपुरी के गरिमा बढ़ी। फिलहाल जे कविता, कहानी, नाटक, आलेख, उपन्यास छपि रहल बा, स्तुत्य बा।

– पारसनाथ सिंह

ग्रा.पोस्ट : अरियाँव, भाया - डुमराँव

जिला : बक्सर-802119 (बिहार)

✍ भोजपुरी माटी कऽ छठाँ अंक मिलल आ पढ़लीं। पत्रिका कऽ सामग्री वैचारिकता के धार देवे में बड़ा मदतगार बा। भोजपुरी माटी भोजपुरी कऽ साहित्यिक पत्रिका के रुप में अपना कुल अंक में एगो अमिट छाप छोड़त बा। समाज अउरी देश में भोजपुरी साहित्य कऽ मशाल जला के नया आलोक, नई प्रेरणा, उत्साह अउर पथ प्रदर्शन कऽ रहल बा। ई पत्रिका एगो बहुत बड़ पाठक वर्ग के जोड़े वाली महत्त्वपूर्ण पत्रिका बा, एम्मे कउनो संदेह नइखे। भोजपुरी पत्रिकन में भोजपुरी माटी के हम सबसे अगली पाँत में खड़ा पावत बानी। भोजपुरी साहित्य कऽ विभूतियन के पत्रिका में जगह दे के सम्पादकजी पाठकन खातिर अमूल्य उपहार देले बाड़न।

डॉ. अक्षय पाण्डेय कऽ लिखल समीक्षा - 'मुक्त कऽ भोजपुरी कविता आ कवित विवेक' बड़ा नीक लागल। ई समीक्षा निश्चित रुप से विद्वत्ता से भरल अउरी युक्ति युक्त बा। भोजपुरी कऽ एतना सुघर शब्द इनका समीक्षा के विशिष्ट गुण बा। टी.एस. इलियट, मुक्तिबोध, धूमिल, तुलसी जइसन लोगन के समकक्ष मुक्तजी के स्थापित कऽ के समीक्षा में चार चाँद लगा देले बाड़न। मुक्तजी कऽ जनवादी कवितन के उजागिर कऽ के उनके जनवादी कवियन में शीर्ष पर बइठा दिहले हवँ। उनकर समीक्षा निश्चित रुप से पठनीय अउरी संग्रहणीय बा। पारसनाथजी कऽ कहानी 'कठपुतली' मन के छू गइल। स्वतंत्रता मिलला के बाद नारियन के जीवन में जउना तेजी से बदलाव आइल बा, समाज निर्माण में उनकर जवन भूमिका दिखाई दे रहल बा, ऊ पुरुष कऽ तुलना में कउनो तरह से कम नइखे। कथाकार कऽ कहना बा कि नारी जौं आपन मूलभूत गुन–लाज, श्रद्धा अउरी दया के संगे समाज निर्माण कऽ विभिन्न क्षेत्र में आपन योगदान करें तऽ ऊ दिन दूर नइखे कि जब सशक्त अउरी आदर्श भारत कऽ निर्माण होई। डॉ. काशी प्रसाद श्रीवास्तव कऽ व्यंग्य छांगुर भाई नीक लागल। बरमेश्वर सिंह जी कऽ दोहा पढ़े आ गुने लायक बाड़न सऽ। सुरेश कांटक कऽ धारावाहिक नाटक 'दरद न जाने कोय' प्रशंसनीय बा। एह तरे ई पत्रिका भोजपुरी पत्रिकन में ओइसहीं बा, जइसे सोने कऽ अंगूठी में तीर कऽ नग।

– कामेश्वर द्विवेदी (प्रधानाचार्य)

श्री नागाबाबा इ. का., आरी, सीतापट्टी, गाजीपुर

www.bhojpurisahityangan.com

महात्मा गाँधी

❑ शिव वहादुर पाण्डेय 'प्रीतम'

जब-जब धरती पर आगामुँह अत्याचार बढ़ेला।
बहत पसीना एँड़ी से चोटी पर जाइ चढ़ेला।।
तब-तब कवनो महापुरुष के हो जाला अवतार।
अपना बल पर धरा-धाम के देला भार उतार।।

मोहनदास करमचन गाँधी आ गइलन तरना के।
स्वतंत्रता भारत माँ का अँखियन से लागल झाँके।।
सत्य-अहिंसा का बल पर, ना उठल कबो तलवार।
आजादी देवेके भारत के कइलन बेड़ा पार।।

पशु-पक्षी तऽ भोजन खातिर कबो-कबो लड़ि जाला।।
चारा खावेके उहँवा से ऊ जल्दी दूर पराला।।
लड़ल संगठित युद्ध न होला पशु-पक्षी के काम।
खलिसा मनुज जाति के गुण हऽ लड़ल युद्ध अविराम।।

कइसन योद्धा रहलन जे नाम अस्त्र उठवलन हाथे।
भारत के जनता मिल-जुल के लागल उनुका साथे।।
रामचन्द्र भी धनुष उठाँ अरि के कइलन संहार।
चक्र सुदर्शन उठा कृष्ण भी कइले बाड़न वार।।

गाँधी जी सत्याग्रह लाठी लेवेके अइलन आगे।
ओही से मारे लगलन आ लागल दुश्मन भागे।।
तजि के गोरां भारत गइलन सात समुन्दर पार।
देश भइल आजाद सुधा के बरिसे लागल धार।।

मन-मयूर नाचे लागल जब सत्ता हाथे आइल।
राज-काज के पगरी नेता सभ के माथ बन्हाइल।।
बनल योजना पाँचि बरिस के बढ़ल आत्म-विश्वास।
देश के धरती सोना उगिली, जनमल अइसन आस।।

बाकिर कइसन हवा बहल जे देशवे साफ लुटाता।
गाँधी का फोटो का सोझा सविनय घूस लियाता।।
राजगुरु-सुखदेव, भगत आ शेखर, बीर सुभाष
रोवत होइहन फूट-फूट के देखि देश के नाश।।

गाँधी जी के सत्य-अहिंसा के बाटे परिभाषा।
सद्विचार मन में राखीं आ शान्त-चित्त अभिलाषा।।
जवन बात वाणी से बोलीं करीं सदा ऊ काम।
ना झगरा, ना मारा-मारी, ना हिंसा के नाम।।

गाँधी जी अपना के रहलन विश्व नागरिक मनले।
सभ विकास के राह चलो बापूजी रहलन कहले।।
मार पिटइया देश-विदेशन के बाटे बेकार।
करत रहे के चाही सभका सभ केहू से प्यार।।

बापू लोर गिरावत बाड़न स्वर्ग लोक में जाके।
सोंचत बाड़न मरि जइतीं हम फिर से माहुर खाके।।
का चाहत रहलीं, का होता आइल कइसन राज।
भारत के धन स्विस-बैंक में जमा होत बा आज।।

गाँधीजी का प्रतिमा पर बा चढ़त फूल के माला।
पुण्य तिथि भा दू अक्टूबर खूब मनावल जाला।।
बाकिर सत्य-अहिंसा नइखे, दया-धरम ना पास।
सिर पर टोपी अवरी खादी के बा बनल लिबास।।

आई कसम खाइवेके हमनी अत्याचार मिटाईं।
बापूजी का सपना के साकार रूप दिखलाईं।।
लूट-अपहरण, चोरी-हत्या के बाटे भरमार।
खलिसा श्रद्धांजलि दिहला से मिटी न भ्रष्टाचार।।

जाति-धर्म आ संप्रदाय के लागल बाटे झगरा।
हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख-इसाई में बा काँहे रगरा।।
भेद न बा, एके ईश्वर के हउए सभ संतान।
आजादी खातिर मिल-जुल के भइल सभे कुर्बान।।

बाबू का हम चरन कमल पर शीश झुकावत बानी।
उरके कोमल भाव पुष्प, नैवेद्य चढ़ावत बानी।।
हाँथ उठा संकल्प लेत बानी। हम शत्-शत् बार।
सत्य-अहिंसा का कटार से काटब भ्रष्टाचार।।

कुमुद कुटीर, महाराजा हाता, थाना रोड, बक्सर (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

देश के गद्दार ना बख्सैहें

❑ लव शर्मा 'प्रशांत'

हजारीबाग जेल! जेल गेट का बहरा मुलाकातियन के भीड़ लागल बाटे। ओ लोग में से कुछ लोग आपन सम्बन्धियन से सुख-दु:ख के बातों कऽ रहल बाड़न। दू-तीन ठो मुलाकाती तऽ आपन सवांग के फाटक का भीतर कैदी का रूप में देख के धीरा-धीरा रोवतो रहलन। मुलाकाती लोग अपना साथे खाना, बीड़ी, सलाई आ खैनी-चुना लेके आइल रहलन, जवन ऊ लोग अपन कैदी के जिनगी बीता रहल सम्बन्धियन के दे देलन।

जेल के संतरी सतर्क होके ड्यूटी पर राइफल लेले खाड़ रहे। लोहा के लमहर आ मजबूत छड़वाला फाटक का बाहर नामी क्रान्तिकारी बैकुण्ठ शुकुल आ भीतर महान क्रान्तिकारी योगेन्द्र शुकुल खाड़ बाड़न। दूनू आपस में एक दोसरा से धीरा-धीरा फुसफुसात बात कऽ रहल बाड़न। योगेन्द्र शुकुल आ बैकुण्ठ शुकुल के धीरा-धीरा बात करत देख के संतरी ओ लोग का अउरो नजीक आ गइल। जेलर पहिलहीं संतरी के योगेन्द्र शुकुल का बारे में बता देले रहे। ऊ योगेन्द्र शुकुल आ बैकुण्ठ शुकुल के धीरा-धीरा बात करत देख के अउरो भिरी आ गइल। लेकिन योगेन्द्र शुकुल जब लाल-लाल आँख करत ओकरा ओरि तकलें त ऊ आंन से कुछ पाछा हट गइल तभे बैकुण्ठ शुकुल धीरा आवाज में योगेन्द्र शुकुल के कहलें – 'बेतिया चम्पारन के रहे वाला क्रान्तिकारी फणिन्द्रनाथ घोष जवन समूचे उत्तर बिहार में क्रान्तिकारी संगठन के एगो मजबूत पाया रहे के टूट गइला का बोजेह से समूचे देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन के ताना-बाना टूट के चकनाचूर हो चुकल बा। ओकरे गवाही देला का चलते भगत सिंह, राजगुरु आ सुखदेव फाँसी पर चढ़ा देहल गइले। एतने ना, ऊ क्रान्तिकारी आन्दोलन के समूचा भेद उगिल देले बा, जवना का चलते देश के कोना-कोना में क्रान्तिकारियन के धर-पकड़ हो रहल बा। एने अपनहूँ जेल में बंद बानी। अखिल भारतीय स्तर के नेता में अब केवल चन्द्रशेखर आजाद जी बाच गइल रहनी, उहो 27 फरवरी सन् 1931 ईस्वी के इलाहाबाद के अलफ्रेड पार्क में अंगरेज पुलिस के गोली के शिकार हो गइलें। उनकरो लाश के पहिचान एही गद्दार फणिन्द्रनाथ घोष के जेल से ले जाके करावल गइल।'

बैकुण्ठ शुकुल के बात सुनते योगेन्द्र शुकुल के चेहरा चिंता आ क्रोध से भर गइल। कुछ देर चुप रहला का बाद ऊ गम्भीर आवाज में कहलें – 'फणिन्द्र का बारे में पूरा जानकारी तोहरा से पवला का बादो हमरा अबहूं विश्वास नइखे होत कि ऊ ऐन मोका पर एतना बड़ गद्दारी करी! ऊ त समूचा उत्तर भारत के क्रान्तिकारियन के अगुवा मानल जात रहे। ओकरा के समूचे उत्तर भारत के क्रान्तिकारी बहुते आदर देत रहलन। हमहूं ओकरा के बहुते सारधा से देखत रहनी। असल में उत्तर बिहार खास कके चम्पारन में क्रान्तिकारी संगठन के खड़ा करे आ ओकरा के मजबूत करे में ओकरे बड़ योगदान रहे। ओकरे लगातार परिश्रम का चलते चम्पारन में क्रान्तिकारी संगठन एतना मजबूत हो गइल रहे कि देश के दोसरा जगहन के क्रान्तिकारी लोग पुलिस से बाचे खातिर चम्पारन जिला में जाके सरन लेत रहलन। चम्पारन जिला के क्रान्तिकारी लोग शहीदे आजम भगत सिंह आ चन्द्रशेखर आजाद के

www.bhojpurisahityangan.com

महिनवन ले लुका के रखले रहस। चनपटिया के गुलाबचंद गुप्त, बटुकेश्वर दत्त आ अवरो कुछ दोसर क्रान्तिकारियो जेल में बंद बाड़न। तूं, बेतिया नवतन के केदारमणि शुकुल आ चन्द्रमा शुकुल इहे तीन आदमी बाँच गइल बाड़ऽ। हम जेल में बंद बानी, कुछ कर ना सकतानी। लेकिन हम ओ गद्दार फणिन्द्र के जान से मार के ओकर गद्दारी के बदला लेवे के किरिया खइले बानी। ऐसे एने से जाके तूं जेल तूर के हमरा के बहरा निकाले के योजना बनावऽ। ई काम तोहरा जल्दिये करे के परी काहे कि हम सुननी हऽ कि अंग्रेज सरकार अब क्रान्तिकारी आन्दोलन का खेलाफ ओकर मुखबर बनला आ कच्चा-चिट्ठा खोलला का इनाम में दस हजार रोपेआ आ बिहार पुलिस के एगो राइफलधारी बॉडीगार्ड देले बा। सरकार ओकरा के मीना बाजार में एक ठो दोकान खाली करा के देले बा। जवना में ऊ जूता के दोकान खोलले बा। ओकरा के ओही दोकान में बारह से एक बजे के आस-पास में मारे के परी। तोहर का विचार बा?'

लेकिन तुरन्ते बैकुण्ठ शुकुल जवाब देले – 'एकरा वास्ते रउरा चिंता करे के कवनो जरूरत नइखे, काहे कि ई काम तऽ हम आ चन्द्रमा सिंह पूरा करे जा रहल बानी। अपने एने से निफिक्किर होके जेले में रहीं काहे कि जेल तूरे में जदि हमनियो पकड़ा गइनी आ रउवो जेल से निकल ना सकनी तऽ फणिन्द्र घोष के गद्दारी के सजा के दी? ओकरा के हमनिए मारब।'

योगेन्द्र शुकुल बैकुण्ठ शुकुल के बात मान गइलन।

हजारीबाग जेल से बैकुण्ठ शुकुल सीधा बेतिया चहुँप गइले आ फेर ओतही से प्रसिद्ध क्रान्तिकारी केदारमणि शुकुल के गाँव भीतहाँ चहुँपले। ओहिजे से उनकर भाई उदेश्वरमणि शुकुल के साथे लेके बेतिया शहर के मीना बाजार का भीतर जाके फणिन्द्रनाथ घोष के दोकान का सामने खाड़ हो गइले। ओ समय बाजार में गाहक ना के बराबर रहे काहे कि बाजार में तेजी करीब तीन बजे का बादे आवत रहे। फणिन्द्रनाथ निश्चित होके दोकान का भीतर बइठल रहे आ बहरा एगो राइफलधारी पुलिस मुस्तैद होके बइठल रहे। बैकुण्ठ शुकुल फणिन्द्र के नीमन से देखले आ ओतहीं से हाजीपुर लवट गइलें।

कुछ दिन का बाद ऊ जलालपुर जाके चन्द्रमा सिंह से भेंट कइले। चन्द्रमा सिंह देश के आजादी के दीवाना क्रान्तिकारियन से सहानुभूति राखत रहलन आ ऊ अंग्रेज सरकार के पुलिस का नजर में अभहीं ले ना आइल रहस। चन्द्रमा सिंह एह पुनीत काम में उनकर हर तरह से मदद करे के वादा कइलें। फेर एक दिन दूनूं हाजीपुर होत दरभंगा पहुँच गइलें। दरभंगा के मेडिकल कॉलेज में हाजीपुर के रहनिहार ओ लोग के एकठो दोस्त गोपाल शुकुल डॉक्टरी पढ़त रहे। गोपाल धनिक घर के लड़िका रहे। ऊ गाहे-ब-गाहे बैकुण्ठ शुकुल के रोपआ पइसा से मददो करत रहे। ओह रात दुनूं ओहिजे रह गइलन। रात में ओतही तीनू जने मिल के फणिन्द्रनाथ घोष के जान से मारे के योजना बनवले। पेस्तौल के गोली से फणिन्द्र बाँचियो सकत रहे, एसे जहर में बुझावल दूठो दबिलो ऊ लोग पहिलही से इन्तजाम कइले रहलन।

रात भर दुनूं आदमी नीमन से सुतलें। भोरे चापाकल पर बैकुण्ठ शुकुल नहात रहस। उनकर धोती चुतरा पर फाटल रहे। गोपाल शुकुल के नजर बैकुण्ठ शुकुल के फाटल धोती पर परल त ऊ आपन एक ठो धोती उनका के दे देले। खाना खा-पीके बैकुण्ठ शुकुल चन्द्रमा सिंह के लेके केदारमणि शुकुल के घरे भीतहाँ बेतिया चल गइलें। उदेश्वरमणि शुकुल दुनूं आदमी के

www.bhojpurisahityangan.com

आव-भगत कइलें आ रात में सुतहूं के व्यवस्था कऽ देलें।

बिहान भइला ओतहिए दुनूं आदमी खाना खइलें आ उदेश्वरमणि के एकठो साईकिल मांग लेले। एकरा बाद दुनूं ओही पर चढ़ के बेतिया शहर ओरि चल परले। दुनूं आदमी का पास में एकही ठो पेस्तौल आ दबिला रहे। एकरा अलावा बैकुण्ठ शुकुल मीना बाजार में दहशत फइलावेला एकठो धुँवावाला बमो रखले रहस, जवन चला देला पर जबरदस्त आवाज का साथ फाटे। एह बम का फाटते बहुते करिया धुँवा निकल आस-पास के वातावरण के छेक लेवे आ चारू ओरि अन्हार कऽ देवे।

रास्ता में एक जगह चन्द्रमा सिंह साईकिल रोक देले काहे कि ऊ बहुते दूर से बैकुण्ठ शुकुल के बैक खींचत ले आइल रहस। अब ऊ थक गइल रहस।

चन्द्रमा सिंह बैकुण्ठ से कहलें – 'भाई बैकुण्ठ! अब हम थक चुकल बानी, ऐसे अब एतही से आगे हमरा के साईकिल के कैरियर पर लाद के आगे ले जाये के फलहा तोहर बा। एने के रास्ता भी त तू नीमन से देख के गइल रहलऽ।'

बैकुण्ठ शुकुल तनि गम्भीर होके कहलें – ''भाई चन्द्रमा! चलऽ पहिले ओ बड़का बरगद के गाछि का नीचा बइठ के तनि देर सुस्ता लेहल जाव। एही बीचे हम देश आ क्रान्तिकारी आन्दोलन के आज के परिस्थिति पर हम तोहरा के मोटा-मोटी तनिए में सभे कुछ बता देहब। अंगरेजन के राज पूरे भारत में फइलल चलल जात रहे। रहल-सहल कसर सन् 1857 के जन-क्रान्ति के नाकामी का बांद पूरा हो गइल। अब तऽ भारत के चप्पा-चप्पा पर अंगरेजन के शिकंजा कसा चुकल रहे आ जवने कुछो बाच गइल रहे ओ पर अंगरेजन के चाटुकार देसी राजा लोग राज करत रहलन। ई देसी राजा लोग खुदे शोषक रहलन आ आपन परजा जन पर बहुते अत्याचार करत रहलन। एह तरह परजा दोहरा पाटन का बीच पीसात रहलन। अंगरेज आ देशी राजा लोग के खिलाफ में विरोध के आवाज बुलंद करे वास्ते केहू आगा बढ़ेला तइयार ना रहलन। अइसने में देश में कुछ नौजवान लोग हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के स्थापना कइलन आ फेर धीरा-धीरा एकरा झण्डा का नीचा समूचे उत्तर भारत आ महाराष्ट्र में क्रान्ति के चिनगी सुनगे लागल। एह चिनगी में लहास भरे के काम कइले पं. रामप्रसाद बिस्मिल, असफाकुल्ला खाँ, रोशन सिंह, शहीदे आजम भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त आ शिव वर्मा। लेकिन बाद में जब सभे क्रान्तिकारी अंगरेजन के खड़ा कइल नकली पार्लियामेंट में धुँवावाला बम के विस्फोट कके सरकार के खिलाफ परचा बाँटत आपन गिरफ्तारी दे देलन तऽ एकरा बाद क्रान्तिकारियन के एह अगुवन पर कोर्ट में मोकदमा चले लागल। लेकिन क्रान्तिकारियन के खिलाफ सरकार के ठोस गवाह ना मिलत रहे। ऐसे सरकार चिंता में परल रहे। बेतिया के निवासी फणिन्द्रनाथ घोष जवन उत्तर बिहार के क्रान्तिकारियन के सिरमौर मानल जात रहे, आपन जान बचा के कलकत्ता भाग चुकल रहे। अंगरेजन के जासूस बिहार से लेके कलकत्ता तक ओकर पूरा सरगर्मी से खोज करत रहे। कुछे दिन बाद फणिन्द्रनाथ घोष कलकत्ता के मानिकतल्ला में गिरफ्तार हो गइलन। अंगरेज पुलिस उनका के नीमन तरे से थूर-थार के उनकर मनोबल पूरा तरे तूर देलस। ऊ एह यातना के सह ना सकलन आ समूचे भारत के क्रान्तिकारियन के कच्चा चिट्ठा अंगरेज पुलिस का सामने खोल देलन। अब ऊ अंगरेज सरकार के मुखबीर बन गइल बाड़न। उनकरे बतवला पर समूचे भारत में बाँचल क्रान्तिकारियन

www.bhojpurisahityangan.com

के धर-पकड़ हो रहल बा। ओकरे गवाही देला के कारन भगत सिंह, राजगुरु आ सुखदेव के अंगरेज सरकार फाँसी पर लटका देलस। बहुतन के जेल में ठूस देहल गइल बा। ई सभ फणिन्द्रनाथ घोष का गवाही का चलते भइल हऽ। आज एह सभ गद्दारी वास्ते ओकर हतेया कके बदला चुकावे के बा, जेमे फेर कवनो गद्दार क्रान्तिकारियन का साथे गद्दारी ना करे। आज हमनी ओकरे के मारे चलल बानी जा। सुननी हऽ कि एह गद्दारी वास्ते सरकार ओकरा के दस हजार रोपेआ नगद देले बा। मीना बाजार का भीतरो एगो दुकान खाली करा देले बा, जवना में ऊ जूता के दुकान खोलले बा। एकरा अलावां ओकरा के एकठो लाइसेंसी पेस्तौल आ एगो राइफलधारी पुलिसो ओकर सुरक्षा वास्ते देले बा। तूं डेरइहऽ मत। तोहरा खाली हमरा पीठ पर रहे के बा, जे करे के बा हम करब।'' 'हम काहे डेराएब? हमहूं तऽ एकठो क्रान्तिकारिए तऽ हईं, भले अबहीं एह लाइन में नया बानी।' तुरन्ते चन्द्रमा सिंह उनका के जवाब देले।

एकरा बाद बैकुण्ठ शुकुल साइकिल चलावे लगलें आ चन्द्रमा सिंह साईकिल के कैरियर पर फान के बइठ गइलें। एकरा बाद साईकिल तेजी से बेतिया मीना बाजार के ओरि चल परल।

बैकुण्ठ शुकुल साईकिल मीना बाजार के पछिम तरफ के बड़का दरवाजा के नजिक जाके साईकिल रोक देले। दुनूं आदमी एकरा बाद साईकिल से नीचा उतर गइलें। बैकुण्ठ शुकुल साईकिल के एगो ठो पान के दुकान पर लगा देले। ओती खानि ओतही एक-दूठो साईकिल रहे। एकरा बाद दुनूं आदमी मीना बाजार का भीतर घूस गइलें। बाजार में अभईं खरीद-बिक्री के समय ना भइल रहे। बाजार का भीतर अबगे एक-दू कके गाँहकन के आइल शुरु भइल रहे। कुछ देर बाद भीड़ बढ़ जाइत आ तब फणिन्द्र पर हमला करे में बहुते दिक्कत होइत, ऐसे दुनूं आदमी इशारा से बात करत फणिन्द्र के दुकान का भिरी जाके रुक गइलन आ दुकान का भीतर-बाहर नीमन से देख-समझ लेलन। एकरा बाद बैकुण्ठ शुकुल फणिन्द्र के दुकान का सामने बम निकाल के फोड़ देलन। बड़ जोर के आवाज करत बम फूट गइल आ ओतही चारू ओरि धूँआ फइल गइल। एकरा बाद मीना बाजार में लोग जेने पवलन तेने भाग परलन। बम के आवाज सुन के फणिन्द्र पेस्तौल निकाल लेलस। लेकिन एह बीचे बैकुण्ठ शुकुल भुजाली निकाल चुकल रहस, जवन जहर में बुझावल रहे। भुजाली के खोल बैकुण्ठ शुकुल निकाले लगलें तऽ भुजाली खोल से अधे बाहर निकलल। बैकुण्ठ शुकुल ओही से फणिन्द्र पर वार कइले। फणिन्द्र भुजाली के चोट से कंहरत नीचा गिर परल। बैकुण्ठ शुकुल तेजी का साथ ओतही से पाछा घूमलें, चन्द्रमा सिंह उनकर सुरक्षा वास्ते उनकर पाछही खाड़ रहस। एही बीचे फणिन्द्र का लगही बइठल ओकर दोस्त गणेश प्रसाद बैकुण्ठ शुकुल के पकड़े के चहलेले चन्द्रमा सिंह ओकरा पर भुजाली से वार कऽ देले। एकरा बाद दुनूं तेजी से मीना बाजार से बाहर आ गइलन।

बाहर भीड़ बहुते बढ़ गइल हे। भगदड़ मचला का बाद मीना बाजार के भीतर के भीड़ो बाहर के भीड़ में शामिल हो गइल रहे। पान के दोकान का सामने लागल बहुते साइकिल भगदड़ में ठोकर से नीचे गिर गइल रहे। अब ओ ढ़ेरी में से जल्दबाजी में आपन साईकिल खोजल बहुते मुश्किल रहे। ऐसे बैकुण्ठ शुकुल ओही ढ़ेरी में एगो साईकिल लेके ओपर चढ़ गइले। चन्द्रमा सिंह कूद के साईकिल के कैरियर पर तुरन्ते बइठ गइले। साईकिल आगा बढ़ल तऽ ओकरा पाछा पकड़ऽऽऽऽ पकड़ऽऽऽऽ कहत लोगन के भीड़ दउरे

www.bhojpurisahityangan.com

लागल। शुकुल हल्ला सुन के जल्दी-जल्दी साईकिल के पायडिल चलावे लगले। लेकिन ओ साईकिल में चेन कभर ना रहे। एसे जब शुकुल जी के धोती चेन में फँसल त उ कतनो कोशिश कइला पर ना निकलल। एकरा बाद दुनूं आदमी साईकिल आ धोती ओतहिएं छोड़ के पैदल चलत भीतहां गाँव पहुँच गइले। ओतहीं ज्यादे देर ले रुकल खतरा से खाली ना रहे, ऐसे थोड़िके देर बाद दुनूं आदमी टिकुलिया नाम के गाँव जा पहुँचले आ नांव पर चढ़ के नारायणी नदी पार कऽ गइलन। ओतही से दुनूं फुटुक गइलन।

बेतिया से भागत खानी जवन धोती साईकिल के चैन में फँस के छूट गइल रहे, ऊ अंगरेजन पुलिस का हाथ लाग चुकल रहे। धोती के अलावा कवनो दोसर सुराग पुलिस के हाथ ना लागल रहे। ई उहे धोती रहे जवन गोपाल शुकुल बैकुण्ठ शुकुल के पहिरेला देले रहस। ओ धोती पर कपड़ा धोए वाला धोबी के लगावल निशान रहे। अंगरेज जासूस लोग ओही निशान से आपन खोज शुरु कइलन। ऊ लोग बेतिया शहर आ ओकरा से सटल गाँवन के धोबियन के पकड़वा के मंगवले आ फेर ओ लोग से पूछाई आ पिटाई शुरु हो गइल। दू घंटा ले ओकनी के जबर्दश्त पिटाई कइलो पर कवनो धोबी ना सकरलस कि ऊ चिन्हा ओकनी के लगावल हऽ, तब ओकनी के पीटल बंद कऽ देहल गइल। बगले के एगो गाँव के एकठो धोबी, जवन हाजीपुर में कपड़ा धोए के काम पहिले करत रहे, चिन्हा देख के कहलस कि अइसन चिन्हा त हाजीपुर के धोबी लगावलन। एकरा बाद अंगरेज जासूस लोग हाजीपुर के धोबियन के धर-पकड़ कइलन। त एक ठो धोबी बतवलस कि ऊ चिन्हा त ओकरे लगावल हऽ। तब अंगरेज जासूस ओकरा से पूछलस – 'तब तो टुम यह भी जानटा होगा कि यह धोती किसका हाय? जानटा हाय तो जल्द बटाओ।'

धोबी कहलन – 'ई धोती गोपाल शुकुल के हऽ जे दरभंगा मेडिकल कॉलेज में डॉक्टरी पढ़लें।'

एकरा बाद गोपाल शुकुल गिरफ्तार कऽ लेहल गइलें। पुलिस उनकर बड़ थुराई कइलस। गोपाल शुकुल जमींदार घराना के लड़िका रहलें। ऊ पुलिस के यातना ना सह सकलें आ ऊ धोती के साथ-साथ बैकुण्ठ शुकुलो के सभे राज अंग्रेज पुलिस का सामने खोल के रखि देले।

एक दिन बैकुण्ठ शुकुल सोनपुर के पुल से होके जात रहलें कि तभे पुलिस के एगो हथियारबंद टुकड़ी उनका के दुनूं ओरि से घेर के गिरफ्तार कऽ लेलस। एकरा पहिले चन्द्रिका सिंह गिरफ्तार हो चुकल रहस। फणिन्द्रनाथ घोष आ गणेश प्रसाद जहर में बुझल भुजाली के घाव के चलते साते-आठ दिन बाद मर गइल रहलन। ऐसे बैकुण्ठ शुकुल आ चन्द्रमा सिंह पर हतेआ आ अंगरेज सरकार के विरोध में खड़यंत्र रचे के आरोप लगा के मोकदमा चले लागल, आखिर में बैकुण्ठ शुकुल के मुखबीर फणिन्द्रनाथ घोष के हतेयार के आरोप में फाँसी के सजा सुनावल गइल। चन्द्रमा सिंह के नाम कवनो गवाह ना धइले रहे, ऐसे उनका के बरी कऽ देहल गइल। बैकुण्ठ शुकुल के गया जेल में फाँसी पर लटका देहल गइल।

– श्रीराम कोठी
ग्राम : रघुनाथपुर, पोस्ट : मोतीहारी
पूर्वी चम्पारण-845401
(बिहार)
मोबाइल : 093056 62501

www.bhojpurisahityangan.com

कवनो माई के गरीब कबो मत कहिहऽ...!

□ डॉ. आशारानी लाल

अपना लइकाई में फुआ बिना कहनी खिस्सा सुनले-सुतते ना रही। लइकाई के ऊ कुल कहनियन के बड़ा मन से सुनत रही। एह कहनी में कबो राजा-रानी लउकँस तऽ कबो राजकुमार-राजकुमारी, कबो सात भइया के एगो बहिना रहत रही, तऽ कबो कउवा-हँकनी आ सीत-बसन्त लोग आ जात रहे। फुआ के कुल कहनिया नीके लागत रहे, बाकी ओही में जवन सम्पत्ति-विपत्ति आ सुखिया-दुखिया के कहानिया रहे – ऊ उनके बहुते भावत रहे। अइसनकी कहनिया फुआ बेर-बेर सुनत रही – तऽ ओही बीचे कबो रोवत रही, त कबो हँसत रही। ओह घड़ी ऊ ना जनली कि एह कहनियन के ई रूपवा उनको जिनगी में घूम-फिर के कबो न कबो जरूरे देखे के मिली।

फुआ एगो गरीब घर-परिवार में जनमल रही, बाकी कबो एह गरीबी के परवाह ऊ ना कइली। ऊ गरीब रही त का उनकर मनवा कबो गरीब ना रहे। लागता कि एही चलते उनकर बियाह एगो नीके-सुखे घर में ऊ आ गइल रही। एइजा के हर काम-धंधा में उनुका उमंगे लउकत रहे। इहाँ आके ऊ अब नया-नया रहनो-चाल सीख लेले रही, आ एगो बी.डी.ओ. साहेब के मेहरारू बनला से साहेबाइन कहाए लागल रही।

फुआ भले साहेबाइन बन गइल रही, बाकि तबो अपना नइहर के दुखिया रूप ऊ कबो भुलइली ना। कहले जाला कि नइहर से आइल कुकुरो बिलरिया बड़ा पियारी होली सन। इहे बात फुओ के साथे रहे। उनका माई के गाँव से केहू कब्बो दिन-रात-साँझ-सबेरे कबहूँ आ जात रहे, तब फुआ एक गोड़ पर खड़ा होके ओकर आव-भगत करे में जुट जात रही। माई के घर के तऽ केहुए आ जाय, जइसे उनकर भइया, चाचा, काका, मामा चाहे अवरी केहू, तब तऽ बुझाय कि फुआ के कवनो दउलत भेंटा गइल बा। उनुका बुझइबे ना करे कि ओह लोग के कहँवा उठाई-बइठाई आ का-का खियाई। चउका में जाके सोचे लागत रही कि घीव में चाउर डाल के खीर बनाई कि दूध में।

फुआ के एही नइहर के घर-परिवार में उनकर एगो भतिजी जनमल रही, जवन गजबे के सुघर लउकत रही। ओह भतिजी के सुघरइए देख के एक दिन उनकर बियाह बहुते बड़ आ धनी-मनी घर में बिना लेन-देन के भऽ गइल रहे। उहाँ के दउलत देख के तऽ ओह भतिजी के गोड़ कबो भुइयाँ पड़ते ना रहे। जब ना तब सबका सोझा अँइठिए के चलत रही। इनकर बियाह त एगो चलता-पुर्जा वकील से भइल रहे बाकी उनकर भसुर एगो बड़ इंजीनियर रहन आ ननद एगो सरकारी अस्पताल में डॉक्टर रही, तऽ ससुर नेताजी रहीं। अब भला एह भतिजी के कवना बात के कमी रहे। इनकर नाँव नीति रहे तऽ हरदम वकील साहेब इनकर नउवें लेके इनके बोलावत रहन आ साँझी के जब कचहरी से घरे आवत रहन तब इनकर बटुआ रुपिया के नोट देखा के भर देत रहन। नीति के लागे कि उनका घरे तऽ रोजे लछिमि बरसत रहेली। इहे कुल दउलत देख के ऊ नइहरो के भुलाइल रहत रही।

कबो-कबो नीति के चिट्ठी उनका नइहर में पहुँच जात रहे, जेमें ऊ सबके परनाम लिखले रहत

www.bhojpurisahityangan.com

रही, तब लोग कहे कि नीतिया एतना सुख में रहलो पर हमनी के इयाद त करते रहेले। नीति के चिट्ठी में परनाम के बाद खाली उनुका सुख आ धन-दउलत के बात लिखल रहत रहे। नीति इहो लिखल ना भुलात रही कि माई रे – तोरा घरे हम एही से ना आ पाइलाँ कि ओइजा हमार गाड़ी खड़ा करे के कहीं जगहा हइए नइखे। माइयो ई कुल सुन के आ अपना गरीबी के सोच के बस चुपा जात रही आ बेटी के इयाद में अपन आँसू पोछत रहत रही।

फुआ के भउजाई बहुते दिन बाद एक बेरी उनुका घरे अइली, तऽ खइला-पियला के बादे लगली दुनू ननद-भउजाई आपुसे में अपन दुःख-सुख बतियावे। भउजी कहली कि ए बबुनी साँचो न नीतिया अपना चिट्ठिया में लिखले रहे कि ऊ बड़ा न धनी घर में बा। जानतानी एक बेरी हमरा पेट में बहुते पीड़ा आ दरद रहत रहे। हम डॉक्टर के देखवनी, तब पता चलल कि हमरा पित्त के थइली में पथरी भऽ गइल बा, अब ओकर ऑपरेशन करे के पड़ी। एह ऑपरेशन के पइसा जब डॉक्टर बतवलन तब तऽ ऊ सुन के हमरा आँखी के सोझा अन्हार हो गइल – ए बबुनी। लगलीं सोचे कि हमरा घर में तऽ खाये - पिये के सुलधान जुरते नइखे, तब हम कहाँ से पचीस हजार रुपिया पाइब। अब भले एह दरद से हम मरब बाकी ऑपरेशन ना कराइब। एही बीचे नीतिया के एगो चिट्ठी आइल, जेसे पता चलल कि कुछ दिन खातिर ऊ अपना डॉक्टर ननद घरे जातिया। तब ए बबुनी हम ओह चिट्ठिया के जवाब ना दीहलीं, आ चल दीहलीं ओकरा ननद घरे।

बबुनी हो नीति के ननद हमरा दुःख में भगवान बन गइली। हमके अपना अस्पताल में ले जाके भर्ती करा दिहली। बहुते जाँच करवली, बाकी हमरा से एक्को पइसा ना मँगली। इहे नाहीं हमार ऑपरेशनो करा दीहली। पेट में से पथरी निकाल के, सीसा में रख के हमके देखाइयो दीहली। फेरु दू दिन बाद अस्पताल से हमके अपना घरे ले गइली। तब तिसरा दिने हमके एगो बड़ा बढ़िया साड़ी देके आ बाबू के पैंट-कमीज देके हमरा घरे भेंजली। सुनी नऽ ऊ बाबू के पाँच सौ रुपियो हाथ में देले रही। ए बबुनी भगवान उनके बहुते धन-दउलत देले बानऽ। साँचो न नीतिया एगो बड़ घर के पतोह बन गइल बिया।

बबुनी हो ऊ सड़िया हम आज लेले आइल बानी। आजु ले अपना गरीबी के चलते कबो रउवा के कुछ ना दे पवलीं – ई सड़िया रउवे लायक बा। एके अब रउवे पहिनी। अपना भउजाई के एह दान आ तियाग पर तऽ हमार आँख सुखते ना रहे कि उनसे हम कुछु कहीं, बस ओइजा बइठल के बइठले रह गइलीं। फेरु जब हम अपना के तनी सम्हरलीं तब लगलीं भउजाई से बतियावे कि एही बीचे बी.डी.ओ. साहब आ गइलन। ऊ अवते आ भउजी के देखते मातर कहलन कि आज हम अपना सरहज के हाथे के चाय पियब तोहरा हाथ से नाहीं। उनुका एह बात से तऽ हँसी-मजाक के अइसन पुरवइया ऊहां बहे लागल कि कुल दुःख के ताप पर पाला पड़ गइल।

कुल भइल-गइल आ समय बीतत गइल तब एक दिन नीति हमरा घरे घूमे अइली। चाय-पानी पियते लगली हमसे बतियावे। कहली कि ए फुआ हम तोहसे का कहीं – हमार तऽ इज्जत हमार महतारी डूबा देलस ह। हम अपना ननद घरे चार दिन खातिर गइल रहीं, तऽ एक दिने का देखतानी कि बहरा गेटवा के लगे एगो रिक्सावाला दू रुपिया खातिर खूबे झँउहार मचवले बा। जब हल्ला सुन के ओने तकलीं तब उहाँ

www.bhojpurisahityangan.com

अपना माई आ छोटका भाई नन्हें के देखलीं। हम जल्दी धउरल उहाँ गइलीं आ रिक्सावाला के दू रुपिया दिया के भगवलीं। ओह लोगिन के हाथ में टीना के एगो छोट बक्सा रहे – ओके अपने ले लिहलीं आ ले आके अपा ब्रीफकेस लगे चोरा के धर दिहलीं। जानतारू फुआ डॉक्टर दीदी के आवे के बेरा भइल रहे, तब ऊ देखतीं तऽ का कहतीं – हमरा माई आ भाई के एह रुप के देख के। ऊ लोग हमरा घर के दाइयो नोकर से बेहज लउकत रहे। ओह लोगिन के पहिनावा-ओढ़ावा तऽ नीक घर के रहबे ना कइल, आ रहनो चाल अइसन कि तोहसे का बताईं। माई नीचे भूइयां चउका में बइठ के थरिया में खयका खइली तऽ भाई अइसन रहे कि चम्मच रहते हाथे से खाली भात-दाल सान के खाके उठ गइल। दीदी के घर के आदमीजन जब ई कुल देखलस, तब हम ओह लोगिन के पूछला पर बता दीहलीं कि हमरा गाँवें से ई लोग आइल बा। कबो केहू के ना बतवलीं कि ई लोग हमार माई आ भाई हउवे लोग।

जानतारू फुआ कि – ऊ तऽ अस्पताल में जब माई के ऑपरेशन भइल तब डॉक्टर दीदी जनली कि हमार माई आइल बाड़ी। एह लोग के रहन चाल के चलते हमार इज्जत माटी में मिल गइल। हम तऽ आपन मुँह देखावे लायक रहिए ना गइलीं। ए फुआ का-का बताईं, माई जाए के बेरा केहू के इहाँ तक कि नोकरो-चाकर के एक्को पइसा ना दीहली। हमार तऽ मुड़ी लाज से गड़ले रहि गइल। सोचत रहीं कि दीदी अपना मन में का सोचत होइहन। दीदी तऽ अइसन रही कि माई के जात घड़ी बहुते बिना पइसा के दवाई-बीरो दे दीहली आ केहू से कुछु कहबो ना कइली।

फुआ कुछ देर ले तऽ नीति के मुँह टुकुर-टुकुर ताकते रह गइली फेरू कहली – नीति हम का बोलीं, जब तूँ अपना माई आ भाइए के देख के लजा जा तारू, तब हम का कहीं।

तोहार माई हमरा से तोहरा ननद के एतना तारीफ बतियवली तऽ का ओह में तोहार बड़प्पन लुकाइल ना रहे। तोहार ननद तोहरा माई के अपना साथे अपना गाड़ी में बइठा के घरे ले अइली, तबे तऽ ऊ कहत रही कि बबुनी हो आज हम बेटिए के भाग से न मोटर गाड़ी में बइठलीं हँऽ।

जानतारू नीति तोहरा माई के दिल एगो दरिया बा, जेमें त्याग, तपस्या, दान-पुण्य करे के भाव भरल बा – ऊ तऽ हमरा एकही बात से झलक गइल कि – ए बबुनी – नीति के ननद एगो बड़ा बढ़िया आ मँहगा साड़ी हमके देले बाड़ी। हम तऽ गाँव में रहिलाँ, फटलो-पुरान से हमार काम चलत रहेला, ई साड़िया रउवे लायक बा। आजु ले हम रउवा के कुछु दे ना पवलीं हँ – एके रउवे राखीं।

नीति जानेलु नऽ कि औरत के गहना आ कपड़ा से बड़ा पियार होला। मोह तऽ एतना भरल रहेला कि कुल मेहरारू लोग ओही से सटल रहेली लोग, बाकी तोहरा माई के पियार-दुलार एह साड़ी में पाके तऽ हम अपन आँसू ना रोक पवलीं। तू उनही के अपन माई ना कहिके गाँव वाली कइसे कह दिहलू हमरा नइखें बुझात। का, गहना आ कपड़ा से माई के चिन्हल जाला का?

नीति तोहार दीदी बड़ा उच्च कुल के संस्कार वाली बिटिया बाड़ी। ऊ कबो कुछु ना सोचिहन न कहिहन। ऊ जानतारी कि तोहार माई उनके जेतना दे देले बाड़ी, ऊ केहू ना दे पाई। तोहार माई हिरदया से

www.bhojpurisahityangan.com

उनके अपन आशीर्वाद देले होइहन जेसे डॉक्टर दीदी जिनगी भर फरिहन-फुलिहन। ऊ रोजे गरीब रोगी लोगिन के सेवा करेली आ आपन जिनगी के झोरी आशीर्वाद से भरत रहेली। नीति तू जानतारू कि ना कि कवनो माई लगे-दूगो दउलत के गठरी तऽ हरदम धइल रहेला। एगो होला उनकर संतोष जवन टिकरिया आ लुगरिया में लपिटाइल रहेला आ दूसरका होला उनकर आशीर्वाद जवन उनका हिरदया में लुकाइल रहेला। एह दउलत के सोझा दुनिया के सब दउलत के लोग घूर-माटी बुझेला। ए नीति जानते बाड़ू कि हमरो लगे एगो गरीब माई रहे आ तोहरो लगे उहे बा। बाकी एक बेर हम फेरु तोहसे कहब कि कवनो माई के तू कबो गरीब मत कहिहऽ।

आज फुआ के बेरि-बेरि उनका लइकाई के कुल कहनिया जेमें दुखिया-सुखिया-सम्पत्ति आ बिपत्ति लोग रहे, इयाद परे लागल रहे। बुढ़िया माई लोग केतना मन से ओह कहानियन के कहत रही लोग जेके सुनत में फुआ के आँखी से लोर बहे लागत रहे!

अब फुआ सोचे लगली कि ठीक अइसने एगो कहनी तऽ ऊ अपना लइकाइयों में सुनले रही जेमें धन-दउलत पवला पर लोगिन के अँखिए मुदा जात रहे, कबो केहू के केहू चिन्हते ना रहे।

– 2793, डी-II
एम.ब्लॉक, टाइप-IV
नेताजी नगर, नई दिल्ली-23

मोती अस लोरवा

❑ बृजमोहन प्रसाद 'अनारी'

जागि-जागि सरी राति करतारी भोरवाऽ
गनत हो बाड़ी ना, रोजो अंगुरी के पोरवाऽ....

गाल तर हाथ धके, सोचेली आ ताकेली,
अंचरा से आड़ कके, ओहरा ले झाँकेली,
रहि-रहि चू जालाऽ, मोती अस लोरवाऽ राम.....

ममसेली भीतरे, केहू से नाहीं कहेली
दिलवा के दुख ठीक ओही तरे सहेली
जेतरे दुःख देलाऽ काँच बरतोरवाऽ राम.....

सँझवति बारि के बुता देली दियाऽ
कोइलरि के बोली लागे जहर के बीयाऽ
घर भकसावन लागे जइसे ढुके चोरवाऽ राम.....

जब-जब करेली सेनुर ललकाऽ
मंगिया में उठि जालाऽ, बड़े-बड़े झालकाऽ
बाहरा निकासेली फेंके के सिन्होरवाऽ राम.....

हुक ए बलमुवाऽ (विदेशिया)

जाके बहरियाऽ खबरिया ना एको दिहलऽ
होखताऽ करेजा टुके-टुक ए बलमुवाऽ.....

बरिसे नजरियाऽ, बदरियाऽ नीयर रोजो,
बरताऽ करेजवा में, लुक ए बलमुवाऽ.....

रोजो कोइलरियाऽ लहरियाऽ उठावतियाऽ
मारतियाऽ छतियाऽ पर मुक ए बलमुवाऽ.....

खालरा ओदरि जाताऽ, गुलगुल बिछवना पर,
एतना कड़ेर भइले हुक ए बलमुवाऽ.....

अस मन करताऽ की, जहर माहुर खा लीहीं,
चाहें जाईं कुँइया में, उझुक ए बलमुवाऽ.....

साया अउरी सारी 'अनारी' बिना गारी देला,
कवन भइल हमसे चूक ए बलमुवाऽ.....

– मोब.-094509 53545

www.bhojpurisahityangan.com

दरद

❑ पारसनाथ सिंह

हम यानी रामजीवन पांड़े आ विनोद कुमार सिंहा दूनों आदमी एक गाँव, एक टोला आ एकसाथ रहे वाला लंगोटिया यार रहनी जा। ऊ कायस्थ हम ब्राह्मण। बाकी हमनी में कबो जाति-पात, धरम-करम आ खान-पान में कवनों भेद-भाव ना रहल। एक साथ रहल, खेलल-कूदल, लिखल-पढ़ल आ एक छीपा में खा-पीयल रोज-रोज के काम रहल। हमनी के अइसन संघत देख के लोग दाँते अंगूरी काटे आ कहे कि संघतिया होखे तऽ अइसन।

हमनी के संघत तऽ एक रहे बाकी लिखाई-पढ़ाई के मामिला में अन्तर आवे लागल। विनोद के परिवार नौकरी पेशा में रहे, एहसे उनुका के अंग्रेजी माध्यम से लिखा-पढ़ा के सरकारी अफसर बनावे खातिर शहर लिया के चल गइल। हमार ब्राह्मण परिवार पूजा-पाठ, कथा-बरत आ जर-जजीमनीका के काम करावे में लागल रहल। एह से सबके विचार रहे कि हम हिन्दी, संस्कृत माध्यम से लिख-पढ़ के नोकरी करे के साथ-साथ पूजा-पाठ, कथा-बरत आ जर-जजीमनीका के काम देखत रहीं।

समय के अन्तराल में विनोद पढ़ के डी.एस.पी. से एस.पी. बन गइलन आ हम बी.ए.बी.एड. कके राजकीय धरिछना उच्च विद्यालय डुमरा में हिन्दी के अध्यापक हो गइनी। हम ब्राह्मण रहनी आ संस्कृतो जानत रहनी। बाकी पूजा-पाठ, कथा-बरता आ जर-जजीमनिका के काम करावे में ना रुचि रहे ना विश्वास। कर्म के महत्त्व दीं आ उच्च विचार आ सादा जीवन के शिक्षा सब विद्यार्थी के दीं।

कबो काल दू-चार साल पर विनोद से हमरा भेंट-मुलाकात होखे तऽ ऊ अइसन अपनत्व भाव से गले लगा के मिलस कि ई ना बुझा कि ऊ पुलिस उच्च पदाधिकारी एस.पी. हवन आ हम एगो साधारण मास्टर। उहे लइकन वाला नट-खट व्यवहार आ मर-मजाक होखे। बातचीत के सिल-सिला में कबो उनका के हम गौर से देखीं तऽ लागे कि उनका चेहरा पर एगो पुलिसिया रोब बा। एह विषय में जब टोकीं तऽ टार देस, ''यार, ई पुलिस लाइन हऽ। रोब से ना रहब जा कड़ाई से ना बोलब तऽ सब कपार पर मुते लागी। हम जहाँ बानी, ओहिजा एकबार आके तू सब देख लऽ। इहे हमार तोहरा से आग्रह बा।''

चार-पाँच बरिस हो गइल। चिट्ठी-चपाटी लिखला आ कबो-काल फोन पर बात कइला के सिवा विनोद से हमरा भेंट ना भइल तऽ, हमार मन कइलस कि जवना जिला-शहर में ऊ बाड़न ओहिजा जाके उनका से भेंट कइल जा। आ देखल जा कि ओहिजा उनकर रहन-सहन कइसन बा आ कइसे ऊ हमरा साथे मिलत बाड़न। मन कइलस उनका पास जाए के पहिले उनका के अपना आवे के सूचना फोन पर दे दीं। बाकी फेरु सोचनी कि बिना सूचना देले जाइब आ एकाएक मिलब तऽ जवन मजा आई, ऊ कहके गइला पर ना आई।

सुबह सात बजे ट्रेल से उतर के हम रेक्शा से विनोद के डेरा पर गइनीं। तऽ देखनी कि शहर से किनारा मेंन रोड पर पुलिस लाइन में चारो ओर से हाता दिहल एगो डेढ़-दू बिगहा के बगइचा के बीचो-बीच एगो कोठी रहल जवना के मुख्य दरवाजा पर आरक्षी अधीक्षक बी.के. सिन्हा के लिखल बोर्ड लागल रहल आ दूगो रायफलधारी सिपाही गेट पर आ चार गो अन्दर पहरा देत रहलन। दरवाजा के सामने जाके

www.bhojpurisahityangan.com

हम एगो सिपाही से कहनी - ''सिपाही जी, हम साहेब से मिलल चाहत बानी। रउरा उनका के हमरा के मिलवा दी।''

सिपाही हमरा के अइसे देखलस जइसे हम कवनो अजूबा चीज होई। ऊ हमरा के शंका के निगाह से ऊपर-नीचे देखत बोलल – ''जा-जा साहेब से मिले के ना ई बेरा हऽ ना जगह। तोहरा मिले के होई तऽ दस बजे के बाद ऑफिस में अइहऽ।''

हम सिपाहिन के समझवनी – ''भाई, हम उनकर बचपन के साथी हईं आ उनका गाँव से आइल बानी। हमार नांव रामजीवन पांड़े हऽ।''

सिपाहिन पर हमरा बात के असर ना परल। ऊ समझलन सऽ कि साहेब से मिले वाला एक से एक बड़का लोग मोटर-कार से आवत बा तऽ ई रेक्शा से आवे वाला के पूछत बा। ऊ ओसहीं बोलल – ''तू जवन भी होखऽ। दस बजे से पहिले साहेब से ना मिल सकऽ।''

हमरा बुझाइल कि सिपाही अइसे बात ना सुनिहन सऽ। रोब से बोलनी – ''ठीक बा अगर हमार बात साहेब से ना कहबऽ लोग तऽ विनोद से सब बात फोन से कहत बानी। आगे तू लोग जनिहऽ का होई।''

दूसरका सिपाही पर हमरा बात के असर परल। ऊ हमरा के एगो कुर्सी पर बइठा के एगो सिपाही के बोला के सब बात समझावल। ऊ सिपाही अभी खबर देत बानी – ''कह के चल गइल।''

हमरा अइला के खबर पावते विनोद जइसे रहलन ओसही उत्साह-उमंग से भरल उठ के झपटल अइलन आ हर्षोल्लास से गले लगावत गद्-गद् होके बोललन– ''तोहरा के देख के आ पाके हमरा कतना खुशी बा ई हमरा से कहल नइखे जात। आजु हमार बड़ा भाग्य बा कि तू हमरा पास अइलऽ। चलऽ एह गरीब के दरवाजा पर तोहार स्वागत बा। अब कुछ दिन सेवा करे के मौका दऽ।'' फेरु एगो शिकायत कइलन ''तू हमरा साथे बहुत बड़ मजाक कइलऽ हऽ। बिना हमरा के खबर देले आ गइलऽ। बताव तू फोन कके आइल रहतऽ तऽ तोहरा अगवानी में हम पाँच गो फोर्स के साथ गाड़ी लेके स्टेशन पर आइल रहतीं। बाकी तू हमरा के स्वागत करे के मौका ना दिहलऽ।''

हम उनका कपार पर प्यार से थपकी देत कहनी – ''जवन मजा आ आनन्द तोहरा के बिना जनवले मिलल ऊ मजा जना के आइल रहतीं तऽ ना मिलीत। सबके निगाह हमरे पर लागत रहित आ सब सोचित कि ई कवन आदमी हऽ कि एस.पी. साहेब अगवानी करत बाड़न।''

हमरा खातिरदारी में विनोद एको कमी ना रखलन। उनकर सब परिवार बड़ा प्रेम भाव से बोलत-बतियावत रहल। नहइला आ खइला-पियला से लेके सुतल बइठल पर विशेष धेयान देला के साथ-साथ हमेशा हमरा साथे रहस। शहर के जवन-जवन दार्शनिक जगह रहल सब दू दिन में देखा-सुना के तिसरा दिन सांझि खा कहलन – ''एह जिला जवार में जवन-जवन देखे लायक चीज रहल ऊ देख लिहलऽ। आजु रात खा तोहरा के एह शहर-बजार के सबसे मशहूर चीज देखावे के ले चलब।''

रात आठ बजे विनोद के डेरा पर गाड़ी से दू आदमी आइल। दूनों आदमी के परिचय करावत ऊ हमरा से कहलन – ''इहाँ के एह जिला के ए.डी.एम. साहेब हईं आ इहाँ के एह शहर के नामी आदमी समाज सेवा संस्थान के संयोजक पी.के.जयसवाल जी हईं। जयसवाल जी इहाँ के हमार परम मित्र अध्यापक रामजीवन पाँड़ेजी हईं। हमार परिचय पाके दूनो आदमी बड़ा प्रेम से हमरा से हाथ मिलावल। सब आदमी से परिचय भइला के बाद हमनी के चारो आदमी एगो

www.bhojpurisahityangan.com

स्कारपियो गाड़ी में बइठ के शहर में चलनी जा। हमनी के पीछे एगो पुलिस के गाड़ी भी रहल। दूनो गाड़ी टाउन थाना पर जाके रुकल। थाना इंचार्ज जोरदार सलूट मरलस।''

एस.पी. के गम्भीर कड़क मुँह पर ले आवत विनोद पुलिसिया लहजा में पूछलन – ''कहऽ का भइल? सब समझा देलऽ बाड़ऽ नू।''

''हजूर, का मजाल बा कि केहू मुँह खोल दे। ई जाति बड़ा शतिर होली। बात पचावे खूब जाने ली। हजूर, जतना देर मन करे, ओतना देर मोजरा सुनी, केहू ना जानी। एकदम सोरह बरिस के जवान सुनर आ सुरीली छोकड़ी हऽ।''

दरोगा के बात सुन के हमार माथा ठनकल। इहे सब देखे-सुने खातिर एह रात में एहिजा लिया आइल बाड़न। हमार हिचकिचाहट देख के विनोद हँसलन, ''अरे भाई, दुनिया मजा लूटत बिया। शहर में सब चलेला। चलऽ देखऽ सुनऽ। अइसन चीज तोहरा देहात में कहाँ देखे के मिली।''

एक-एक करके दूनों गाड़ी एगो गली में दाखिल भइली सऽ। इन्तजाम अइसन रहल कि पूरा गली में सन्नाटा। कवनों आवा-जाही ना। दूनों ओर पुलिस तैनात। एगो कोठा के सामने हमनी के सब आदमी कार से उतर के सीढ़ी पर चढ़त एक तल्ला पर एगो कोठारी के सामने गइनी जा। दुआरी पर खड़ा दरवान अदब से सिर झुकवलस आ दरवाजा खोल दिहलस। कोठरी ना जादा बड़ रहल ना छोट। फर्श पर गद्दा लागल रहल, जवना पर नया चादर बिछावल रहल आ तकिया के पुरान खोल बदल के नया लगावल रहल। कोठरी के बतसल दुर्गंध मारे खातिर सस्ता इत्र के छीड़काव कइल रहल। हमनी के देखते बगल के कोठरी में से एगो सजल-संवरल पान रचल ओठ आ झिलमिल दुपट्टा ओढ़ले चालिस-पैतालिस बरिस के मेहरारू हाथ में सजावल पान के थाली ले-ले निकललि आ अदब से सिर झुकावत बोललि – ''तशरीफ रखीं हजूर।'' कह के पान सामने पेश करत फेरु बोललि - ''अभी रउआ सब के खिदमत में नूरजहाँ जान हाजिर होत बिया।''

सबके साथ गद्दा पर बइठते हमरा बुझाइल कि बगल वाली कोठरी में कवनों मेहरारू अपना दुध मुँहा बच्चा के अपना से अलग करत बिया, जवना से ऊ कुनमुनात बा। बाकी ओकर कुन-मुनइला के अवाज बन्द करे खातिर पहिले से आपन साज-बाज लेके बइठल सब सजिन्दा राग-धुन छेड़े लगलन। एही बीच एगो सोरह बरिस के सवांग सुन्दरी सोरहो सिंगार कइले आइल आ अदब से सबके सामने झुकि के सलाम कके घूंघरु बजावत तान छेड़ के नाचे-गावे लागल। ''इन्हीं लोगों ने .....इन्हीं लोगों ने....इन्हीं लोगों ने ले लिन्हा दुपट्टा मेरा....। हमरी ना मानों सिपहिया से पूछो.....जिसने.....जिसने बीच बजरिया में छीना दुपट्टा मेरा।''

गाना बीच में पहुँचल। नर्तकी आपन दुपट्टा लहरा के सीना के गोलाई के बेपर्दा करत ठुमका मारे लागल तऽ हमार आँखि नीचे हो गइल। मन कइलस कि उठ के चल दीं। तबहीं घुंघूरू के रुन-झुन आ तबला के थाप के बीच बगल वाली कोठरी के केंवाड़ी के फांक से एगो दूधमुँहा बच्चा के रोवत, कहंरत आवाज सुनाइल। एक छन खातिर नाचत नर्तकी के गोड़ थथमल बाकी फेरु जोर पकड़ लिहलस। हम ओकर चेहरा देखनी। ओकर नजर हरमुनिया वाला पर टीकल इशारा से चिरौरी करत रहल बाकी हरमुनिया मास्टर हरमुनिया से ना-ना करत रहल।

जब बच्चा के रोवे के अवाज जोर-जोर से होखे लागल आ नाच-गाना बोर होखे लागल तऽ विनोद इशारा से नाच बन करवलन। नूरजहाँ चुपचाप खड़ा हो गइली। कुछ नाच से आ कुछ डर से ओकर सीना भांथी नियर ऊपर-नीचे आवे-जाये लागल। विनोद ओकरा के देखत कहलन – ''तू अन्दर जा।'' नूरजहाँ डरत सजिन्दा के ओर देखलसि। विनोद डटलन– ''हम कहत बानी तू जा।'' नूरजहाँ जइसे जाल से हिरनी छूटे, ओइसे भागल।

नूरजहाँ के जाते दाँत पीसत खाला शबाना बाई आइल आ दाँत चिचार के दूनों हाथ जोरले बोलल -- '' खता माँफ

www.bhojpurisahityangan.com

करीं हजूर! गलती हो गइल। रउरा महफिल में खलल परल एह से हम बड़ा शर्मिन्दा बानी। बस अभी लउकी के हाजिर करत बानी।'' बाकी तब-तक सब खड़ा हो गइल आ थानेदार के डर से खाला थर-थर काँपे लागल। आ बार-बार बइठे के चिरौरी करे लागल। बाकी तब-तक सब नीचे उतरे लागल।

उतरत खा हम सबसे पीछे रहनी एह से नूरजहाँ के डाँटत खाला के आवाज सुनाइल ''हरामजादी, तोरा से पहिलहीं नू कहले रहनी हाँ कि एह हराम जादा के औलाद के अफीम चटा दिहे, बड़का साहेब आवत बाड़े। बाकी ते ना जाने कवना के जामल एह लइका के प्यार-ममता में परल बाड़े। हरामजादी सब सत्यानास कऽ दिहलस।'' फेरु झोंटा धऽ के मारे लागल। ''का रे, तोरा छाती में ढेर दूध हो गइल बा? अगर ई लछन रही तऽ कोठा बन्द होखे में देरी नइखे। आजु दरोगा बे मरले छोड़ी ना। आजु मार-मार के तोर चमड़ी नोच लेब।'' खाला के व्यवहार से हमार कान सून। बुझा कि केहू शिशा गला के डालत बा।

हमनी के सब आदमी नीचे आ गइनी जा। नीचे आवते थानेदार सलुट मरलस, ''हजूर, अतना जल्दी....? आप सबके ऊपर जात केहू देखल हऽ तऽ ना।'' केहू कुछ ना बोलल तऽ कार के दरवाजा खोले लागल। हमनी के गाड़ी में बइठ गइनी जा। गाड़ी जब चलल तऽ विनोद खीसी दाँत से ओठ काटत ए.डी.एम. से बोललन - ''साला थानेदार सब मजा कीर-कीरा कऽ दिहलस। एकरा मोजरावाली मिलल हिया तऽ बेमरिहा लइका वाली। एह साला के खबर लेबे के परी। हई साली खाला पइसा खातिर एगो कमशीन लइकी के कवनों रईशजादा के हाथ बेच के सोरह बरिस में कुमारी से मेहरारू बना दिहलस।'' ए.डी.एम. मुड़ी उठवलन – ''बाकी ई एक पीस बिया। जतने ई सुनर बिया ओतने एकर मीठा सुर बा। अगर एकरा लइका ना रहित तऽ बड़ा मस्त लागीत।''

समाजसेवी हँऽ में हँऽ मिलवलन – ''एकर सुनरई देख मन मचले लागल हऽ। अगर एकरा लइका के रोवाई ना सुनाइत तऽ आजु कुछुओ हो जाइतऽ।''

हमरा बुझाइल कि सारा शरीर में चिउंटी रेंगत बाड़ी सऽ आ भितरे तूफान उठल बा, जवन रुकत नइखे! ओह! हमनी के कइसन इंसान बानी जा कि केहू के मजबूरी नइखी समझत। कतना लाचार आ मजबूर बिया ऊ जवन अभी खुदे कमशीन लइकी बिया बाकी मेहरारू बना दिहल गइल बिया। जवन अपना लइका खातिर हर छन लूटा-पिटा रहल बिया। इहे देखे गइल रहनी हम? छी..... छी.....। तमाशा देखनी जरूर बाकी एगो बदरंग जिन्दगी के। तबहीं हमरा के टोकत विनोद बोललन – ''अरे यार कवना सोच में पर गइलऽ। ई रंडी के जाति अइसने होली। एन्हनी के बारे में का सोचे के बा। ई बड़ा शातिर चलाक होली। चलऽ आजु रात बीतल बात बीतल। काल्हु दोसर देखल जाई। एह चार दिन के जिनगी आ दू दिन के जवानी में का मन तड़पावे के बा। गिर जाई जवानी आ झुक जाई शरीर तऽ ई मजा ना मिली। इच्छा के पूरा कइल पुन्न हऽ आ मारल पाप।''

ओह रात ना हमरा खाना खा गइल ना नीन लागल। बार-बार एके दरद टीसे, ''जहाँ चार महिना के दूधमुँहा लइका के अफीम चटावल जा, जहाँ एगो कमसीन लइकी के लालच देके आपन हवस मिटावल जा, जहाँ एगो मतारी के मजबूरी आ दरद ना समझल जा, जहाँ न्यायकर्त्ता आ पथ प्रदर्शक आपन इच्छा पूरा करे खातिर दोस्त के इच्छा मारत होखे ओहिजा का होई!! सोचते गांव आवे खातिर हम सबेरही उठ के स्टेशन चल दीहनी।

– ग्राम-पोस्ट : अरियाँव
भाया : डुमरांव, जिला : बक्सर (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

दू गो गजल

❑ मिथिलेश'गहमरी'

(1).

बदलाव हो समाज में कुछ एह तरे, हुजूर
आन्ही के देख-रेख में दीया जरे, हुजूर,
अच्छा बा, गिर पड़ो उकठ के हरियरे, हुजूर
इंसान में फरके जवन मजहब करे, हुजूर
रखले रहीं परान से जेकरा के साटि के
लागल करेजा पर उहे, कोदो' दरे, हुजूर
का साँच बा, का झूठ बा, रउवा से के कही
सबका मुँहे पऽ ताला बा रउवा डरे, हुजूर
चिरईं उड़ल बिहान के, साँझे लवट गइल
'बुचिया' शहर से अब ले, ना लवटल घरे, हुजूर
हम थाक गइलीं खोज के, केहू त ना मिलल
जे, देश के गुमान पर जीये-मरे, हुजूर
अब, आगा बढ़िके हाथ में साँचा सम्हारलीं
कवनो, ना कवनो रुप तऽ माटी धरे, हुजूर
अइसन पड़ोसी अब, कहाँ केहू बा गाँव में
जे, दोसरो के दु:ख-फिकिर, चिन्ता हरे, हुजूर
'मिथिलेश' तऽ बिरिछ लगा दिहलन उमीद के
रउवा दुआ दिहीं कि, ई फूले-फरे, हुजूर

(2)

घाट पर, पानी नदी के चढ़ रहल बा,
नाव खातिर रोज खतरा बढ़ रहल बा,
आदमी छिछिया रहल बा काम खातिर
चाक पर 'रोबोट' मूरत गढ़ रहल बा,
फूल में रख के जहर कुछ लोग, एहिजा
दोष तितली के कपारे मढ़ रहल बा,
आदमीयत उड़ रहल पेट्रोल जइसन
आदमी, कुरआन-गीता पढ़ रहल बा,
काँखि में, विश्वास के 'सुजनी' दबवले
धीरे-धीरे मन, पहाड़ी चढ़ रहल बा,
कह रहल हम बानीं अपना दिल के बीतल
जग, कथा अपना मोताबिक गढ़ रहल बा,
कट गइल मिथिलेश उनकर कहिये अंगुरी,
नोंह, फाइल में अबहियों बढ़ रहल बा,

*****

ग्रा.-पो. : गहमर, जिला : गाजीपुर-232 327

मोबाइल :09451936687

www.bhojpurisahityangan.com

आपन-आपन करम

❑ प्रो. प्रेमकुमार सिंह

देवलोक के अद्‌भुत भविष्यवाणी से खिन्न, अन्दरे अन्दर विचलित, डरल कपसल दुराचारी पतित शिरोमणी महाराज कंस के कोटिन कलछल से लिप्त, घृणित प्रयासन के बादो वासुदेव श्रीकृष्ण के मउवत के घाट उतारेवाली बात तऽ फरके रहल, उनुकर केन्हूँके एगो बार ना मुरुकल?.....

अधरासुर, बकासुर, वृषभासुर, धेनुकासुर, पूतना.....असमन अचूक आ अनगिनत दइतनो के कुछ ना नूँ चलल? ऊ सभन अपना कुलक्ष्य में तऽ साफा विफले रहलन, उलटे ऊ आपन पूरहर भद् करवावत, बाल-ग्वालन, गोप-गोपियन के सोझा एगो चटकदार खिलवाड़ बन के रहि गइलन, पुरहर मनोरंजन तमाशा! उलटे बाँसबरेली वाली बात! ऊ गइलन गोपी बल्लभ शिशु श्रीकृष्ण के हंते आ अपने हता के मरत-लोक से पुरहर मुक्त हो गइल रहलन।

रजोगुना गर्व के मद से मातल महाराजा कंस, गोपाल श्रीकृष्ण के बध करे बदे मिथ्या स्नेह आ रिश्ता के कैप्सुल में हूरि-हूरि के पुरहर धोखा भरलन आ एहि तरी ऊ एगो विशेष विषैला औषधि तइयार कइलन, अति घातक! बड़ा खतरनाक आ अपना आशा के ऊँच से ऊँच सिंहासन पर आरूढ़ अहंकार के विस्तृत छतरी अपना माथा पर तनले, काम-क्रोध, दुविधा आ द्वंद में पुरहर जकड़ल, असत्य में संलिप्त कुराही राजा कंस अपने खास भगिना वासुदेव श्रीकृष्ण के बध करे वाला षड़यंत्र के जामा पहिरावे खातिर सत्यपुरुष अक्रूरजी के अपना हठ दर्प, अन्याय आ अधरमन के महाकुण्ड स्वरूपा दरबार में अविलम्ब आमंत्रण के निमंत्रण पेठवलन।

महामना अक्रूरजी के उहाँ पहुँचते महाधिराज कंस के तरफ से चटाके कुटिल आदेश मिलल कि ऊ वासुदेव श्रीकृष्णचन्द्र के गोकुल से मथुरा लावस आ महाराजाधिराज कंस के राजदरबार में उनुकरा के अविलम्ब उपस्थित करस ना त एकर हाल उहे जनिहें, उनके पुरजा-पुरजा काटि के भूखाइल जंगली कुकुरन के आगे डाल दीहल जाई। महाधिराज के रूख अत्यन्त कठोर रहे, कड़क! ऊ जे देखते अक्रूर जी के तऽ भयंकर घुमरी लागे लागल, चक्कर पर चक्कर आवे लागल। ऊ तलमला के गिरहीं चाहत रहलन कि अचानक अपना के सम्हार लेहलन। अइसे उनुका अपना प्रान के कवनो खास चिन्ता-मोह तऽ रहे ना बाकिर अपना राजा के आज्ञा के उलंघन क-के कवनो तरह के पाप करमन के भागी बने के ऊ ना चाहत रहलन आ एगो अउर बात कहीं इहे हरि-इच्छा होई तब? हरिभक्त अक्रूरजी सोंच में पड़ि गइलन। अब ऊ जे होई से होई, बवाल में उनुका पड़ला के का जरूरत? श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा के गतियो के कवनो थाह बा? ऊ अनन्त बा, अगाध बा। मनइन के जानल मोसकिले नइखे, महामोसकिल बा। ऊ जे असम्भव। सभ के वश के बाहरा। एहि से ऊ महाराजा के आदेश के उल्लंघन करे वाला विचार से साफा फरके होके, अब ऊ राजाज्ञा स्वीकारे खातिर तइयार रहलन। तबहूँ उनुका नीक तऽ लागत रहे ना। मन तीन-पाँच में परल आगे-पाछे, लुब-लुब भटकत रहे। साँप छछूनर वाली गत उनुकर हो गइल रहे, ना घोंटते बनत रहे, ना थूकरते? अइसे तऽ संत-स्वरुप अक्रूरजी कसहूँ गोपी बल्लभ गोपाल श्रीकृष्ण के गोकुल

www.bhojpurisahityangan.com

से अपना संगे मथुरा नरेश कंस के भीरी ले जाए में, नन्द, यशोदा के पूरहर चिरउरी के चमत्कारन से राजी करे में सफल रहलन, जेमें कि ढेरे भूमिका त्रिभंग सुन्नर कमल दल लोचन श्याम सुन्दरे के रहे। सगरी उनुकरे मन मरजी आ उनुकरे मन माया, कहीं धूप त कहीं छाया!.....

अइसे तऽ अक्रूरजी अपना संगे संग बाँके-बिहारी बाल श्रीकृष्ण के लेके चले के तऽ चललन बाकिर गाँव के डरार पारि करते उनुकरा बरियारे ऊखी-बिखी लेसलस। ''का पता? ऊ दइब के, कि दइत के फेरि में पड़ल बाड़न? ऊ जे कुछो होखे बाकिर ई तऽ उनुका अयनक अइसन साफ लउकता कि ऊ फेरि में तऽ पड़िये गइल बाड़न। अब विधि-विधान के का नीयत बा? हमरा से ऊ का चाह रहल बाड़न? कुछो बुझाव तब तऽ?.... हरि ओऽम्!....हरि ओऽम्.....'' एहि उधेड़-बुन में ऊ परले परल अचानक घबड़ा गइलन। छाती ताबरतोर धड़के लागल, हलक सूख के काँट अइसन चुभे लागल। ओठन पर फेफरी पर फेफरी परे लागल। कहँवा एगो अत्याचारी, निरंकुश घिनवना, निष्ठुर, दुष्ट दइत आ कहँवा एगो सुन्दर सलोना निष्पाप, निर्दोष फूलनो से सुकुमार सुशील बालक? ई विचार उनुका मन में आवते ऊ भाउक हो गइलन. कहीं ऊ दुष्टवा दइत एहि बालक के कंकरी के खींचा बतिया अइसन भछ जाय तब?..... हरि! हरि!..... तब का होई?.....

ऊ फेरू बाल श्रीकृष्ण के अउर अधिका गौर से निरेखे लगलन।..... त्रिभंगी से स्थित चरन कमलन से घुटनन तक आ घुटनन से जांघन तक के सगरी अंगन, सोना के सुनहरा छरहरा छड़ी अइसन शोभत मन के बरबस मोहत रहे। कमर में बाँधल रेशमी पीताम्बर के कछनी के छटा कमल के केसर के खण्ड अइसन कलात्मक चित्ताकर्षक रहे, वर्णनातीत। ऊ जे हर मन में पुरहर आनन्द भरत रहे निरंतर.....।

करधनी के सुमधुर शब्द, हंसन के बच्चवन के सुमधुर स्वर — चह,चह! चुह, चुह! चीं,चीं! चूं, चू!.... गूंजत एगो अलग आ अलबेला संगीत के राग फूटत प्रतीत होत रहे, जइसे नाभि कुण्ड से ऊपर के रोंअन के कतार, ऊ जे अइसन छटा बिखेरत रहे कि जइसे ऊ सहज सुभाव से भौंरन के झुण्ड ओहि कुण्ड के ओरि बेतहास दउरत जात होई!

मोतियन के चमाचम चमकत माला आ चन्दन चरचित छाती पर बैजन्ती बनमाला लहरात, एगो स्वर्गिक आनन्द धरती पर उतारत लागत रहे साइत। ए सभन अलौकिक छटनन से अइसन प्रतीत होत रहे कि जइसे गंगा मइया के कछार पर तमाल के सांवर सलोना सुकोमल लत्तर हवा के झीरी-झीरी झोंकन से मद मस्त होके झूमत रहे, अविराम। सुन्नर-सुन्नर, सुठउल भूजन के अगिला हिस्सन पर मुलायम-मुलायम हाथन के छवि अइसन सुशोभित होत रहे, जइसन परम रुपमान पंकज-नल पर नलिन के हरिहर-हरिहर पत्तइन आ गऊवन के खूरन से उड़त धूरन से धुसरित बाल श्रीकृष्ण के मुखमण्डल आ ओपर रखल बंशी — ई दुनू के मिलन, एगो अद्वितीय शोभा के रचना करत रहे, ऊ जे सौभाग्यशाली सभन, ओके देख के बिना पुलकित भइले नाहिं रह सकतारे! पोर-पोर से नाच उठिहें ऊ?.... निस्संदेह! कोमल-कोमल पल्लवन से बंद आ खुलत ओठ, कुन्द-कली अइसन दाँतन के कतार, फूल अइसन नरम-नरम कपोल, सुग्गा के ठोरन अइसन सुन्नर नाक, विशाल आ खूबसुरत नयनन पर धनुष अइसन भौंहन विचित्र शोभा पसरले रहलन, यत्र, तत्र सर्वत्र। कानवन के नीचे डोलत कुण्डल, कामदेवता के अति कलात्मक नाचो के फीका करत अति खूबसूरत छवि पैदा करत रहे, जइसे सौन्दर्यो शास्त्रन के वर्णन के परे?

www.bhojpurisahityangan.com

धनुष के आकारवाली तिरछी भौंहन के ऊपर तिलक रेखा अत्यन्त सुन्नर लागत रहे। माथा पर मोरमुकुट के छटा अवर्णनीय रहे। ई सगरी के मिलला से अइसन लागत रहे जइसन कि कामदेवता भौंहन के धनुष पर तिलक के तीरन से केशन के करिया बादलन में मोर-मुकुट के इन्द्र के देखते बनबना के, धनुष पर बानि चढ़ा के युदध करे पर उतारू बाड़न, तत्पर!.....

संत सुभाव अक्रूरजी बाँके बिहारी श्री श्यामसुन्दर के अइसन अलौकिक छवि अपलक निहारत-निहारत, मदमस्त हो गइल रहलन। उनुकर दुनू आँखिन ओह अलौकिक रूप राशि पर ठहर के ठमक गइल रहे। हटे के कवनो नाव ना लेत रहे, तनिको टस से मस ना? एहितरी ऊ सर्वरूप, अनन्त, करुणामय, अविनाशी आनन्ददाता प्रान-पियारे, पतित पावन त्रिलोकी परम पुरुष, गिरिधर नागर श्रीकृष्ण के सौन्दर्य दर्शन में भाव-विभोर हो गइल रहलन, पुरहर निमग्न जइसे संगीत के सुख में सुध-बुधि खो के हिरनी व्याधि के तेज भाला के कवनो परवाह ना करेली! मोहनी मूरत के साक्षात् दर्शन के आनन्द में ऊ अइसन विभोर रहलन, जइसन चकोरी चनरमा के सुमधुर दर्शन सुख में निमग्न। भाव-विभोर के एहि दशा में कहँवा से से कहँवा ऊ पहुँच गइलन, ऊ जे उनुकरा कुछो पता चलल? जब सारथी रथ रोकलन तब नूँ जाके उनुकर समाधि टूटल, भला? आ ऊ जनलन कि ऊ अब मथुरा पहुँचहीं चाहत बाड़न, इहँवा से अब थोरही दूर पड़ी! पुरहर रास्ता कटि चुकल बा। तय भइल कि आजु रात एहि अमराई के छाँहन में आराम से कटे, काहे कि आस-पास में सुन्नर सरोवरो बा, निर्मल जल से लबालब भरल। विश्राम करे बदे एहि से सुघर स्थान अउरो कवनो का हो सकता? सारथी के ई परखल जगह बा, जानल बुझल। एहि से ऊ सभनी उहें रात भर विश्राम लेहलन, थकावट त रहबे कइल खूब गाढ़ा नींद लागल रहे, एक्के सुतल बिहान।

फजिरहीं फजिरे अक्रूरजी सरोवर के सुघर शीतल जल में आनन्दपूर्वक स्नान कइलन आ ओकरे तट पर शीरीष के गाछ के नीचे ईश्वर के धेयान कइलन तऽ धेयान में अद्भुत दृश देख के ऊ दंग रहि गइलन। धेयान में बाल श्रीकृष्ण के उहे मोहनी मूरत वाली छवि बार-बार आवत रहे। उहे मूरत, उहे सूरत, उहे दर्शन। आँख मूदस तऽ श्रीकृष्ण, आँख खोलस तऽ श्रीकृष्ण! श्रीकृष्ण! श्रीकृष्ण!.....इहो श्रीकृष्ण! उहो श्रीकृष्ण! हर जगहे श्रीकृष्ण!.....''हे दइब! ई का हो रहल बा? जिनगी में तऽ अइसन कबो ना भइल रहल, ई भक्ति भंग वाली बात? घबड़ाहट तऽ पहिलहीं से रहे, उनुका। अब अउर बढ़ि गइल रहे। बाकिर एगो तऽ निष्कर्ष निकलल कि ई कवनो साधारण घटना नइखे, विधि-विधान के परोसल एगो विशिष्टे ना, अति विशिष्ट घटना बा, असाधरण। ऊ जे एके रोकल अक्रूरजी के मान के बाहरवाली बात रहे, बसरहित! ई विचार आवत उनुकरा मन में फरहरि आइल, ऊ जे धीरे-धीरे थउसल जात रहे। ऊ जे भइल नीके भइल आ ऊ जे आगे होई तऽ नीके होई! अब नूँ भगवान के भेद खुल रहल बा, अहिस्ता-अहिस्ता? अब उनुका पूरा विश्वास हो गइल कि ऊ जे कर रहल बाड़न, ऊ अपने नइखन करत, परमपिता परमेश्वर के द्वारा बरियारी उनुकरा से ई सब करवावत जात रहे, साइत। ई सगरे उनुकरे खूरम खेल हऽ, एमे उनुकर आपन का दोष बा? ऊ तऽ कवनो गलती नइखन करत, भरसक. उनुकरे आदेशन के पालन करे में ऊ तन-मन से लागल बाड़न, बरोबर। साँचो, अविज्ञात परमात्मा के जानल, मनुष्य मात्र के बस के परे वाली बात बा, काहे कि ऊ मन, बचन आ करम से अगम बा, अगोचर बा। अइसे तऽ कृपा सिन्धु

www.bhojpurisahityangan.com

त्रि-तापहारी श्रीकृष्ण के अक्रूर जी पर ई किरपे के नूं सब प्रताप हऽ कि ऊ ई सब देख-सुन के अपना आत्मग्लानी से पुरहर उबरत महसूस करत रहलन आ तब ऊ खुशी-खुशी मदांध कंस के दरबार में वासुदेव श्रीकृष्ण के साथ उपस्थित होखे खातिर साहस कइले रहलन।....'' ऊ जे जइसे भगवान श्रीकृष्ण, कंस के दरबार भीरी पहुँचलन, पहुँचते विराट् मदांध गजराजन से बारादरिए में उनसे सामना हो गइल, पुरहर भीड़ंत। भीमकाय, भयंकर गजराजन के गुरुगरजन से धरती आ आकाश पुरहर तऽ थरथरात रहे। केहू ऊ जे देखल ओकर खून जम गइल रहे, पथर असमन। बाकिर बाँकेबिहारी बाल श्रीकृष्ण तऽ गजराजन के ओहि चिघ्घाड़ के स्वागत शोर समझ के स्वीकार कइलन, अपना मधुर मंद आ मदिर मुसकानन से। आ दूसर उनुकरा भीरी रहे का? हाथ में बाँसुरी, ओठन पर मुसकान आ सिर पर मोर के पाँख? आ एहि तीन हथियारन से अचानक आइल आपदा के, उनुकरा सामनो करे के रहे। ऊ त मिले आइल रहलन अपना ओहि मामा कंस से, ऊ जे निष्ठुर रहे, दुराचारी रहे आ उनुकरा महतारी-बाप के, क्रूरता से कैद कऽ के उन पर अत्याचार ढ़ाहत रहे। होखे के त रहे प्रेम-मिलाप आ होखे लागल मार-काट? उनुकरा पाले कवनो अउर हथियार त रहे ना, एहि से ऊ अपना मुसकान के मिसाइल से गजराजन पर प्रहार पर प्रहार कइलन आ ऊ सभन दनादन चिते हो गइलन, अइसन ठहरल उनुकरा मुसुकी के मारि! अचूक, अप्रत्याशित!

ऊ जे सभनी गजराजन, अपना हीक भर सान्द्र मदिरा पी पा के मातल रहलन, तबातोर अपना के सम्हारत होश में आ गइलन आ भगवान बाल श्रीकृष्ण के चरन-रज अपना माथा पर लगा के, लोर-चुअत अँखियन से दीनतापूर्वक भगवान के शरणागत होत अभार प्रगट कइले रहलन। दया निधान अपना दया से गजराजन के भक्ति-भाव के पुरहर तृप्त कइलन आ फेरू ऊ आगे बढ़लन दरबार के ओरि मामा कंस से मिले।.....

दरबार के भीतर अनगिनत महा-मल्ल जोधन के राखल रहे, ऊ जे श्रीकृष्ण के देखते निष्ठुरता से प्रहार करे खातिर उतावला रहलन। बस ऊ सभन श्रीकृष्ण के देखते आक्रमण बोल देहलन। अचानक आक्रमण एक मुस्त आ एक समय रहे, पूरहर तीव्र। बाकिर नटनागर नन्द किशोर अइसन फुर्ती से कट के एक तरफ मुसुकुरात हटि के खाड़ि हो गइलन, आ ऊ सभन आपसे में लड़ा गइलन। अइसनका प्रयास बारि-बारि भइल रहे। आखिरकार मल्ल-जोधन सभन आपसे में लड़त-लड़त मउवत के मुँह में चलि गइलन। सवा लाख सीढ़ीयन के सिंहासन पर बइठल महाराजाधिराज कंस अपना भगिना के अद्भुत कौतुक देख के पागल होत जात रहलन। गजराजन के निष्क्रियता आ महामल्ल जोधन के पराभव से टूटल, अपना के ऊ सम्हारे में सफल ना हो सकलन। आ अति भय आ अति किरोध में आके ऊ आपन अमोघ गदा उठवलन आ एक-एक सीढ़ी सावधानी से नीचे उतरे लगलन, क्रमवार। भयंकर विशाल उनुकर आँखन में पूरहर खून उतर आइल रहे, ऊ जे सेमर के फूल अइसन लाल टेस लउकत रहे। आ चेहरा किरोध के ज्वाला में तपत बाकिर बाल श्रीकृष्ण तऽ ऊ अपना ओसहीं मुसकुराहट के किरीन के धाह उनपर बिखेरत, अपना मामा के दर्शन के आनन्द से अभिभूत रहलन, साइत। परेम आ किरोध के अइसन संगम दुर्लभ रहे।

अलौकिक आ कल्पनातीत। असम्भव इहाँ सम्भव होत रहे बाकिर मूढ़ि-मति कंस चेतस तब नूं?

www.bhojpurisahityangan.com

सीढ़ी से उतरते कंस हनहनाइले श्री कृष्ण के भीरी गइलन आ तबातोर उनपर गदा से प्रहार करे लगलन, निर्मम प्रहार। जो रे बुड़बक! ऊ त तें तड़ातड़ अपना दरबारे के दीवार कूचतारे, कन्हैया तऽ कहीं अउर कोना में मुसकुरा रहल बाड़न। अपना ए कारनामा पर ओकरा काफी खेद भइल। आत्मग्लानी के अदहन में डभकत ओकर क्रोध के आगि अउर बढ़ि गइल। फेरू उहे वारि, आ फेरू उहे बात। प्रहार पर प्रहार। दर-दीवार सगरी ढ़ह ढूह के तहस-नहस हो गइल। अब ऊ बौखलाहट में होश-हवास खो के अपना अतिमद में आके बनइठी अइसन गदा भाँजे लगलन, लक्ष्यहीन। अति आवेश अमोघ गदा भाँजत-भाँजत बलशाली कंस हाँफे लगलन। उनुकर अब दम उखड़ि गइल रहे, मैदान छोड़ला के अलावा उनुका अब दूर कवनो राह ना सूझत रहे, बाकिर मैदान तऽ उनुकरे रहे, उनुकरे दरबार। अब ऊ का करस? बाल श्रीकृष्ण के मुसकुराहट के प्रहार तऽ अबहीं ओसही बरकरार रहे.....। आखिरकार कान्हा पर गदा थमले अति सावधानी आ सतर्कता से कन्हैया से पूछलन — ''श्रीकृष्ण,तू हमके मरब?'' आ बिना उत्तर सुनले श्रीकृष्ण की ओर दृष्टि कऽ के पीछकुड़िये सिंहासन के ओर बढ़े लगलन। सोंचलन कि सिंहासन पर ऊ जे पहुँच जइहें तऽ बच जइहें, काहे कि श्रीकृष्ण ओतना ऊँचा तऽ जइहें ना! ज डेग पीछकुड़िये चलस तऽ बेरि कन्हैया से पूछस–''कृष्ण, तू हमके मरब? तू हमके मरब?....'' आ हर प्रश्न पर कृष्ण ओसहीं मुसुकुरात। कंस के एकही रट। एकही चित्कार। एक ही प्रश्न। आ कन्हैया के ए सभन के एकही उत्तर रहे, मुसकुराहट। ऊ जे विचित्र दृश्य रहे। बढ़त-चढ़त आ श्रीकृष्ण से उहे पूछत कंस, ऊ अपना सिंहासन के आखिरी सीढ़ी तक पहुँचल रहलन। बाकिर उनुका त कवनो हब-खब रहे ना कि ऊ अपना गद्दी पर बइठ जास आ आँखो तऽ पीछे रहे ना कि ऊ देख के चेतस। श्रीकृष्ण की ओर ताकत एगो अउर पीछ कुड़िये वाला डेग बढ़वलन कि ओतना ऊँचाई से इक-बा-इक धड़ाम से नीचे गिरलन, पाँख कटल गिद्ध के अइसन। देह के पोर-पोर तऽ थूरा के माँस के लोथड़ा बन गइल रहे, कहीं कवनो ना गति ना हरकत? खाली आँख आ कान खुलल रहे, साँस कसहूँ चलत रहे। बाल श्रीकृष्ण तऽ नीचहीं रहीं, एही से अपने तत्काल अपना मामा के लाश के भीरी जा के खाड़ि हो गइनी ओसहीं मुसकुरात बाकिर अफसोस के साथ! महाराजाधिराज कंस से बाल श्रीकृष्ण अति करुण स्वर में कहलन – मामा कंस! हमरा ओरि ताकऽ! देंखऽ, हमरा सउँसी शरीर में कहीं हिंसा के दरस परस नइखे। फूलनो से प्रहार कइल तऽ दूर, हम तोहरा के छूओ ना सकनी। दूरे से दर्शन भइल। तबो तू ना बचलऽ, मर रहल बाड़ऽ। असहनीय पीड़न से लड़त। ई सब करम के खेल हऽ। करमे के मारि। ऊ आजु तोहरा पर पूरहर प्रहार कइले बा, ऊ जे तोहर ई गत भइल बा? करम के भोग सभ के भोगे के पड़ेला। आपन-आपन करम के फल चखे के पड़ेला। ऊ जे जइसन बोई अइसने काटी। बबूर बोके अंगूर खोजब तऽ ऊ मिली, भला?.... बस इहे तोहर चूक बा, इहे तोहर पतन के कारन बा। अपना -अपना करम के भोग हऽ ई!....

ई कहके बाल श्रीकृष्ण अपना वाणी के विश्राम देहलन आ तब कंस के आँख मुदाइल तऽ मुदाइले रह गइल। फेरू ना खुलल.....।

अइसे एगो महा अत्याचारी के अन्त हो गइल, बिना युद्ध आ बिना कवनो खून बहवले! अपने करमन से.....।

- हरिराम कॉलेज, मैरवा
सिवान-841239, मो.-09973031430

www.bhojpurisahityangan.com

मइया लेईं ना खबरिया

❒ अर्जुन पाठक 'विकल'

रउरी हम दुअरिया के, बानी रखवरिया,
मइया लेईं ना खबरिया, अपना बाचवा के।

लाली रे चुनरिया, पीयर रंग गोटवा
एगो हाथे धइले बाड़ू असुरा के झोंटवा
तेज रे बेयरिया अस शेर के सवरिया
हरीहऽ जिनगी के जहरिया, अपना बाचवा के।

रोज तू मेटावऽ मइया रोजो जनमावेलू
बाड़ा-बाड़ा अचरज अचवेके देखावेलू
एतना सुनरिया मइया के बा महतरिया?
मेटीहऽ रहिया के अन्हरिया, अपना बाचवा के।

सरधा अपार बावे रउरी चरनिया
बिगड़े ना कबो मइया हमरी रहनिया
जागिं के सेजरिया तू रखीह नजरिया
खोलीहऽ भगिया के केवड़िया, अपना बाचवा के।

जिनिगी गुंजारे बदे दीह तनि सुखवा
आवे जे भुखाइल हो मेटाईं ओके भूखवा
दाया के लहरिया लहराले हो भीतरिया
दीह रोटी-तरकरिया, अपना बाचवा के।

मइया लेईं ना खबरिया, अपना बाचवा के।

- ई.37, राँची कॉलोनी
मैथन, धनबाद (झारखण्ड)

हरदी गीत

❒ रामेश्वरनाथ मिश्र 'विहान'

हरदी के शुभ घड़ी आइल
सखि मंगल गाव

गोरे बदनवा लगायो हरदिया
सोहेला अंगवा गोटवा पियरिया
देखि के सुरतिया सुरुजवा लजाइल।
हरदी के शुभ घड़ी.....

चनवा-सा मुखवा गोरिया दमके
फुलवा वदनवा इतर-सा गमके
आज घर गोरी दुलहवा आइल।
हरदी के शुभ घड़ी.....

हरियर पतवा आ हरिअर दुबिया
दुलहिन के चढ़े नयका हरदिया
माड़ो के बीचे चउका पूराइल।
हरदी के शुभ घड़ी.....

सखी कर सकल व्यवहार, हरदी मंगल के
देख नाचेला अंगना बहार, हरदी मंगल के
हरदी चढ़ावेली मइया तोहार
पीछे सकल परिवार हल्दी मंगल के

– जिला-उपभोक्ता, फोरम, बक्सर
रामलखन निवास, महाराजा हाता के निकट
गर्ल्स हाईस्कूल, बक्सर (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

गतांक से आगे

आचार्य जीवक

(70)

❑ अनिल ओझा 'नीरद'

कवट बदलले आचार्य जीवक!

संतुलन कुछ बिगड़ल आ जबले अपना के सम्हारसु तबले धड़ाम.....! पलंग से नीचे गिर परले।

नीनि टूटि गइल। सपना छूटि गइल। चिंतन रुकि गइल।

उठि के बइठि गइले आचार्य एक क्षण खातिर पलंग का निचहीं आ आँखि मीजत एक बेरि अपना कक्ष में चारू ओरि नजर दउरवले कि कहीं चन्दन तऽ नइखन नूँ एह घरी एह कक्ष में, ऊ देखि तऽ ना लिहले हमार गीरल!

आश्वस्थ भइला के बाद, अनायासे उनुका चेहरा पर मुस्कान बेर एगो पातर रेखा पसारि गइल!.....अच्छा भइल पलंग से गिरनी, कहीं चरित्र से गिरि गइल रहितीं तऽ संउसे आर्यावर्त के नजर से गिरि गइल रहितीं।.....फेर तऽ आजु आचार्य जीवक का जगह अधम जीवक के नांव से पुकारल जात रहितीं शायद।..... कुल्हि मान-सम्मान माटी में मिलि गइल रहित आजु ले। .....हो सकत रहे कि लोग इहो कहे से ना चूकित कि – ''घूरा पर पावल गइल लड़िका आखिर घूरा के कीरा से बेहतर व्यवहार कहाँ सीखि सकत रहे भला, जेकर कामे होला हर तरह के गंदगी में मुँह मारल!.....ईहो हो सकत रहे कि राजकुमारी भा राजनर्तकी के प्रेम जाल में फँसला पर राजकोप के भागी बनि के कारागार भा मृत्युदण्ड के अधिकारी होखे के परल रहित उनुका।''

सोंचि के रोंआ-रोंआ गनगना उठल आचार्य जीवक के।

ऊ उठि के खड़ा भइले आ अपना के व्यवस्थित करत अन्यमनस्क भाव से एकक्षण पलंग पर बइठि गइले।

चन्दन!.....तनी रुकि के आवाज दिहले आचार्य अपना सेवक के।

आज्ञा आचार्य!.....एक क्षण बादे उपस्थित होके अभिवादन कइले चन्दन!

पानी!.....बस अतने निकलल उनुका मुँह से।

चन्दन दउरले आ रजत पात्र में शीतल जल लेके हाजिर भइले।

बिना उनुका ओरि देखले, उनुका हाथ से पात्र लेके एक सांस में गटागट पी गइले आचार्य जीवक आ पात्र उनुका हाथ में पकड़ा दिहले।

एक क्षण रुकले चन्दन, पात्र हाथ में लेके, एह आस में कि शायद, आचार्य कवनो अउर आज्ञा दीहें।

चन्दन!.....ओसहीं बइठल-बइठल शून्य में देखत टोकले जीवक।

जी आचार्य!.....मुड़ी झुकवले जवाब दिहले चन्दन।

तोहरा घर-वाली के कुछ पता चलल?

अचानक अतना दिन बाद, अपना औरत के बारे में पूछल गइल सवाल पर, उहो आचार्य जीवक का मुँह से, चन्दन कुछ पल खातिर चकचिहा गइले, आ तुरन्ते कवनो जवाब ना सूझल उनुका।

चन्दन.....! फेर टोकले जीवक!

जी...जी....आचार्य!.....अचानक जवाब देवे में कुछ लटपटा गइले चन्दन?

का भइल?.....कुछु जवाब ना दिहलऽ?

www.bhojpurisahityangan.com

जी ना आचार्य, कुछ पता ना चलल!

लेकिन ऊ भागल काहें चन्दन, एकरो पता ना लागल?.....प्रेम कि पइसा??.... कि कहीं ऊ पश्चिम से आइल श्रेष्ठी तहरा ले ढेर मोहक रहे??..... अबकी तनी रुकि के, चेहरा पर मुस्कुराहट ले आवे के चेष्टा करत, कुछु परिहास कके चन्दन के गुदगुदावे के लेहाज से पुछले आचार्य जीवक!

पता ना आचार्य!..... अब त्रिया-चरित्र तऽ ओकर निर्माता ब्रह्मा तक ना समझि पवले तऽ हम भला कवना खेत के मुरई उनुका आगा?.....श्रेष्ठी मोहक रहे कि ना ई तऽ हम नइखीं जानत बाकी धनवान रहे, ई हमरा बाद में पता चलल।

लेकिन ओकरा भगला के जानकारी कब मिलल तोहरा?

जब ऊ मगध के सीमा पार कऽ गइल होई शायद!

तू ओकरा के वापस ले आवे के चेष्टा ना कइलऽ, कबों?

अब ओह कालिमा के घर वापस ले आके, घर में कवन चार-चाँद लगइतीं आचार्य।

तब बाकी के जिनिगी का हमरे लेखा अकेले काटे के इरादा बा?

हमार तऽ जइसे-तइसे गुजारा होइये जाई आचार्य, हमरा आपन चिंता नइखे।

तब?

हमरा तऽ चिन्ता लागल बा कि ऊ अपना पीछे आपन एगो निशानी छोड़ि गइलि बिया, अब ओकर पालन-पोशन कइसे होई?

लइका कि लइकी?

लइकी आचार्य?

उम्र?

पांच साल!

नीलिमा!

हो.....हो.....हो.....अचानक हो-हो कके हँसि पड़ेल आचार्य जीवक। उनुकर अइसन उन्मुक्त हँसी पहिला बेरि सुनले चन्दन आ एक बेरि फेर अचकचा गइले।

वाह!.....का बात बा चन्दन! तोहरा कालिमा के निशानी नीलिमा।.....वाह!!

चन्दन!

जी आचार्य!

नीलिमा के आश्रम में ले आवऽ!.....आश्रम के दासी सुचित्रा के हमार आज्ञा सुनावऽ कि ऊ ओकरं विशेष देख-भाल कइल करसु।.....पाठशाला में ओकरा के भेजे के अधिकार तऽ अभीं ले तोहार समाज नइखे देले तोहरा के। बाकी दी! आगे चलि के जरूर दी।.....

लेकिन तब तक, ओकरा के कुछु जरुरी प्रारम्भिक शिक्षा हम दीहल करबि, सुबह-शाम, जब-जब समय मिलल करी, भले खेल-खेल में।..... हमरो तऽ कबों-कबों, एही बहाने, मन बहलावे के कवनो साधन मिलि जाइल करी।

जिनिगी बोझ मति बनि जाउ, एकरा खातिर रस-परिवर्तन शायद जरूरी होला चन्दन। एकक्षण रुकि के फेर बोलल रहले आचार्य जीवक, फेर चन्दन का ओरि देखि के कहले रहले – ''जा चन्दन! तूं अभीं ओकरा के लेके आवऽ। आजु से ऊ इहंवे रही आ ओकरा लालन-पालन पर होखे वाला कुल्हि खर्च हमरा निजी कोष से दीहल जाई।

चन्दन, जेकरा आँखि में लोर छलछला आइल रहे, अब तक के वार्तालाप में, नीलिमा प्रसंग पर, आचार्य के अभार मानत, अपना कान्ह पर परल गमछा से आँखि पोंछत, कक्ष से बाहर निकलि गइले।''

www.bhojpurisahityangan.com

त्रिया-चरित्रं, पुरुषस्य भाग्यम्, देवो न जानाति, कुतो मनुष्यः।..... चन्दन के गइला के बाद एगो गहिर सांस छोड़त, ई पूरा श्लोक बुदबुदइले आचार्य जीवक आ उनुका चेहरा पर कुछु खट्टा-मीठा भाव उभरि आइल।.....चिन्तन के कड़ी फेर जुड़ि गइल!!....

अनपढ़-गवांर मानल जाये वाला चन्दन तक, एह गूढ़ अर्थ वाला संस्कृत श्लोक के ''त्रिया चरित्रं'' वाला भाग के, केतना सरलता आ सफाई से, अपना परिप्रेक्ष्य में परिभाषित कइ गइल रहले, उनुका सामने आ एगो ऊ बाड़े कि एतना पढ़ियो-लिखि के अपना जिनिगी में आवे वाली एतना नारियनि के चरित्र के आजु ले व्याख्या ना कइ पवले।

ठीके कहल गइल बा, पढ़ाई-लिखाई से, आन्तरिक ज्ञान के कवनो सम्बन्ध ना होला। .....पढ़ाई-लिखाई जानकारी दे सकेले, ज्ञान ना।

ना त आजु ले कहाँ समझि पवले जीवक कि उनुका जिनिगी में आवे वाली, आ शामिल होखे से पहिलहीं विदा हो जाये वाली कुमुदिनी अपना कवना त्रिया चरित्र के परिभाषित कइली। फेर राज परिवार आ राजसी ठाट के त्याग कके उनुका जीवन में शामिल होखे के आतुर वासवदत्ता अपना कवना चरित्र के तहत प्रगट भइल रहली उनुका सामने, चाहें राजनर्तकी शालवसी अपना, कवना त्रिया-चरित्र के रुप लेके उनुका सामने अपना के समर्पित करे कऽ प्रस्ताव कइले रहली आ एकरो ऊपर उनुकर ऊ महतारी जवन उनुका के जन्म देले रहली अपना कवना चरित्र का चलते जन्म देले रहली कि, जन्म देते घूरा पर फेंकि के भागि गइली।.....त्रिया-चरित्रं.....हुं:।

सोचत-सोचत जीवक के मन भारी हो गइल रहे आ अभीं तऽ 'पुरुषस्य भाग्यम्' वाला अंश पर सोचल बाकिये रहे, ताकी ऊ अपना भाग्य के परिभाषित कऽ सकसु, लेकिन अभी नित्य-क्रिया आ स्नान क उनुकर समय हो गइल रहे, से ऊ उठले आ आपन उत्तरीय सम्हारत शयन कक्ष से बाहर निकलि गइले।

(71)

ई कवनो कहाउति ना हऽ, सच्चाई हऽ कि समय के धूरी, ना त कबों अल्पविराम लेले, ना अर्ध-विराम ना पूर्ण-विराम। दरअसल, विराम शब्द, समय अपना शब्दकोष में शामिल नइखे कइले, ना तऽ एह संसार के का हालत होइत एकर कल्पना कइल अगर आसान नइखे तऽ कठिनो नइखे।

ई समये हऽ, जवन एह संसार के, हर गतिविधि के, ठीक घड़ी, पल आ क्षण के हिसाब से संचालित कइल करेला। निरन्तर, अनवरत,. बिना विराम के। समय-चक्र के आगे आदिमी तऽ आदिमी, प्रकृति तक के मजाल नइखे कि ऊ आपन मरजी चला ले। एह संसार में जवन घटे के बा ऊ बे-समय के मरजी के नइखे घटे के। एकर चक्र जइसे चली ओइसे सबके चलाई आ सबसे बड़ बात कि एकरा संचालन में ना त अंधकार कवनो तरह के बाधा खड़ा कइ सकेला ना प्रकाश कवनो तरह के सहयोग। ई चक्र अपना धूरी पर बिना कवनो बाधा के, दिन-राति, सांझि-बिहान नाचत रहेला आ संसार के नचावत रहेला। एकरा आगा ना तऽ केहू बलवान होला ना कमजोर, ना केहू बुद्धिमान होला ना बुद्धिहीन। ई सब तमाशा खाली समय के फेर के मोताबिक तय होला। भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों।

मगध के ''भूत'' (भूतकाल) ना तऽ देखले रहले जीवक, ना ओकरा बारे में सोचे के कबों मोके मिलल रहे उनुका। अपना वर्तमान के भोगे, जीये आ संवारे से फुरसते कहाँ मिलल रहे कबों? उनुकर हमेशा से मानना रहे कि अपना वर्तमान के तूं ठीक से जी

www.bhojpurisahityangan.com

लऽ, तहार भविष्य अपने आप संवरि जाई आ ''भूत'' के बारे में सोचे के जरूरते ना पड़ी। कवनो गलत त ना रहे उनुकर सोच, कारण एकर नतीजा उनुका सामने रहे, उनुकर आपन जिनिगी।

लेकिन समय त समय हऽ, जाने कब कवन रंग देखा दे, एकर पता कहाँ रहेला केहू के?.....जिनगी जवन संवरि चुकल रहे, भविष्य जवन सुरक्षति हो चुकल रहे, ओह पर अचानक कवनो ग्रहण के छाया पड़त नजर आवे लागल रहे आचार्य जीवक का, कुछु दिन से।

कुछ दिन से जइसन घटना क्रम देखे-सुने के मिलत रहे उनुका अपना राज्य में, ऊहो राजदरबार आ राजपरिवार के बारे में, ओह पर सहजता से विश्वास कइल बहुत कठिन रहे। .....त का एही दिन खातिर आदिमी शादी जइसन पवित्र बंधन में बन्हे खातिर लालाइत रहेला?.....का इहे दिन देखे खातिर लोग अपना संतान के मुँह देखे खातिर तरसेला? .....का एकरे के वंश चलावल कहल जाला कि एक दिन अपने खून, मात्र सम्पत्ति खातिर, राजगद्दी खातिर अपने खून के पिआसि जाउ? अपने बाप के हत्या के षड़यंत्र रचे लागो।.....तऽ का हमार जन्मदाता माता-पिता भविष्य में कवनो अइसने डर के चलते, पैदा होते हमरा के घूरा पर फेंकि गइले?.....का ऊ उचित कइले?.....का उनुका अइसन कुछ अभास हो गइल रहे?..... अउर जाने अइसने का-का सोचत दिन कटत रहे आचार्य जीवक के आजु-काल्हु मगध राजपरिवार में घटत घटनन के बारे में सुनि के! देखि के!!

घटना रहबे कइली सऽ अइसन, जवना से लागत रहे कि उनुकर जिनिगी संवारे वाला आ भविष्य सुरक्षित करे वाला मगध सम्राट विंबसार के, आपन खुद के जिनिगी, अब सुरक्षित नइखे रहि गइल। लेकिन सबसे अचरज में डाले वाली बात ई रहे कि उनुका असुरक्षा के कारण कवनो शत्रु ना, उनुकर आपन खून रहे, आपन औलाद, आपन बेटा – अजातशत्रु।

जइसन कि पहिले चर्चा कइल जा चुकल बा कि सम्राट विंबसार के तीनि गो मुख्य रानी भा पटरानी रहली। सबसे बड़ कोशला देवी, मझिली – क्षेमा आ सबसे छोट पद्मावती। इहे तीनिगो रानी अइसन रहली जेकरा बारे में इतिहास ई जानकारी देला कि ई तीनों जानी उनुकर विवाहिता पत्नी रहली, एकरा अलावे जवना स्त्रियनि से, उनुका सम्पर्क के चर्चा आवेला ऊ लोग रखैल भा मनबहलाव करे वाली स्त्रियनि के श्रेणी में आवेला। जइसे वैशाली के नगर-वधू आम्रपाली, मगध के नगर-वधू शालवसी भा अउर अनेक एही किस्म के स्त्री लोग।

एह में कवनो दू राइ नइखे कि सम्राट विंबसार अपना तीनि-तीनि गो विवाहिता पत्नी लोगन का साथ रमण कइला का बादो एगो दिल फेंक किस्म के, ऐय्याशी पसंद आ उनमुक्त यौनाचार में विश्वास करे वाला राजा रहले, जइसन कि ओह घरी के आम रजवाड़ा लोग होत रहे। एकर प्रमाण बा विंबसार के आम्रपाली से पैदा भइल एगो पुत्र – विमल कौण्डिल्य आ अन्य दू गो स्त्रियनि से दूगो पुत्र जेकरा के शीलव आ जय सेन के नांव से जानल जाला। खैर!!!

अभीं हम चर्चा करतानी उनुका ओह पुत्र अजातशत्रु के, जेकरा चलते, अतना पराक्रमी राजा आ मगध साम्राज्य के संस्थापक सम्राट विंबसार के अन्त के बात इतिहास संकारेला।

अजातशत्रु उनुका पहिलकी पत्नी कोशला देवी से पैदा भइल उनुकर पहिला औलाद रहे। दोसरकी पत्नी क्षेमा से कवनो औलाद के बात इतिहास में उपलब्ध नइखे शायद, बाकी तिसरकी पत्नी पद्मावती से एगो

www.bhojpurisahityangan.com

राजकुमार के बात स्वीकारल जाला जवना के नाव रहे – अभय राजकुमार। हलांकि एगो पुत्रियों के बात संकारेला इतिहास जेकर नांव चुन्दी बतावेला, बाकी कवना पत्नी से, एह प्रश्न के जवाब में ऊ मौन बा।

अब, चुकी अजातशत्रु सबसे बड़ बेटा रहे, एह से उचित तऽ ई रहबे कइल कि ओकरा के युवराज घोषित कइल जाउ, परम्परा के अनुसार, से उचित समय पर सम्राट ई घोषणा कइले, लेकिन अजातशत्रु के महात्वाकांक्षा, समय से पहिलहीं, मगध के सम्राट बने के कामना कइ बइठल आ ओकर इहे कामना एकदिन ओकरा के पितृ-द्रोही आ पितृ-हंता तक के श्रेणी में ले आके खड़ा कऽ दिहलसि। अब ई बात दीगर बा कि ई महत्वाकांक्षा ओकरा मन में खुद ना पैदा भइल, बल्कि देवदत्त के बहकवला का चलते पैदा भइल, बाकी इतिहास में पितृ-हंता पुत्र के रुप में कलंकित त ऊहे नू भइल।

(72)

देवदत्त!

गौतम बुद्ध के चचेरा भाई, जेकरा भीतर बुद्ध खातिर ओही घरी से बैर-भाव पलत रहे, जब ऊ ओकरे लेखा नामधारी, ओकर भाई राजकुमार सिद्धार्थ रहले। लेकिन बुद्धत्व के उपलब्ध भइला के बाद जवन उनुकर ख्याति पसरल शुरु भइल, जवन मान-मर्यादा, सम्मान मिलल शुरु भइल, ओकरा से तऽ ऊ पूरा के पूरा जरि-भुनि गइल आ उनुका के समाप्त करे के तरह-तरह के उपाई कइल शुरु कइलसि, जवना में एगो इहो प्रसंग आवेला कि ऊ उनुका पर पागल हाथी तक छोड़ले रहे, उनुका के मारे खातिर, बाकी ऊ हाथी बुद्ध के कोमल चरणन में लेटि गइल रहे।

चुकी बुद्धत्व पवला के बाद, महात्मा बुद्ध के मुख्य आश्रय स्थल भा मुख्य बिहार राजगृह में रहे आ उनुकर सबसे बड़ संरक्षक सम्राट बिंबसार रहले, एह से बहुत चाहियो के ऊ उनुकर कुछु बिगाड़ि ना पावत रहे, कि तले ओकरा ई मोका हाथ लगि गइल जब अजातशत्रु के युवराज घोषित कइल गइल।

अपना कुल्हि दांव-पेच से हारि चुकल देवदत्त अब सम्राट बिंबसार पर आपन निशाना सधलसि, ताकी पहिले इनिके के मिटावल जाउ, फेर तऽ बुद्ध के मिटावल अपनहीं आसान हो जाई, आ एकरा खातिर ऊ अजातशत्रु के अपना हथियार के रुप में उपयोग कइल शुरु कइलसि।.....भोला-भाला राजकुमार अजातशत्रु, कुटिल देवदत्त के चाल में फँसि गइल।

एक-एक खबर, छनि-छनि के पहुँचत तऽ रहे आचार्य जीवक के कान में, बाकी एह मामला में ऊ कइये का सकत रहले, सिवाय दुखी भइला कें, कारण, राजनीति ना तऽ उनुकर कार्यक्षेत्र रहे ना राजपरिवार भा राज्य संचालन अधिकार क्षेत्र।..... समय के खेल देखल उनुकर विवशता रहे।

पहिले सुने में आइल कि युवराज आ सम्राट में, एह बात पर तकरार भइल कि युवराज खाली युवराज घोषित भइला से खुश नइखन, उनुका जल्दी से जल्दी सम्राट के पद चाहीं। सुने में तऽ इहो आइल कि एकरा खातिर युवराज एक दिन अपना उत्तरीय में कटार छुपा के महाराज के हत्या तक करे के विचार से उनुका सामने उपस्थित हो गइल रहले, जेह पर विस्मित भइल रहले सम्राट आ मुस्कुरा के जवाब देले रहले कि मांत्र राजगद्दी खातिर अगर तूं हमार हत्या कइल चाहतारऽ पुत्र, तऽ ई सिंहासन हम अभीं छोड़ऽतानी। आखिर एक ना एक दिन तऽ ई तहरे मिले के बा, तऽ एकरा खातिर हमार हत्या काहें होखे के चाहीं। हम ई पद तोहरा के अभी आ एहीं घरी, खुशी-खुशी दे रहल बानी।..... कहि के उदारमना सम्राट

www.bhojpurisahityangan.com

विंबसार अपना राजसिंहासन के त्याग कइ देले रहले।

अब मगध के नया सम्राट रहले अजातशत्रु।

(73)

सम्राट तऽ बनि गइले अजातशत्रु, बाकी देवदत्त के करेजा में चुभे वाला कांटा त अभीं जियते रहे, तब ओकर बदला कहां पूरा भइल रहे अभीं ले, कि ऊ चैन से बइठो।

ऊ अपना षणयंत्र के तहत, नित नया उतजोग भिंड़ा के, अजातशत्रु के एह बात खातिर राजी करे के फिराक में लागि गइल कि ऊ अपना बाप के हत्या कऽ देउ चाहें करवा देउ। ओकर तर्क रहे कि अब विंबसार के जीयल जरुरी नइखे, उल्टे हो सकेला कि बाद में चलि के उनुकर मनसा बदलि जाउ, चाहें मगध के जनता के मिजाज तोहरा के सम्राट माने से इनकार कऽ देउ त अइसन हालत में विंबसार तोहरा से, तोहार गद्दी वापस ले सकेले।

पहिले तऽ अजातशत्रु एह बात खातिर तेयार ना भइल, कारण ओकरा शायद होश आ गइल रहे कि पिता अबध्य होला, फेर ओकरा जवन चाहत रहे ऊ गद्दी तऽ अब मिलिये गइल रहे। ओकरा देवदत्त के इहो तर्क शायद मान्य ना रहे कि पिता एक बेरि दीहल गद्दी कवनो सूरत में ओकरा से वापस ले लीहें।

लेकिन हार माने वाला शक्शियत ना रहे देवदत्त। ऊ अजातशत्रु के होश फाख्ता करे खातिर अब ओकरा के सुरा-सुन्दरी के जाल में फंसावल-डुबावल शुरु कइलसि आ एही बीच ओकरा के एह बात खातिर राजी कऽ लिहलसि कि हत्या ना तऽ कम से कम कारागार में तऽ डालिये देउ, ऊ अपना बाप विंबसार के।

बार-बार के ओकर कोशिश रंग ले आइल, अजातशत्रु अब पूरा के पूरा ओकरा गिरफ्त में आ चुकल रहे, जवना के नतीजा भइल कि विंबसार एक दिन मगध के मुख्य कारागार, जवना के ओह घरी तापन-गृह कहल जात रहे, डालि दीहल गइले।

संउसे राज्य में हाहाकार तऽ मचल बाकी अजातशत्रु के खूंखार आ आतंकी प्रवृत्ति का चलते कहीं कवनो विरोध ना भइल। आखिर आपन जान तऽ सभका प्रिय होला। अब शेर के मुँह में हाथ के डाले जाउ??

लेकिन असल में सफल मनोरथ भइल देवदत्त तहिया, जहिया अपना षणयंत्र का तहत ऊ अजातशत्रु के अइसन मति मरलसि कि एक दिन ओही कारागार में, अपना नापित (नाई) के भेजि के, अपना पिता के हत्या करवा दिहलसि।

अन्त भइल विंबसार के आ एगो बदला पूरा भइल देवदत्त के, लेकिन ओकरा करेजा के असली कांटा तऽ रहले बुद्ध।.....ऊ चाहत तऽ रहे कि उनुको अंत हो जाउ, बाकी इतिहास गवाह बा कि बुद्ध के मामला में ओकर हर कोशिश नाकाम भइल। ..... जन-जन के प्रिय, अइसन संत हो चुकल रहले बुद्ध तबले कि ओह घरी के धरती पर उनुकर केहू शत्रु ओकरा मिलबे ना कइल, जेकरा के सहारा बना के ऊ अपना मंशा के अंजाम दे सको।

खुद अजातशत्रु तक शायद एह काम खातिर तेयार ना भइल।

– (क्रमशः.....)

मोबाइल : 98300 57686

www.bhojpurisahityangan.com

कबो-कबो

□ गौरीशंकर तिवारी

आई.ए.एस. अधिकारी श्री प्रदीपकुमार पाठक के गेट के घंटी सुनते नौकर आ गइल एकरा पहिले कि नौकर आवे वाला के परिचय पूछे, ऊ अपन ही बोले लागल ''हमार नांव रमेसर पांड़े हऽ। हम आ तहार साहेब एक ही गाँव पहाड़पुर के रहे वाला हईं जा। इनकर बाबूजी रामनाथ हमार लंगोटिया यार हवे। हम अपना संघतिया के लइका प्रदीप अउर उनका परिवार के सभ लोगन से नीमन से परिचित बानी। अपना बेटी के बिआह तहरा साहेब प्रदीप से करे के गरज से आइल बानी।'' नौकर छोट जवाब देलस–''बाकिर साहेब तऽ लखनऊ में नइखन।''

रमेसर लमहर सांस लेते बोलले – ''कवनो बात नइखे। उनका आवे तक हम कवनो धरमशाला में ठहरि जाइबि। अतना दूरि से आइल बानी तऽ बिना भेंट कइले ना जाइबि।'' रमेसर के अतना घनिष्टता देखि के नौकर उनका के भितरी लिया गइल। थोरहीं बेर में उनका सामने गरम-गरम कॉफी आ गइल। कॉफी गरम रहे, एसे ऊ चुस्की लेबे लगले। चुस्की लेत-लेत रमेसर नौकर से सवाल दागि दिहले – ''ए भाई। तहरा साहेब में कवनो अइसन ओइसन आदति तऽ नइखे नू?'' नौकर कहलसि – ''राम कहीं सरकार। हमार साहेब तऽ एकदम खानदानी हवन। दिन भर में चारि बेरि पूजा करेले। ई बात दोसर बा कि कबो कबो लहसुन पिआज खा लेले।''

''अचरज के बात बा कि तहार साहेब लहसुन पिआज खाले।''

''साहेब, रउआ पूरा बात अभी ना सुननी। रोज-रोज थोरहीं खाले। कबो-कबो मीट में लहसुन पिआज परि जाला, ओही दिन खा ले।''

''एकर मतलब कि एह घर में मीटो बनेला। छि:छि:।''

''महाराज कहनी नू कि मीट कबो-कबो बनेला। जब कवनो यार दोस्त आवेले सऽ आ उहनी के स्वागत में बोतलो खुलेला, तबे मीट के दरकार होला।''

रमेसर खिसिया के कहले – ''घर में मीट खाइल जाता। अउरू ना तऽ यारन का संगे शराब के बोतल खोलल जाता। तब फिर बांचले का बा?''

''पंडितजी, रउआ नाराज काहें होखऽ तानी? ई सब काम केहुओ रोज-रोज थोरे कइ सकेला। ऊ तऽ कहियो-कहियो यार-दोस्तन के संगे कोठा पर जाए के मूड़ बन जाला, तहिये हमार साहेबो साथ दे देले। बांचल खूचल तनी हमरो मिल जाला।''

रमेसर तड़पि के बोल परले – ''बस! बस! अब अऊरु कुछ कहला के काम नइखे। जवन बाकी रहे तवनो सोझा आ गइल। सपनो में हम ना सोचले रहनी कि पंडित रामनाथ के बेटा अतना नीचे गिर जाई।''

नौकर घाव के सुहरावत गते से कहलस – ''बाबूजी, आजु बड़ अदिमी के इहे सब पहचान हवे। ओइसे साहेब के बिआह आजुए के तारीख पर अगिला महीना में होखे जाता। मौका मिले तऽ जरूर आइबि।''

– ''भुक्खड़ बनारसी''
107, गोकुल नगर (कंचनपुर)
डी.एल.डब्ल्यू, वाराणसी
मो.-09451229093

www.bhojpurisahityangan.com

निशानी

❑ विद्यासागर राय

सेवा' अपने माई-बाप कऽ पहिलीकी संतान रहली। उनके जनमले से बियाहे ले बाप उनसे कबो रिसियइलें नाई। गउंवे से थोरिकी दूरी पऽ उनुकर बियाह कऽ दिहले। लइका के चार भाई आ एगो बहिन रहली। उनके पति कऽ नांव रतन रहे। घर कऽ हालति देखि के ऊ कमाये खातिर दिल्ली चलि गइलन। बिल्डिंग में एगो लेबर कंऽ काम करे लगलें। तेज बुद्धि के कारन थोरिके दिन में ठेकेदार बनि गइलें। एगो मकान किराया पऽ ले लिहलें अवरु सेवा के भी ओहीं बोला लिहलें। जब रतन घर से काम पऽ जाये लगलें तऽ उनुकर बहिन रोवे लगली। रतन कहलें हम दू साल के अन्दर तुहके बियहि के बापे कऽ करज उतारि देबे। दू साल के अन्दर ऊ चालिस लाख रुपिया कमइलें। पनरह लाख रुपिया मकान मालिक के एह शर्त पऽ दिहलें कि मकान 20 लाख में ले लीहें। पाँच लाख घरे ले के अइलें आउर अपने बहिन 'शोभा' कऽ धूमधाम से बियाह कइले। फेनु सेवा के संगे दिल्ली चलि गइलें।

ऊ दिन दूना राति चौगुना बढ़े लगलें। घरवों खरच-बरच कऽ पुरहर पइसा दे दंऽ जैसे बापे कऽ मन हरदम फुलाइल रहे। भाई लोग नीक से पढ़त रहलें। अबकी पाँच बरिस ले ओहीं रहि गइलें। पहिले मानसी पयदा भइली आउर तीनि बरिस के बाद राजा पयदा भइलें। सगरो पइसा घरे भेजत गइले जेसे खेत खरीदात गइल आउर घरवो बनि गइल। एक दिन काम से अइले के बाद उनके पेटे में दरद उठल डकडर बोलावल गइले। उनके हॉस्पिटल में भरती करावल गइल। ओही बीचे राजो कऽ तबियत खराब भऽ गइल आ ऊ चलि बसले। मरदे के अल्सर हो गइल रहे दुइए दिन बाद ऊहो दुनिया से उठि गइलें। सेवा हिम्मति जुटा के लइका के जल परबाह करवले रहली, तबले इहो विपत्ति आइलि। कवनो तरह लारी पऽ मुरदा लेके घरे अइली। काम-धाम हो गइल।

घर कऽ लोग कहलन मकाने में सबकर नाँव होखे के चाही। 'सेवा' कहली इहै एगो चीन्हा हमसे न छोरल जा बाकिर स्वारथी भाई-बाप रिसिया गइले आउर सेवा अपने नइहरे चलि गइली। उनके दू भाई आयुष आ अमर रहलें। जब ऊ शान्त भइली तऽ बड़का बाबू आयुष कहलें – ''दीदी, जिनगी बड़ी लम्बी बा हमार, इच्छा बा कि तोहार फेनु घर बसा दीहल जा, सेवा कहली – ''बाबू ईश्वर से जवन हमके मिले के रहल मिलि गइल हम एही बाप-भाई के संगे रहब नाई तऽ दुनिया छोड़ि देबे।'' आयुष कहले दुनिया छोड़े के कबों न कहिह, अब हमहन के तीनि भाई हो गइलीं। हम भलें आपन हिस्सा खेत-बारी तुहरे आ अमर के नावे कऽ के कमाये चलि जाबे आउर नोकरी कऽ के तुहन लोगन कऽ मददी करबे, कबों आपन बियहवो ना करब। अमर कहलें अइसन कबों ना होई। सब संगवें रही। असली मुद्दा सेवा के मकान कऽ बाकी पइसा कऽ रहल।

दूनो भाई तइयार होके ट्रैक्टर-टाली बेचि दिहले, कुछु खेतवो बन्हक धरा गइल। पाँच लाख रुपिया इकट्ठा कऽ के दिल्ली कऽ मकान सेवा के नांवे लिखाइल। एगो बैंक उनुकर मकान पाँच हजार रुपिया महीना किराया पऽ ले लिहलसि। ऊ रुपिया सेवा के नावें उनके नइहरे आ जा। सेवा ऊ पइसा भाई लोगन के दिहली।

www.bhojpurisahityangan.com

बड़का बाबू आयुष कहलन – ''पइसा माई-बाप हऽ वक्त पऽ कामें आवेला। सेवा के नावें एगो पास बुक बनि गइल। मंहगाई आउर आपन लाभ देखि के बैंक भी किराया दस हजार कऽ दीहलसि। कल्हिए एगो रजिस्ट्री आउर चेक आइल हऽ। आयुष सेवा से कहलन – ''अब तोहरे, खातिर एगो मकान किराया पऽ गोरखपुर में खरीदा जात बा। मानसी कऽ नाँव छोटवर लइकिनि के स्कूले में डारि दऽ। इहै रतन कऽ ''निशानी'' बाड़ी। लइका-लइकी में का अन्तर बा।

– ग्राम-पोस्ट : लक्ष्मीपुर देउरवा, जनपद : महराजगंज (उत्तर प्रदेश), मो. : 073764 03469

कइलऽ केतनो जतन

❑ रामजीत राम उन्मेष

कइलऽ कतनो जतन कवनो काम नाम करी।
माई! तोहरी बिन जगवा में पार ना परी।।

केतना बा रूप माई, केतना प्रताप हो।
भरमल मनवा ना तनिको बुझात हो।।
तोहरी! बिना बोलवले केहू पाँव ना धरी।
माई! तोहरी बिन जगवा में.....।।1।।

साँच ना बतिया नऽ साँच बाटे पपिया।
लोभ लुबकल बाटे लाल कइले अँखिया।।
तोहरी! बिना सुहरवले केहू के घाव ना भरी।
माई! तोहरी बिनी जगवा में.....।।2।।

सूख गइल नदिया नऽ नाँव बा किनारे।
घट-घटवार जीहन केकरा सहारे।।
तोहरी! विना कुछ कइले केहू पाप ना हरी।
माई! तोहरी बिन जगवा में.....।।3।।

– 1/सी/4, सिमला सतधरा (एक्स) रिसड़ा
प्रभाष नगर, हुगली (प. बं.), मोब.-92304 34775

सीता हरन रोजे-रोजे बा....

❑ राजनाथ सिंह 'राकेश'

सीता हरन रोजे-रोजे बा
रावण आज मराते नइखे,
गरज रहल बा दनुज गगन में
राम के धनुष लखाते नइखे।
नेह के डोरी टूटल जाता
चोरी इहाँ रोकाते नइखे
भाई भोंकत भाई के बा –
जुल्मी आग बुझाते नइखे। सीता हरन रोजे.....

मधुवन सिसक रहल बा इहवाँ
पतझड़ राज छीनाते नइखे
रसरी केतना जर-जर जाता
अइठन ओकर जाते नइखे। सीता हरन रोजे.....

घर-घर टूटे शराब के बोतल
फुहरपन रोकाते नइखे
आर्यभट के कर्म भूमि पर
बुद्ध के उपदेश सुनाते नइखे। सीता हरन रोजे.....

रामदेव, अन्ना हजारे
बापू के बात बुझाते नइखे
गजब जोंक दू–मुँहा नेता
चूसत खून अघाते नइखे। सीता हरन रोजे.....

झरत दु:खियन के नयनन से
नदिया नीर सुखाते नइखे
कहत 'राकेश' केने अब जाईं
तन्हा जीवन ओराते नइखे। सीता हरन रोजे.....

– टेघरा, नरवन
जिला - छपरा-841223 (बिहार)
मोबाइल - 99553 12471

www.bhojpurisahityangan.com

गतांक से आगे –

दरद न जाने कोय

□ सुरेश कांटक

झलक - चार

(राजमहल के बाहर श्रीकृष्ण के मंदिर। श्रीकृष्ण के मूरत के आगे मीरा नाचत-गावत बाड़ी, एकतारा बजा-बजा के)

म्हां गिरधर आगे नाचां री।
नाच नाच म्हां रसिक रिझावा, प्रीत पुरातन जांचां री।
श्याम प्रीत री बांध घुंघर्यां, मोहन म्हारा सांचां री।
लोक लाज कुल की मरजादा, जग माँ नेक न राखां री।
प्रीतम पल क्षण ना बिसरावां, मीरा हरि रंग राचां री।
(एही घरी एगो दूत आवत बा। मीरा से कहत बा।)

दूत : ''गुस्ताखी माफ करीं महरानी जी, (झुक के प्रणाम करत बा।) दरबार में राउर बोलाहट बा।''

मीरा : ''हमार बोलाहट?''

दूत : ''हँ महरानी जी।''

मीरा : ''केकर आदेश बा, दूत?''

दूत : ''महाराज के।''

मीरा : ''जा, बता दी हऽ महाराज के, अबही हम पूजा-आराधना में बानी।

दूत : ''जइसन हुकुम, महारानी जी।'' (झुक के प्रणाम करत बा।)

मीरा : (दूत के गइला का बाद) ''कइसन महराज आ कइसन महरानी? हुकुम होता अइसन, जइसे हम हईं नौकरानी। पूजा में विघिन डाले के परिपाटी बन गइल बा, एह राज दरबार के। हे गिरधर! हे गिरधर (मीरा फेनु दोसर भजन गावत गिरधर गोपाल के रिझावत बाड़ी। एकतारा बजावत बाड़ी।)

स्याम बिना सखि रहयो न जाय।
तन-मन जीवण प्रीतम वारां, थारे रूप लुभाय।
खान-पान म्हारे फीका लागे, नैण रहा मुरझाय।
निस दिन जोवां बाट मुरारी, कब रे दरसण पाय।
बार-बार थारी अरजी करस्यूँ, रैण गई दिन जाय।
मीरा रे हरि थां मिलयां बिन, तरस-तरस जिय जाय।

(भजन खतम होते श्यामली आवत बाड़ी। झुक के प्रणाम करत बाड़ी। फिर बोलत बाड़ी।

श्यामली : ''महारानी जी के प्रणाम। गुस्ताखी माफ करब।''

मीरा : ''का बात बा श्यामली?''

श्यामली : ''दिन ढ़ल रहल बा, महारानी जी। अबही ले पूजा-आराधना में लागल बानी, भोजन के समय कबे बीत गइल।''

मीरा : (श्यामली के नजदीक आ के) ''तहरा, हमरा खाये के अतना चिंता हो गइल? इहाँ तक आ गइलू हऽ?''

श्यामली : ''त का करीं? रोज-रोज इहे बेरा हो जाता, गीत भजन में। देह टूट जाई नू!''

मीरा : (हँसि के) ''टूटे दे पगली। प्रेम में भूख लागेला पगली?''

श्यामली : ''हँ, लागेला। देह ना रही तऽ प्रेमियो ना पूछी हँ।''

www.bhojpurisahityangan.com

मीरा : ''तब तू प्रेम नइखू कइले। सच्चा प्रेम के आगे कुछो ना लउकेला, पगली खाना-पीना, सोना-नहाना सभ भुला जाला। इहाँ तक कि अपना देहो के सुधि भुला जाला।''

श्यामली : ''अच्छा-अच्छा, खूब करीं प्रेम। बाकिर खा-पी के करीं। चलीं, जल्दी चलीं। सभ महारानी लोग खा-पी के फोंफ काटत होइहें। रउवा उपासे भजन-भाव में लागल बानी।''

मीरा : ''अच्छा, तहरे बात। चलऽ, चलत बानी। (मीरा कृष्ण के चरण में झुँक के प्रणाम करत बाड़ी। आ श्यामली का साथे जात बाड़ी। चलत-चलत श्यामली पूछत बिया।)''

श्यामली : ''महरानी जी, गुस्ताखी माफ करब। एगो बात पूछीं?''

मीरा : ''हँ, श्यामली, पूछऽ। का बात ह?''

श्यामली : ''रउवा के ई पूजा-पाठ के सिखा दीहल?''

मीरा : ''हमार गुरु जी।''

श्यामली : ''के हऽ राउर गुरुजी, महारानी जी?''

मीरा : ''स्वामी रविदासजी।''

श्यामली : ''उनुका से कइसे भेट हो गइल, महारानी जी?''

मीरा : ''उहाँ के हमारा दादूजी के सत्संग में आवत रहीं। उहँवे से लगाव बढ़ल। हमरा बिआह में हमरा के आशीरबादो देवे आइल रहीं। आजो जब याद करींला, आ जाईला।''

श्यामली : ''साँचो महरानी जी?''

मीरा : ''हँ, पगली। भक्ति अइसन चीज हऽ। साँच भक्ति अइसन चीज हऽ।''

श्यामली : ''तब त गिरधर गोपाल जी भी आवत होइहें?''

मीरा : (हँसत बाड़ी) ''ऊ तऽ हरदम हमरा संगही रहेलन, पगली।''

श्यामली : ''आयँ! साँचो? लउकेलन काहे ना?''

मीरा : ''तहरा ना लउकेलन। हमरा तऽ लउकेलन।''

श्यामली : ''हमरा विश्वास नइखे होत, महारानीजी कि ऊ लउकत होइहें।''

मीरा : ''लउकि जइहें तऽ विश्वास करबू नू?''

श्यामली : ''हँ, तब काहें ना करब?''

मीरा : ''उनुका से प्रेम करेलू?''

श्यामली : ''ना, महरानीजी, हम परेम-वरेम केहू से ना करींला।''

मीरा : ''तब कइसे लउकिहें?''

श्यामली : ''रउवा करींला का उनुका से प्रेम?''

मीरा : ''तबे नू हमरा संगे रहेलन। हमार पहिलका बिआह उनुके से भइल रहे नू।''

श्यामली : ''महरानी जी, रउवो खूब बात बनाईं ला।''

मीरा : ''साँचो, पगली। बचपने में हमार बिआह उनुका संगे भइल रहे।''

श्यामली : ''तब काहें के हमरा महराज से बिआह कऽ लिहनी?''

मीरा : ''हम ना कइनी पगली, बप्पाजी, दादूजी कऽ दिहनी।''

श्यामली : ''अच्छा, अच्छा, बहुते बात बनवनी। चली राजमहल में। (जात बा लोग)''

www.bhojpurisahityangan.com

अंक – तीन

झलक - एक

(मीरा के राजभवन। मीरा एकतारा ले के बइठल एगो भजन गुनगुनात बाड़ी। एकतारा बजावत बाड़ी।)

अखयां तरशा दरसणा प्यासी।
मग जोवाँ दिण बीतां सजणी, णैण पड़या दुख रासी।
डारा बैठ्या कोयल बोल्या, बोल सुणाया री गासी।
कड़वा बोल लोक जग बोल्या, करहया म्हारी हाँसी।
मीरा हरि के हाथ विकाणी, जणम जणम की दासी।

(भजन गा के मीरा उठत बाड़ी। एकतारा एक तरफ धरत बाड़ी। तबही श्यामली आवत बाड़ी। हाँफत-रोवत मीरा के सामने खाड़ हो जात बाड़ी। उनुका मुँह से आवाज नइखे निकलत। आँखिन से ढ़र-ढ़र लोर गिरत बा। मन बेचैन बा, कुछ कहे खातिर। बाकी जजबा लागल बा।

मीरा उनुका के अचरज से देखत बाड़ी। कुछ पूछल चाहत बाड़ी। मन बेचैन हो जाता।

तबही नेपथ्य से आवाज सुनाता – ''खंडवा के लड़ाई में मुगल सम्राट बाबर का साथे जंग लड़त महाराज कुँवर भोजराज वीर गति पा गइलन। पूरा राजमहल मातम में डूब गइल बा। राजभवन के एलान बा, एह शोक में एक हफ्ता तक राज-काज ठप रही।''

मीरा कान लगा के आवाज के सुनत बाड़ी। मन आवाज पर टँगा जाता। तब तक एगो दूत महाराणा के संवाद लेके आवत बा। मीरा के सूचना देता।

दूत : ''महारानी जी के प्रणाम। महाराज के सूचना बा कि कुँवर भोजराज महराज, खंडवा युद्ध के मैदान में दुश्मन के साथ घनघोर युद्ध करत वीरगति के पा लिंहनी। दुखद समाचार खातिर क्षमा चाहत बानी।''

खबर सुनते मीरा के सदमा लागत बा। तत्काल मूर्छित हो के गिर जात बाड़ी। श्यामली चिल्ला-चिल्ला के रोवत बाड़ी – ''हाय महरानी जी! ई का हो गइल। बचावऽ लोग होऽऽऽ।'' हाय! महारानी जी! हाय रे हाय! (मंच पऽ अन्हार होता।.....)

अंक – तीन

झलक - दू

(मीरा के राजमहल। मीरा बिधवा बनल उदास बैठल बाड़ी, गहिरा चिंतन में। श्यामली आवत बाड़ी। मीरा के प्रणाम करत बाड़ी।)

श्याम : (झुँक के प्रणाम करत) ''प्रणाम महारानी जी।''

मीरा : (श्यामली का ओर देखत नइखी) ''आवऽ श्यामली। बइठऽ। कहऽ, का खबर बा, राजभवन के?''

श्यामली : ''जौहर के चरचा चल रहल बा, महारानी जी।''

मीरा : ''केकरा जौहर के? जौहर के, कि सत्ती होखे के?''

श्यामली : ''रउवा। हँ, हँ, सती होखे के। जौहर त मउवत के पहिले होला।''

मीरा : ''हमरा? सती होखे के?''

श्यामली : ''हँ। महारानी जी।''

मीरा : ''हमरा सती नइखे होखे के, श्यामली। कबो नइखे होखे के।''

श्यामली : ''ई तऽ राजवंश के परम्परा बा, महारानी जी। एह खानदान में हजारों हजार रानी, महरानी, पटरानी लोग

www.bhojpurisahityangan.com

जौहर भइल बा, अपना पति के मुअला के बाद उनका चिता पऽ खुद के भसम कऽ देले बा। सती हो गइल बा।''

मीरा : ''हँऽ श्यामली, हमरो पता बा। हमरो खानदान में जौहर के परम्परा बा। बाकी हम जौहर ना कइनी। ना सती होखब।

श्यामली : ''काहें महरानी जी? एह बात खातिर महाराणा जी राजी ना होइहें।''

मीरा : ''हम एकर विरोध करब, श्यामली।''

श्यामली : ''आज तक कवनो रानी विरोध नइखी कइले, महारानी जी।''

मीरा : ''ऊ डेरात रही लोग। एह से मरद समाज बलाते ओह लोग के चिता पऽ झोक देत रहे लोग।''

श्यामली : ''ना महारानीजी, गुस्ताखी माफ करब, ऊ लोग, अपना पति के बिना जी ना सकत रहे लोग। पति के बिना आपन जीवन बेअरथ समझ के खुदे चिता पऽ बइठ जात रहे लोग।''

मीरा : ''हम एह बात के ना मानब, श्यामली। सभ के अपना जीवन से प्यार होला।''

श्यामली : ''बिधवा होके जीयल अच्छा ना होखे महारानी जी। बड़ा दुरगति होला।''

मीरा : ''एह से कि मरद जाति एह समाज पऽ हावी बाड़न। ऊहे एह समाज के नियम-कानून बनवले बाड़न। मेहरारून के जिनगी के कवनो मोल नइखन समुझले। का मेहरारुन के जीव नइखे। कुछ मन नइखे। ऊ का सोचत बाड़ी, केहू पुछेला? ऊ जानवर हई? काठ-पत्थर हई? उनुका भीरी कवनो भावना नइखे? कवनो सोच-समझ नइखे?''

श्यामली : ''राउर बात सही बा, महारानीजी। बाकी ई बात मरद समाज से कही के?''

मीरा : ''हम कहब, श्यामली। हम कहब। हम विरोध करब। जी जान से विरोध करब। हम हरगिज सती ना होखब।''

श्यामली : ''सब महारानियो लोग राउरे सिकाइत करिहें। ओही लोग के विचार बा कि रउवा सती हो जाईं। राजमाता जी तऽ तेयारी में लागल बा।''

मीरा : ''हम सभ लोग के तेयारी विफल कऽ देब, श्यामली। हम राजमहल के सभ मेहरारू लोग के जानत बानी। दिन-रात परनिंदा आ चुगली में लागल रहेला लोग। सिंगार-पटार और बढ़िया-बढ़िया भोजन, ओह लोग के दिन चरचा बा। देश-दुनियाँ आ समाज के बारे में कवनो सोच नइखे।''

श्यामली : ''हँ महरानीजी, इहे ना चुप्पा-चुप्पी एने-ओने से लपि टाइलो रहेला लोग। क्षमा करब महारानीजी, छोट मुँह, बड़ बात निकल गइल।''

मीरा : ''तहार का विचार बा, श्यामली? मरद के मुअला का बाद मेहरारुओं के मार देबे के चाही? जियते चिता पऽ जरा देबे के चाही? मेहरारू ई

www.bhojpurisahityangan.com

दरद कइसे बरदास करत होइहें? इहे तऽ बड़ चिन्ता के विषय बा? सती होत के समय कतना छटपटात होई उनुकर परान?''

श्यामली : ''हमरा विचार के कवन मोल बा, महारानी जी? हम तऽ कबो ना चाहब कि रउवा जियते चिता पऽ बइठीं।''

मीरा : ''खाली हमरे बात नइखे, श्यामली। सँउसे औरत समाज के दुख-दरद के बात बा। काहें उनुका जिनगी के कवनो मोल नइखे? उनुका भावना के कवनो कदर नइखे? उनुका सोच-समझ के कवनो महत्व नइखे? का मेहरारू जानवर हईं? काहें उनुका के आठ परदा के भीतर राखल जाता? पढ़े-लिखे आ हथियार चलावे के मोका नइखे दियात? समाज के समुझे-बूझे के अवसर छिना गइल बा? का ई दुख के बात नइखे? ई दरद हमरा के हरदम सालत रहेला। एही से छुटकारा पावे खातिर हम आपन समय गिरधर मंदिर में बिताइला। हमरा दरद के-के जानी? खाली गिरधर जानत होइहें।''

श्यामली : ''आहि महरानीजी, एक दिन हमहूँ इहे बात मनही-मने सोचत रही। बाकी कहीं केकरा से? के सुनी? जियते खादो-भूसा दे दीही।''

मीरा : ''हमरा त ऊहे जिये के आधार बा, श्यामली। हमरा दादू जी के दरबार में हरदम साधु-संगत होत रहे। सत्संग-चरचा होत रहे। ओही घरी हम चैतन्य गुरु के भक्त जीवस्वामीजी से दीक्षा लिहले रहीं। बाद में गरु रविदास जी के आपन गुरु बना लिहनी। गिरधर गोपाल के भक्ति में लीन रहीला।''

श्यामली : ''बहुत अच्छा करींला, महारानीजी। चुगली-छिनारो से जान बाचल बा। हम तऽ इहे चाहब कि रउवा जुग-जुग जीहीं। हमनी के बहुत बतिअवनी जा जात-जात एगो भजन सुना दीहीं।''

मीरा : ''हमरे मन के बात कहि दिहलू, श्यामली। हमरा खातिर तऽ गिरधर गोपाल सब कुछ बाड़न। पहिलहूँ रहन। अबहियो रहिहें। सुनऽ सुनावत बानी।''

(मीरा भजन गावत, एकतारा बजावत बाड़ी।)

हे री म्हां दरद दिवाणी, म्हारां दरद न जाण्यां कोय।
घायल री गत घायल जाण्यां, हिवणो अगण संजोय।
जौहर की गत जौहरी जाणे, क्या जाण्या जिण खोय।
दरद की मरयां दर-दर डोल्यां, वैद मिल्या नहिं कोय।
मीरा री प्रभु पीर मिटोंगो, जब बैद साँवरो होय।

श्यामली : ''हाय महरानी जी, मन करत बा जुग-जुग राउर ई आवाज सुनतीं। रउवा हिया के दरद हमरो हिया में समा गइल बा। बाकी करीं का। रउवा चरन सेवा में सँउसे जिनगी गँवा दीहीं। इहे आखिरी सरधा बा। अब हमरा के हुकुम दीं।''

www.bhojpurisahityangan.com

मीरा : ''जा, श्यामली, जा। फेरु अइहऽ। मंदिर जाये के बा। फूल ले-ले अइहऽ।" (श्यामली झुँक के प्रणाम करत बाड़ी। जात बाड़ी।, मंच पर अन्हार होता)

अंक – तीन

झलक - तीन

(चितौड़ के राजभवन। राजवंश के दूनो खेमा हाड़ावंश आ मेड़तिया राठौर वंश के सामंत जुटल बाड़न। हाड़ा चौहान के अगुवाई में जुटल लोग मीरा के सती करे के पक्ष बा, जबकि राठौर वंश के लोग सती करे के विरोध में बा। वाद-विवाद होता।)

हाड़ा सामंत 1: ''मीरा के सती होखे से इनकार कइल राजवंश के अपमान कइल बा। उनुका सती होखही के पड़ी।''

राठौर सामंत 1: ''कवनो जरूरी नइखे। ई उनुका इच्छा पऽ बा। मन मानी तऽ होइहें, ना तऽ ना होइहें। केहू बलाते उनुका के सती नइखे कर सकत। ऊ भक्त हईं।''

हाड़ा सामंत : ''एह राजवंश के आपन मरजादा बा। ओकर पालन करे के परी। आज तक इहे होत आइल बा। पति के वीर गति पवला का बाद कवनो रानी सती होखे से इंकार नइखी कइले।''

राठौर सामंत : ''कइले बाड़ी। बाकी उनुकर बात नइखे सुनल गइल. बलाते चिता पर झोंक दिहल गइल बा। छटपटा के मूअल बाड़ी।''

हाड़ा सामंत : ''तू मीरा के पच्छ काहे लेत बाड़?''

राठौर सामंत : ''काहें ना लीहीं? ऊ हमरा वंश के कन्या हईं। उनुका इच्छा के मान राखे के पड़ी।''

हाड़ा सामंत : ''मीरा जब से एह खानदान में आइल बाड़ी। इहँवा के वंश परम्परा के विरोध कइले बाड़ी। इनिकर सुभाव शुरुए से जानत बा लोग।''

राठौर सामंत : ''ई कइसे? बात साफ करीं।''

हाड़ा सामंत : ''दुल्हिन बनि के आवते कुल देवी के आगे सिर ना झुकवली, दोसर कि लोक लाज के परम्परा तूरि के मंदिर में भजन गावे लगली, तिसरका जौहर से इंकार कऽ दिहली, चउथे रविदास के आपन गुरु बनवली, अवरू सुनब सभे?''

राठौर सामंत : ''हँ, हँ, सुनाईं। जतना होखे सभ सुना दीहीं।''

हाड़ा सामंत : ''तऽ सुनी सभे, साधु समाज का साथे नाचे-गावे लगली। आ अब सती होखे से इंकार करत बाड़ी। पूरा रनिवास में हल्ला बा कि कृष्ण के बहाने केहू से मिले जाली। बचपने से ई कवनो के प्रेम में पड़ल बाड़ी। अपना पति के वीर गति पवला के इनिका कवनो गम नइखे। आजो ओही प्रेम के इयाद में मगन बाड़ी।

राठौर सामंत : ''ई रउवा समझ के दोस बा। पहिले रउवा आपन समझ सुधारीं।''

हाड़ा सामंत : ''हमार समझ ठीक बा। हमरा वंश में बूढ़ मेहरारू छोड़ि के कवनो अइसन जवान मेहरारू ना भइली जे सती होखे से इनकार कइले होखे।

www.bhojpurisahityangan.com

इहाँ तक कि कुँवार लइकियो जौहर कइले बाड़ी सँ। दासी आ नोकरानियो जौहर आ संती भइल बाड़ी स। ई सभका से अलग राह पऽ चलत बाड़ी। ई कबो ना होई। बाद में ई राजवंश के नाव पऽ कलंक लगइहें।''

राठौर सामंत : ''इनिका भीतर अइसन आत्मबल बा। अपना पऽ भरोसा बा कि कबो कवनो गलत काम ना होई। मन ना डगमगाई। एह से ई विरोध करत बाड़ी।

हाड़ा सामंत : ''आक्रमणकारी दुश्मन जब विजेता बन जाला, केहू के इज्जत-आबरू ना छोड़े। ओह घरी औरत के लाज केहू ना बचाई। इनिकर आत्मबल कामे ना आई। बलाते घिसिया के ले जइहें सऽ। इज्जत लुटिहें सऽ।''

राठौर सामंत : ''एकर चिन्ता रउवा सभे छोड़ दीहीं। राठौर वंश अबही निमूद नइखे भइल।

हाड़ा सामंत : ''तू मीरा के मन बढ़ा रहल बाड़ऽ। उनुका के बचा ना पइब। एगो समय आई कि ना तू रहबऽ ना मीरा रहिहें।''

राठौर सामंत : ''हम राउर इशारा खूब समझत बानी। महारानी करमेती बाई हाड़ा, जवना दिने महाराणा संगा के अपना बस में कऽ के, विक्रमाजीत आ उदयसिंह के नाँवे रणधंभौर अइसन साठ-सत्तर लाख के जागीर वाला धरती कऽ दिहलें, ओही दिन एकर बीज डला गइल रहे। हाड़ा सूरजमल के संरक्षक बनावे के राज का रहे?''

हाड़ा सामंत : ''तू बात के बतंगड़ मत बनावऽ। मीरा के सती होखे खातिर तेयार कऽ दऽ। ना तऽ ठीक ना होई।

राठौर सामंत : ''मीरा जानवर ना हई। उनुको भीरी दिल-दिमाग बा। एकर निर्णय ऊ खुद लीहें। केहू बलात नइखे कर सकत। हम उनुका साथे बानी।''

हाड़ा सामंत : ''एकर भोग भोगे के परी, मीरा के।''

राठौर सामंत : ''जब ले महाराणा संग्राम सिंह के बेटा महाराणा रत्नसिंह के देह में जान रही, मीरा के केहू कुछ नइखे बिगाड़ सकत। हमहूँ राठौर धन्नाबाई के दूध पी के जवान भइल बानी। राठौर के बेटी हईं मीरा, हमार बहिन हई। हम खाली उनुकर देवरे ना हईं।''

हाड़ा सामंत : ''ठीक बा समय एकर फैसला करी।''

राठौर सामंत : ''हँ हँ, जरुर करी। समय एकर फैसला करी।''

(तमक के साथ बहरी जात बाड़न। उनुका पीछे आउर लोग जात बा। हाड़ा सामन्त आँखि लाल कइले उनुका के जात देखत बाड़न।)

(मंच पऽ अन्हार होता।)

– क्रमशः.....

काँट, ब्रह्मपुर, भोजपुर

www.bhojpurisahityangan.com

कलयुग आ ईमानदारी

□ डॉ. उमेशजी ओझा

रउरा मानी चाहे ना मानी, बाकी धोखाघड़ी, ठगी आ एक-दोसरा के टाँग खीचे के जमाना में ईमानदारी के मजा ही मजा बा। रउरा सभे के हमार बात अटपटा लागऽत होई, हमऽरा के पागऽल आ सनकी समझऽत होखऽब, कि कलयुग आ भ्रष्टाचार के जुग में अइसन कऽहे के हिम्मत करऽत बानी। मालिक हमार बात तऽ तनिक सुनी, हम पुरा ईमानदारी से आपन बात दोहरा सकऽत बानी बल्कि एकर खुलासा भी कर सकऽत बानी।

ईमानदारी होखऽला पऽ सबसे पहिला बात होई कि राउर जेब हमेशा हउला रही। जेकरा से तमाम तरह के परेशानियन से रउआ छुटकारा मिली। जइसे कि ना तऽ राउर जेब कटे के डऽर रही ना ही घर में चोरी होखे के खतरा, आ ना ही इनकम टैक्स वालन के छापा मारे के डऽर सताई।

ठन-ठन गोपाल होवे के चलते पहिले तऽ रउरा से केहु उधारो मांगें ना आई। केहु भुलऽल भटऽकल आइयो गइल तऽ ओकरा से आपन फाटऽल खाली जेब दिखा दिही। ऊ आदमी रउरा लगे के अइसन गायब होई जइसे गंजा के सिर से बाल। शायद ई सोच के कि कही रउये ओकरा से कुछ उधार ना मांग बइठी। ईमानदार होखला पऽ बाकी चीज तऽ छोड़िये दिहीं रोटी खाइल भी मुश्किल हो जाई। कवनो निहन सरऽक-सरऽक के महिना बितऽल करी। छुट्टी के दिन में भी प्रिये पत्नी आ बाल बच्चा के कहीं घुमावेके फुरमाईश पुरा ना करे के पड़ी, आ ना ही उ लोगऽन के खरीदारी खातिर मेला बाजार ले जाये के पड़ी। बऽस चुपचाप घर में पड़ऽल रही। अगर बाल बच्चा आ पत्नी कवनो चिज के फुरमाइस कर दिहऽले तऽ पहीले जवान से समझावे के कोशिश करीं। अगर ना मानऽस तऽ आखिर में बाहूबऽल तऽ बडऽले बा।

ईमानदारी होखला पऽ ना तऽ केकरो से जादा दोस्ती होई, ना कइसनो समाज में कवनो रुतबा, आ ना ही कवनो नातेदार रिश्तेदार रउरा के घेरी। एह से रउरा पासे समय ही समय रही, समय के कऽवनो कमी ना रही। बऽस रउरा पास चैन ही चैन होई। ईमानदारी होखला पऽ शायद कसहु रोटी तऽ ख. लेबि बाकी जिनगी के दोसर चीज बऽस सपना ही रह जाई। जेकरा से आपन पड़ोसियन, दोस्तन आ नाता रिश्तेदारन से कवनो जलन ना होई कि फंलावा के घरे ओकर फला समान हमरा घर से बढ़िया कइसे बा। अइसन जिनगी रउरा ईमानदार भइला पऽ ही मिल सकऽत बा।

ईमानदार भइला पऽ कुछ परेशानी तऽ जरूरे रउरा होई। जइसे राउर असुल बराबर दोसंरो के निजी फायदा से टकाराई। रउआ अपने आपके समाज आ एह दुनिया में ना पाइब। रउआ पाइब की रउआ से कम काबिल लोग आपन जिनगी में रउआ से कही ढेऽरी आगे निकलऽल आ कमयाब बाड़े। बाकी कबो अइसन देखले बानी कि गुलाब के साथे काँटा ना होखे।

–एच.एन.-39, डिमना बस्ती
डिमना रोड, मानगों
पोस्ट : एम.जी.एम. कॉलेज, जिला : पूर्वी
सिंहभूम, जमशेदपुर-831018
मोबाइल : 094313 47437

www.bhojpurisahityangan.com

विवशता कऽ वेदी पऽ

❑ देवेन्द्र कुमार

रोज लेखा सोमा आजु फेरि कुट्टी काटे खातिर आइल रहे। आपना हाथ में लटकल झोरा के दिवार में लागल खूंटी पऽ टांगला के बाद जइसहि ओकर नजर कुट्टी काटे वाला मशीन पऽ परल तऽ ऊ अकचका कऽ रहि गइल रहे। मसीनिया के हैंडिल तऽ टूटल रहे आउर ओकर छुरा भी निकलल रहे। गउशाला में पहिले सऽ ही धरल बोरन में भरल कुट्टी देखि कऽ सोमा कऽ जी धक सऽ रहि गइल रहे। ओकरा बुझात ना रहे कि ई सब कइसे हो गइल! ओहिजे इत्मिनान से बइठल आपन मालिक के ओरि सोमा सवालिया निगाह सें देखलस। सोमा के एह तरी चिहाइल देख के मालिक कहलन, ''अरे सोमा! लइकन सब अतना नटखट बाड़ सऽ कि कहऽ मत। आजु भोरे-भिनसहरे मसीनिया के हैण्डिल पऽ झूलि-झूलि कऽ बचवन सऽ तूर दिहलें। देख न, बबलुआ के तऽ चोटो लाग गइल बा। मसीनिया के छुरवा भी एकदमे भोंथरा गइल रहे, एह से छुरवो के धार करावे खातिर भेज दिहले बानी। सिंहजी के इहाँ से चार बोरा कुट्टी काम चलावे खातिर मंगउले बानी। एहे से आजु तू जा, काल्ह आ जइहऽ।''

सोमा चुप्पी साधले मालिक के बतकही सुनत रहे। ई लइकन सऽ खेलेंखेल में मशीन में हैण्डल नाही तुरले रहन सऽ ओकर दुन्नो बांहिओं के भी तूर दिहले रहल सऽ. हां, ओकर हाथ, काहे कि ओकर दुन्नो हाथे तऽ ओकर पूंजी बा। जब ऊ कुट्टी काटि तबहि न ऊ खाई, ओकर मेहरारू आउर बचवन सऽ खहिए, ना तऽ.....

सोमा के सामने आपन मेहरारू आउर लइकन के खुराकी के सवाल रहे। ओकर समझ में कुछो आवते ना रहे कि ऊ मालिक से आखिर कहे तऽ का कहे। कइसे कहे मालिक से कि ऊ आजु बिना कुछ खइले-पियले चलि आइल बा। घर में अनाज के एकोगो दाना तक ना रहे। सोमा आपन मन में विचार कइलस – काहे न मालिके से कुछ पइसा मांग लीहल जाउ। कल तऽ आके काम करहिं के बा। बाकिर हर बार ओकर स्वाभिमान आड़े आ जात रहे। चाहलो पर ओकर कंठ खुलत ना रहे।

गऊशाला में बांधल गाय-भैंसी सऽ सोमा के बेसे पहचानत रहि सऽ। ऊ सब बूझ जात रहलि कि सोमा जब कुट्टी काटी तबहिं उनका के सानी-पानी मिली। बाकिर ऊ शायद ई ना जानत रहलन सऽ कि सोमा भी तऽ आपन आउर आपन मेहरारू बाल-बच्चा सऽ के भोजन के जुगाड़े खातिर कुट्टी काटे आवेला। एह गरमी के मौसम में ओतना दूर आपन गांव से कोसो पैदल चल के ऊ रोज आवत रहे। भर दिन ऊ कुट्टी काटत बा आउर फेरि आपन पथराइल हाथन में पचास-साठ रुपिया लेके आपन घर चल जाता। ओहिजा ओकर मेहरारू आउर बाल-बचवन ओकर बाट जोहत रहलन – एह उम्मीद में कि सोमा चाउर लेके आई। ओकर मेहरारू उहे चाउर से भात बनाई, आउर मांड़-भात में नून डाल के ऊ सबहे आपस में मिल-जुल कऽ खइहें। थोड़े-बहुत भात जे बची ऊ ओकर मेहरारू राति खातिर रख दिही।

जाड़ा, गरमी, बरसात हर मौसम में, चाहे ऊ तीज-तेहवारो के दिन काहे ना होखे, सोमा रोज ठीक दस बजे में आ जाला। सबसे पहिले ऊ कुट्टी काटे वाला मशीन के छुरा के धार रेती से रगड़-रगड़ के

www.bhojpurisahityangan.com

पिजावेला। अइसन मालूम होला कि सोमा कवनो बलि के बकरा होखे आउर आपन बलि देवे के खातिर ऊ खुदे छुरा पिजा रहल बा। जब ऊ ई देख के संतुष्ट हो जाला कि अब छुरा पूरे तरी पिज गइल बा, तऽ ऊ थोड़े सा पुआर मशीन में लगाके जांचत बा कि पुआर कटेला कि नाही। जब पुआर बढ़िया से कटे लगेला तऽ ऊ आश्वस्त हो के आपन मालिक के बुलावेला मशीन में पुआर डाले खातिर।

पुअरा के गट्ठर के गट्ठर खुले लागेला आउर सोमा मशीन के हैण्डल पकड़ कऽ घुमावे के शुरु कर देला। मालिक मशीन में पुआर डालते जालन आउर पुआर खच-खच कऽ के कटे लागेला आउर कुट्टी के तऽ ढेरी लाग जाला। तेजी से चलत ओकर हाथ आउर घूमत मशीन के चक्का घड़ी के सूई जइसन चलत रहेला। शायद इहे काल के चक्का हऽ, जेकरा चलतहि जाई के बा। आदमी भले थक काहे ना जाव। गरमी के मउसम में तऽ अइसहि देहि जरत रहेला, ओकरा पऽ सोमा कुट्टी काटे में लागल रहेला। ओकर देहि पऽ कुट्टी के गरद जम जाला। सउसे देहि कुटकुटावत रहेला। बाकिर सोमा के एकर कुच्छो परवाह ना रहेला। ऊ तऽ कुट्टी काटतहि रहेला।

मशीन के चक्का ठीक बारह बजे रुकेला। तऽ ऊ छुरा के पिजावल शुरु करेला। ढेरि लागल कुट्टी के ऊ खाली बोरन में भरेला आउर एक किनारे खड़ा कर देला। साढ़े बारह बजे जइसहिं बगल के मस्जिद में अजान के आवाज सुनाला तऽ ऊ आपन सउसे देहि के झोरा से झाड़-पोंछ के बगले के दोकान में भात से बनल दारू पिये जल जाला। उहे माड़ी ओकर दोपहरि के भोजन बा। ऊ कुछ देर के बाद पी के लउटेला आउर फेरि मशीन बनि जाला। काम खतम कइला के बाद ओकरा मालिक से पइसा के दरकार परेला। बाकिर मालिक कबहुं-कबहुं ओकरा टाल देलन कि काल्हू आके पइसा ले जइहे। बाकिर सोमा के आगे ओकर मेहरारू आउर बाल-बचवन के खुराकी के समस्या मुँह फारले खड़ा रहेला। ऊ घिघियाय लागेला, ''मालिक! पइसा ना देब तऽ आजु हमार काम कइसे चलि?''

मालिक के समस्या बस अतने होखेला कि उनका लगे छोटहन नोट नइखे। अब भला सोमा के पाँच-पाँच सौ के नोट तुरा के देला के कवन जरूरी बा? बाकिर सोमा के मुसीबत ई बा कि बिना पइसा के ऊ बाउर कइसे खरीदी. मालिक आपन बेटा से थोड़े छोटहन नोट मांगी के सोमा के दे दिहलें। सोमा तऽ एकदमे धन्य हो गइल आउर आपन गांव के ओरि चलि गइल।

बाकिर आजु ऊ आपन गांव आउर कउन मुँह लेके जाव। ऊ अनिश्चितता के हालत में आपन खाली झोरा खूंटी से उतार के चल परल। ओकर आँखि में एगो अजीबे किसिम के सूनापन रहे, चेहरा निर्विकार सपाट जइसन। अवसाद के ऊ साक्षात् मूरत लागत रहे। गुरबत के आगि से झुलसत-झुलसत ओकर देहि सियाह हो गइल रहे। जेकरा में पसलियन आपन मौजूदगी के भान करावत रहे। ओकर वेशे भूषा तऽ ओकरा गरीबी के सबसे बड़हन पहिचान रहे। बस्तर के नाम पऽ कच्छो नाहि बस एगो पुरान-धुरान फाटल लूंगी कमर में बांधले रहे बाकिर सउंसे बदन उघार रहे। कबहुं कभार एकाध फाटल-पुरान जइसन-गंजी भी पहिर लेत रहे। बिखरल बेतरतीब खिचड़ी जइसन भइल बाल, बढ़ल दाढ़ी, खुल्ले पांव, हाथ में झोंरा लटकउले जेकरा में मटिया तेल के एगो शीशी परल

www.bhojpurisahityangan.com

रहेला। गाँव लौटते बखत ओकर झोरा में मटिया तेल, नून, चाउर, दियासुलाई जइसन ओकर रोजिना के चीज होखेला आउर का।

सोमा के देहिया के बनावट ई बतावेला कि ऊ कबहूं गबरू जवान होई। बाकिर ई कमरतोड़ मेहनत, बखत के मार अउरी चरम सीमा पर पहुँचल ई मंहगाई के चलते एहि उमिर में ऊ बूढ़ जइसन दिखत रहे। पता नहीं कइसे सोमा के आँखि के ऊ सूनापन बहुत-कुछ कह देत रहे – बिना कुछ बोलले-चालले।

सोमा गुमसुम चलल जात रहे। मन में उथल-पुथल मचल रहे। बाकिर चेहरा पऽ एगो अजीबे किसिम के शान्ति रहे। ई उहे शान्ति हऽ जे शान्त होला के बादो अशान्त होला। हठाते एगो आवाज ओकर ध्यान तूर दिहलस – ''अरे सोमा! हम तऽ तोहरे के खोजत रहिं।''

हैरान – परेशान सोमा देखलस कि आगे में कैलाश खाड़ रहे। ओकर मालिक के बगलगीर।

''तू जल्दी से हमार गउशाला चलऽ। ढेरि पुआर परल बा काटे खातिर। ऊ सार बाबूलाल बीमार पर गइल बा। ऐह से ऊ आजु आइले नइखे। चलऽ-चलऽ जल्दी करऽ।'' सोमा के ओरि देखत कैलाश कहलन।

अब जाके सोमा के जान में जान आइल आउर राहत के सांस लेलस। ओकरा लागल कि शायद साक्षात् भगवाने कैलाश के भेष में ओकरा काम देवे खातिर चलि आइल बाड़े। चुपचाप सोमा कैलाश के पाछे-पाछे चल परल। सोमा आश्वस्त हो चुकल रहे कि कम से कम ओकर मेहरारू आउर लइका आजु भूखे पेट तऽ ना सुतिहें।

– पुलिस अधीक्षक, नगर का कार्यालय
पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर-831 001
झारखण्ड, मो.-09905572035

गीत

गलत राह धइके हो जइबऽ बेपानी

❑ गौरीशंकर मिश्र 'मुक्त'

भ्रम मत डालऽ कि सूरुज चलेलन,
पृथिवी स्थिर रहँसु, तन ना गलेलन।
साँच बात ई हऽ कि पृथिवी चलेली,
आत्मा आ मन ना, शरीरे गलेलन।
परचार गलत कइके रोई मरबऽ जानी।
गलत राह धइके हो जइबऽ बेपानी।।

सहज हऽ प्रकृया, उजाला कऽ चिन्तन,
यही सोच चिन्तन कऽ फल हउवे दर्शन।
चिंतन हऽ मंथन, अमृत बरसावे।
सतही मंथन, हउवे केवल प्रदर्शन।
बाउर जब करबऽ तऽ केकर मुई नानी।
मिटि जाई विष पी के जीवन निशानी।।
सही राह धरबऽ त लक्ष्य तक पहुँचबऽ।
गलत राह धरबऽ त सिर धुनि पछतइबऽ।
कान काटी कउवा आ कहबऽ भकउवाँ,
रोइ-रोइ किमती जिनिगिया गँवइ बऽ।
सोइबऽ ना सुखवा कऽ चादर के तानी।
कटब ना हँसि-हँसि के, सुखवा कऽ चानी।।

तुलसी, कबीर, नानक, नीमन राहि धइके।
संत कहलइन जा, राम गुन गाइके।
एके रकत लाल, सभका में बाटे।
चलऽ जा आपस में, नेहिया लगाइ के।
'मुक्तो' समता चाहँसु, साच हम जानी।
एहि से असमतन से, कइ लिहलन कानी।।

– ग्राम-पोस्ट : रेवतीपुर, गाजीपुर
पट्टी : रुपान पाण्डेय
उत्तर प्रदेश, मो.-094501 62938

www.bhojpurisahityangan.com

आचार्य 'किरण' के इयाद में

□ डॉ. अरुण मोहन भारवि

बक्सर : स्वर्गीय आचार्य गणेशदत्त 'किरण' के तीसरी पुण्यतिथि आर्या एकेडमी, बक्सर के सभागार में विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बक्सर के बैनर तले श्री शिवबहादुर पाण्डेय 'प्रीतम' का अध्यक्षता में शिक्षक-दिवस 5 सितम्बर 2014 के ऊपरी बेरा से मनावल गइल, जेकर सफल संचालन कविराज राजनारायण सिंह 'राज' कइनी।

पुण्यतिथि के शुरुआत आचार्य गणेशदत्त 'किरण' के तैल-चित्र पर आगत साहित्यकारन के माल्यार्पण आ पुष्पांजलि से भइल। एकरा बाद सुप्रसिद्ध साहित्यकार आ 'गदहपूरना' के सम्पादक डॉ. अरुणमोहन 'भारवि' आज के एह कार्यक्रम के औचित्य पर रोशनी डालत कहनी कि किरणजी भोजपुरी साहित्य के पुरहर सेवा कइले बानी। इहाँ के एगो खाली कवि भा साहित्यकारो ना रहनी बलुक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अस एगो संस्था भा स्कूल रहीं। इहाँ के कविता कम आ कवि शिष्य ढ़ेर बनवनी। इहाँ के शिष्य लोग आजो पत्र-पत्रिका आ कवि-सम्मेलन में आपन सफलता के डंका बजा रहल बा।

एह अवसर पर डॉ. भारविजी 'किरण-बावनी' के नया ढ़ंग से प्रकाशित कई के आपन श्रद्धांजलि अर्पित करे के घोषणा कइनी।

श्री अनिल कुमार त्रिवेदी के कहनाम रहे कि आचार्य किरण जिनगी भर भोजपुरी माई के खोइंछा भरे में लागल रही, आ अन्त तक भोजपुरी के भलाई आ विकास खातिर निछावर रही। कुमार नयनजी आचार्य गणेश दत्त किरण पर आपन लिखित आलेख पढ़त किरण के साहित्य यात्रा पर रोशनी डलनी। डॉ. दीपक कुमार राय के राय रहे कि किरणजी पर बक्सर ना बलुक पूरा भोजपुरी साहित्य जगत फक्र करेला।

श्रद्धांजलि सभा के बाद एगो काव्य संध्या आचार्य गणेशदत्त किरण के सम्मान में समर्पित कइल गइल, जेकर शुरुआत श्री रामेश्वर मिश्र 'विहान' के श्रद्धांजलि गीत से भइल —

'तूरि के पिंजड़वा उड़ि गइले सगुनवां
सगुनवा बिनु ना, सुना लागेला अंगनवां
चमकेला 'किरन' साहित्य के जहनवां
झण्डा फहरवले भोजपुरी के ललनवां....
भाषा भोजपुरी के चढ़वले गगनवां, सगुनवां...

हास्य कवि श्री रामजी पाण्डेय 'अकेला' आपन हास्य कविता से सभकर मनोरंजन करत खूब वाहवाही बटोरलीं –

'हमरा से पूछस बाबा नकछेदी
ए बाबू के हवे ई नरेन्द्र मोदी'

किरणजी के प्रिय शिष्य श्री वशिष्ठ पाण्डेय किरणजी के तर्ज पर दुश्मन के ललकारत कहलीं –

'मन तोहार बहकल बा, लगले ठंढा जाई
भारत के सेना से पार तुहू पइबऽ ना
भारत के भरत अब मन से खिसियाइल बा
अतना मरइबऽ जे रार अब मचइबऽ ना।।'

राजनारायण सिंह राज आपन गजल से श्रोतालोगन के मन मोहनी –

'केहू से प्यार हो गइल त गजल गाइला।
उनसे तकरार हो गइल तऽ गजल गाइला।
जे भी आवेला तख्तोताज पर दुखड़ा सुनावेला।
'राज' बेकार हो गइल त गजल गाइला।'

www.bhojpurisahityangan.com

बयोवृद्ध साहित्यकार डॉक्टर एस.एन. दूबे बसंत के नेवता देत कहली –

'कोयल तुमको आना होगा
तुमको गीत सुनाना होगा'

डॉ. अरुणमोहन 'भारवि' आधुनिकता में रंगल गजल सुनवलीं -

'अच्छा दिन अइला के शोर बड़ा गहरा बा
बाकिर अंजोरिया पऽ आज बड़ा खतरा बा
पाक के टिटकारी पर हाफिज से खतरा बा
वैदिक के भेंट पर शुबहा तऽ गहरा बा'

श्री शिवबहादुर पाण्डेय 'प्रीतम' अपना अध्यक्षीय गजल से महफिल के एगो नया ऊँचाई देबे में कामयाब भइलीं –

'जिनगी के बधार में बिरिन के बिरवा कवन लगवले जाता
दरकल बा घर-घर के कोना, बहरी रंग चढ़वले जाता।'

एह काव्य संध्या में आचार्य गणेशदत्त किरण के स्मृति में काव्य पाठ करे वाला अन्य कवियन में सर्वश्री दीपनारायण सिंह 'दीप', जितेन्द्र मिश्र, श्री भगवान पाण्डेय 'निराश', उमेश कुमार पाठक 'रवि', संजय कुमार 'सागर', धन्नूलाल 'प्रेमातुर', रामविलास मिश्र, महेश्वर आझा 'महेश', मो. फारुक सैफी, चन्द्रशेखर 'गंधमादन', कुशध्वज सिंह, मुन्ना आ राकेश कुमार सिंह के नाम मुख्य रहे। कार्यक्रम के समापन अल्पाहार के बाद वशिष्ट पाण्डेय के धन्यवाद ज्ञापन से भइल।

– आर्य आवास, आर्या एकेडमी,
बंगाली टोला, बक्सर

दू गो गजल

❑ डॉ. बेकस

(1)

सभ सूरत पऽ सिंगार ना होला।
सभ चमन में बहार ना होला।
नेह नजरिन से कीन लऽ नगदे।
प्रीत पइंचा-उधार ना होला।
एगुड़े मीत मन के थाती हऽ।
म्यान में दू कटार ना होला।
लोर पपनी पऽ छटपटाये भले।
दर्द दिल के लखार ना होला।
होला मउअत जनम के दिन एगुड़े।
जेकर सउदा हजार ना होला।
खोंता अस गढ़ाला गजलन के।
जे कबों उजार ना होला।

(2)

तीर बेधत निकलिये गइल।
जान अखाड़ेरे चलिये गइल।
आग से दोस्ती का भइल।
घर फतिंगन के जरिये गइल।
एह दुनिया के कोरहाग में।
जे भी आइल उ चलिये गइल।
पी के गिरला से का फायदा।
जबकि गिर के सम्हलिए गइल।
आदमी, आदमी ना रहल।
लोग अतना बदलिये गइल।
ओह गजल के बसल याद में।
उम्र बेकस के ढलिये गइल।

सम्पादक - 'पनघट'
बेकस निवास, नोखा, रोहतास-802215
मोबाइल : 94314 64588

www.bhojpurisahityangan.com

बिरासत में दाग

❑ डॉ. उदय प्रताप कुशवाहा

माई हम जीये नइखी चाहत, हम आपन जान दे देब। हमरा-हमरा विरासत में दाग लागी गइल बा, हमार देह फलकित हो गइल बा। पाप के बोझ हमरा से ना ढोवाई। राधा अपना माई गिरजा के अंकवारी में पकड़ के पुका भार के रोवे लगली। बेटी के एतरे के हालत देखी के गिरजा के कवनो अनहोनी के खतरा बूझाइल, करेजा धड़के लागल, खड़ी भइल, दूबर होखे। अपना के सम्हार के बेटी के ढाढ़स बढ़ावे लगली, चुप हो जा बेटी! चुप हो जा, का भइल हऽ, के का कइल हऽ, हमरा के सब बात बताव। जान दिहल समस्या के हल ना हऽ, हालात के सामना करे के चाहीं। माई के दुलार राधा के दवा के काम कइलस, टूटत सांस के जान मिलल। राधा सब बात के अपना माई से बता देवे के सोच लेहली, काहें कि माई बेटी के सहारा होली, अउर बाप बेटा के। माई के प्यार, पुचकार पाके राधा के हिम्मत हो गइल रहे। सारा कहानी के कह गइली।

अमर, रमेश, उमा, बबलू चार गो लंगटिया यार रहले। कहे के तक चारों बी.ए. कऽ फाइनल के छात्र रहले, इण्टर, मैट्री ठेल-मठेल के पास। पइसा पानी के तरे बहावे लोग, काहें कि घर से पइसा खूब मिले। रास्ता चलत लड़िकी के बोलबाजी खूब करे लोग। ज्वार पथार के लोग ये लोग से परेशान रहे। एक दिन राधा एह लोगन के शिकार हो गइली।

राधा के सहेली किरन अउर लता कवनो कारण बस कोचिंग करे ना गइल लोग। राधा अकेले गइल रहली, शाम चार बजे के समय से कोचिंग रहे। लवटत में सांझ हो जाउ। अमर राधा के अकेले आइल देखलें तऽ जा के रमेश, बबलू अउर उमा से कहलें – यार चल लोग आज अकेले आइल बिया, मोका बढ़िया मिलल बा, फिर अइसन मोका मिली कि ना देर मत कर लोग।

राधा के घर से तीन किलोमीटर दूर जाये के परे, रास्ता पातर रहे, अमर अउर उनकर साथी सभे रहर में छीपल रहे। राधा के खिंच के रहर के भीतरी खेत में ले गइल लोग, फिर दुशासन वाला चीर-हरड़ शुरु भइल। राधा पैर पकड़ली, हाथ जोड़ली, बाकिर केहू के दया ना आइल। बारी-बारी सभे मुँह काला कइल। इनकर माई राधा के ऊपर भइल अत्याचार सुनला के बाद करेजा मुँह के आ गइल, पुका फार के रोवे लगली। पंचदेव जे राधा के बाप रहले ऊ कवनो काम के बात अपनी चाचा से बतियावत रहले। गाँव क एगो लड़िका दउरल आइल अउर पंचदेव से कहलस – चाचा! चाचा! चाची अउर राधा दीदी खूब जोर-जोर से रोवत बा लोग। का बात बा हो पंचदेव तनी जा ले देखब, हमरो के बतइह कि का बात बा। पंचदेव के चाचा कहलें।

मेहरारू अउर लड़की के रोवत देखले पंचदेव तऽ इन्हू के समझ में ना आवे की का करें, सोचत रहलें तले इनकर मेहरारू कहलीं – ए जी देखऽ! ई लड़किया के का हाल कइले बाड़सन। आऽऽऽ का भइल बा, तनी हमरो के बताव, काहे तू लोग रोवत रहलू हऽ। गिरजा सब बात बतावला के बाद कहली – चलीं चाचा जी के लगे अउर मुखिया जी के लगे। ये सब के साथे थाना पर चले के, हम कवनों के छोड़ब ना, जेल के हवा खिया के रहब। तहार दिमाग खराब बा। थाना- वाना के चक्कर में पड़बू, लोगन के जनइबू। कितना बदनामी होई, तहरा बुझाता। हमरा अच्छी तरे बुझाता। राउर दिमाग सठिया गइल बा। एकरा से बदनामी अउर का होई। घर में चुपचाप बइठ जाइब, काल्हे मुँहा-मुँही बात फइल जाई, तऽ लोग हमरी बेटियें में दोष निकाले लागी, कि होई ओकनी से सांठ-गांठ, केकर-केकर मुँह रोकब। हमरा कहे के

www.bhojpurisahityangan.com

मतलब ऊ ना रहल हऽ। हम कहत रहनी हऽ कि ओकनी के बाप से मिलके कहितीं। ओकनी के बाप से मिलबऽ ऊ का कहिह सन – करिह सन हम जानत बानी। रउवां के बीस-पचीस हजार के चारा फेंकिहसन अउर कहिहसन कि कहीं एकर बियाह कर दऽ, केहू से कहिह जनि ना तऽ तहार बदनामी होई। लड़की अउर शीशा एके होला, बदनामी से बचे के चाहीं। अब रउवे बताईं कि ओह रुपया के लेके का करब, राउर इज्जत लवटि आई। समोचार सुनले होखब, पेपरो पढ़ले होखब कि दिल्ली गेंगरेप के का हॉल भइल। सारा देश एक हो गइल रहे, सरकारो तक हिल गइल। सबके फाँसी के सजा भइल। रउवा संगे आज भइल बा, काल्हे दोसरो संगे होई, सबकर बेटी बरोबर हिय। ऐसे रउआ पीछे मत हटीं, जे सुनी राउर साथ देई। राधा के माई! तु हमार दिमाग खोल दिहलू, हम तऽ तहरा के निपढ़ गंवार बुझत रहनी हऽ, बाकिर तु त हमरो ले समझदार बाडू! राधा के संगे लेलऽ आवऽ चलल जा मुखिया जी के पास।

आज थाना परिसर खचा-खच जनता के हुजूम से भरल बा। कइ गो पत्रकार आइल बाड़न, महिला मोर्चा के सदस्य महिला आइल बा लोग। सबकर एकही नारा बा– गिरफ्तार करीं, गिरफ्तार करीं, बलात्कारियन के गिरफ्तार करीं। लड़की के इंसाफ मिले के चाहीं। दरोगा साहेब सभ के समझवनी विश्वास दिलवनी कि रउवा सब घबराईं मत, कवनो चिंता मत करीं, ई बेटी! रउवा सब के बेटी नइखे, हमरो बेटी बिया, हमनी के देश के बेटी बिया। हम बहुत जल्द सबके पकड़ब अउर अइसन डायरी बनाइब कि फाँसी से कम सजा ना हो। रउवा सब अपना-अपना घरे जाईं।

हर तरफ यही बात के चर्चा रहे, जहाँ दू-चार आदमी एक जगे हो जास, उहाँ चर्चा छिड़ जाउ – का जमाना आ गइल बा, केहू के बहिन-बेटी के बाहर निकलल दूबर हो गइल बा। ओ लकड़िया के का कसूर बा, जे ओकरा के कहीं के ना छोड़लसन। कइसन ओकनी के माई-बाप बा कि अपना लड़िकन के डॉट के नइखे राखत। हँऽ भाई! रउवा ठीक कहत बानी, लड़िकन के खूब रुपया-पइसा देत बाड़सन, पढ़ाई त नाम के बाऽ, नकल कके पास हो जातारसन, यही से अवरई खूब करतारसन। घरे पइसा के कमी हइये नइखे। बात तऽ ठीके बा, बाकिर हमनी के समाजो के दोष बा। रउवां सब देखतानी कि लड़की कुल कितना भड़काउ कपड़ा पहिरत बाड़ी सन, सारा बदन नंगे लउकत बाऽ। माई-बाप के नइखे बुझात कि अइसन कपड़ा में हमार लड़किया निकली तऽ लोग केकरा के दोष दीही! अउरू ना तऽ हाथ में मोबाइल धरा देत बानी। दिन भर बतियावते रहत बाड़ीसन।

एक जने शहर में रहत रहलें ऊ सबकर बात सुनत रहलें। उनका ई बात अच्छा ना लागल, कहलें – रउवां सब जवन बात करत बानी ऊ अपना जगे पर ठीक बा, बाकिर कपड़ा अउर मोबाइल से ये चाहे कवनो घटना के कवनो सम्बन्ध नइखे। रउवां सब हमार बात जरा गौर से सुनी, हमरे लड़की होखे अउर मान के चली कि नंगे वस्त्र में हमरी लगे आवे त का ओकरा इज्जत के साथे खेलल जा सकेला? हम का-हमरा नियर केहू बाप-भाई ऊ कर्म ना करी? रह गइल मोबाइल वाला बात तऽ, ई सब आवश्यक-आवश्यकता के समान हऽ। एकर दुरपयोग, पढ़े के जेकरा होई, कुछ बने के होई, ऊ ना करीं, आवारा तऽ कबो सदोपयोग ना करी।

आज राधा अउर उनकर माई-बाप, साथे-साथे पूरा समाज के संतोष भइल होई, काहें कि अमर, रमेश, उमा, बबलू सभे आपन गुनाह कबूल कर लेले रहे। अमर कहले – (जज साहब से) जज साहब! हमनी जवन कइनी आ ऊ बहुत बुरा कइनीं जा। हमनी के बहिन के साथे यदि अइसन भइल रहित तऽ हमनी के कबों सह ना पइतीं जा, ओके जान से मार देतीं जा। हमनी के जवन सजा उचित जान पड़े दीहीं, बाकिर एगो काम रउवा जरूर कराइब, नेट पर से ब्लू फिल्म

www.bhojpurisahityangan.com

सरकार के आदेश देके हटवां दीहीं। जज साहब एकरे वजह से सब युवा पीढ़ी बिगड़ल जाता।

अमर-अउर इनकर तीनों साथी के आपन गुनाह कबूल कर लीहला के बाद कानून के ये लोग के साथे नरमी बरते के सिवाय कवनो चारा नइखे। काहें कि अमर जवन.बात से अवगत कवलें ह शायद आज ले कवनों मुजरिम कानून के निगाह ओने ना दउरवले होई। हम प्रशासन के आदेश दिहल चाहत बानी कि ऊ जल्द से जल्द एपर अमल करे अउर हर जगह पर मोबाइल तथा सी.डी. दुकान के जाँच करो। अमर अउर इनकर तीनों साथी के सात-साल के सजा अउर पचास-पचास हजार के अर्थ दण्ड मिलल। न्यायपालिका ए लोग के उमर अउर सच्चाई देख के सजा काटला के बाद नया जीवन जीये के मोका दिहलस। राधा के पूरा परिवार के मान-सम्मान बढ़ गइल। हर लोग एह न्याय से खुश रहे।

राधा के माई अपना पति से कहलीं – का जी राधा के बाबूजी! कहतानी कि कहीं लइका देखतीं, राधो के बियाह कर दिहल जाइत। राधा के माई हम इहे बात तहरा से बतावे चाहत रहनी हऽ। हम एगो लइका देखले बानी। अरब में रहेला, परिवार सब पढ़ल-लिखल बा, लड़का हमरा बहुत पसन्द बा। सोमवार के दिन देखे के कहत बा लोग कहनी हऽ कि तहरा से राय लेके बताइब। तऽ एहि में सोचे के का बाऽ, जाई कही मन्दिर पर स्थान बतला देब। राधा के देखे खातिर लइका, लइका के माई, बहिन, भाई, बाबूजी आइल रहले। लइकी सबके बहुत पसन्द रहे। गिरजा अउर पंचदेव के मन में शंका बनल रहे कि कहीं राधा के अतीत जान जाई लोग त का होई, येही उधेड़बून में परल रहल लोग कि राधा के आवाज कान में परल। माई-बाबूजी! हां बेटी बोलऽऽऽ, का कहत बाड़ू। हम लइका से अकेले मिलल चाहत बानीं। काहे खातिर बेटी, हमार जीव बहुत डेराता। तूं डेरा मत माई, जवन होई ऊ आज हो जाई त ठीक बा, बाद में कुछ होई त ठीक ना रही।

राधा अउर सुरेश जवन लइका से बियाह तय होखे के रहे, अलग बइठ के बात करे लागल लोग। राधा कहली – काजी रउवा से कुछ कहल अउर जानल चाहत बानी, कवनों बुरा ना नू मानब, काहें से कि हमनी के आपन जीवन के सफर शुरु करके बा त जान-सुन लिहल, हम जरूरी समझतानी। ठीक बा राधा पूछऽ का जाने चाहतारू? जाने के नइखे, बतावे के बा, हमरा अपना फूफा अउर बाबूजी पर भरोसा बा, जहंवा हमरा जाये के बा, घर-वर ठीक खोजले होई लोग। हमार विरासत दागी बा, रउवा छः महिना पहिले पेपर में पढ़ले-सुनले होखब कि एगो छात्रा के चार-गो छात्र मिल के रेप कइलसन ऊ लइकी हमहीं हईं। राधा के नीर बिबाक सफाई सुन के सुरेश के कलेजा में धड़ाक दे लागल, होश-हवास उड़ गइल। कुछ देर के बाद अपना के सम्हाल पवलें। फिर अपना मन में विचारे लगलें। ई लइकी केतनी सच्ची बिया कि अपनी आप बीति सुना रहल बिया। एकरा इहो डर नइखे कि सच्चाई बतावत बानी, एकर परिणाम का होई? ये में लइकी के का दोष कहल जा, आये दिन अइसन घटना घटता। नारी त अबला होली, चार पिचास भीड़ गइलें तऽ कवनी लेरवान बचइहें। आये दिन पेपर-चैनल पर जाने-सुने के मिलत बा। करोड़पति, नेता, साधु-संत सभे एके रंग में रंगाइल बा। कई गो तऽ लइकियो बदचलन बाड़ी, ओकरो बिआह बढ़िया घरे हो जाता, केहू का जानत बा। एही उधेड़बून में परल रहले कि राधा कहली, देखीं, रउवां कवनो जवाब ना देहनी। रउवा निश्चिंत रहीं, राउर जवाब सुनके हमरा कष्ट ना होई।

सुरेश अपनी माई-बाबूजी के बुलवले अउर सारा बात बता दिहलें अउर अपनों फैसला सुना दिहले। सभे राधा के कलेजा से लगा लिहल अउर साथ-साथ जीये-मरे के आशिर्वाद दिहल।

-ग्राम : बौड़ी, पोस्ट : गुठनी
जिला : सीवान (बिहार), मो. : 072509 28626

www.bhojpurisahityangan.com

आस्था बा त रुन्हानो में रास्ता बा

❑ सत्येन्द्र सिंह 'सिवानी'

गुठनी (सिवान) :-

''बरनत छबि जहँ-तहँ सब लोगू।
अवसी देखिए देखन जोगू।।''

वाह कइसन ऊ जोग रहे कि अइसन सुनर बात संयोग से कहाइल ई परालब्ध के बात बा, ऊ लोग धन्य रहे जे अइसन अवसर पाके अइसन बात कहल, ओइसने अवसर बिहार राज्य सिवान, जिला-प्रखण्ड गुठनी के ग्राम सरेयाँ में अवस्थित आर.बी.टी. विद्यालय के हाता में लागल संवाद जलसा में पधरले अभिभावक आ छात्र-छात्रा लोग का मिलल। अइसन अवसर प्रदान करेवाला महापुरुष रहनी जगदम कॉलेज छपरा के भौतिक विद् प्राचार्य प्रो. प्रमेन्द्र कुमार सिंह जी, ज्ञान गंगा के अविरल धारा प्रवाहित करत सभकर चित फरीछ करत प्रो. सिंह कहनी कि आस्था होखे त मोती दुलम नइखे, अन्हरिया में ज्योति दुलम नइखे। अतने ना कुछ पा लेबे खातिर कवनो सोति दुलम नइखे, प्राचार्य महोदय के विचार एगो लमहर पाठ का रुप में प्रखण्ड गुठनी के जनमानस पर अंकित रही। पहाड़ी गुफा वाला रास्ता से गुजरे वाली रेलगाड़ी के यात्री जवनेंगा एकटक खाली इहे देखलें कि कब रेलगाड़ी गुफा पार कऽ जाइत ओह घरी दुनिया के हर बात परे होला। ओही तरे छात्र-छात्रा, अभिभावक, संचालक, शिक्षक, विद्यालय प्रबंधन के पदाधिकारी सब एकटक लगवले शायदे दुनिया बिरान लउकत रहे, बहुभाषा विद् स्वर्ण पदक पावे वाला के वाणी सचहूँ गुण, ज्ञान आ संस्कार रुपी कस्तुरी के पावे खातिर मृगा लेखा बेचैन त कइये दिहलस। ज्ञान से समाज के लाभ आ लमहर ओहदा में फरख समझावत प्रो. सिंह कहनी कि लमहर ओहदा ना लमहर ज्ञान आ संस्कार होला। हमार पुरूख पुरनिया संस्कारिक ना रहिते त गंवार न्यूटन वैज्ञानिक न्यूटन ना कहइते।

मुड़ी पर गिरल सेव उनके हवे ना कइलस बलुक सुने, गुने आ तब धुने खातिर मजबूर कऽ देहलस, नजीर देत उहाँ का कहनी कि साहित्य के पुरोधा, जयशंकर प्रसाद, कबीरदास, प्रेमचंद, मीरा, सूर, जायसी कवनो डिग्री ना लेले रहे। लोग ओ लोग का अंन्दर कन्टल संस्कार रहे। छात्र-छात्रा लोग से संवाद का क्रम में प्रो. प्रमेन्द्र कुमार सिंह जी बतवनी, अगर बेटा लमहर हाकिम हो जाऊ आ मतारी-बाप के गोड़ छू के प्रणाम ना करे त ओइसन बेटा बिना अंजोर के दूर के जोन्ही के समान बा। जयप्रकाश विश्वविद्यालय में पहिलका स्थान राखेवाला प्रमेन्द्र बाबू गुनी बानी। बारह जनवरी हमरा देश में युवा दिवस का रूप में स्वामी विवेकानन्दजी के जयन्ती के अवसर पर मनावल जाला। स्वामी विवेकानन्दजी के जीवनी से आपन विचार शुरु करत प्रो. सिंह का मन में बहुत लमहर मलाल रहले रही गइल कि हम छपरा से चलि के गुठनी ले आ गइनी बाकिर इहंओ एगो छोट फोटो भी ना मिलल कि महापुरुष के एगो फूल चढ़ा दी। अइसन विद्यालय में अइसन शुभ दिन आ फोटो के अभाव उहाँ खातिर कचोट के विषय रहे। बाकिर उत्साही मन सभ की कल्पना में उड़ान आ उत्साह में बिजली भर-देहलस।

शिक्षार्थी लोग के अनुशासन आ शिक्षक लोग के हम का हई आ का होखे के चाहीं के बात बतावत विद्यालय का व्यवसायिक ना होखे के सलाह देहनी आर.बी.टी. विद्यालय में प्रो. सिंह भगीरथ प्रयास से एतवत

www.bhojpurisahityangan.com

लमहर भाष्वर कीर्तिमान स्थापित कइला खातिर पंडित युगल किशोर नाथ तिवारी, संदीपनाथ तिवारी आ प्रदीपनाथ तिवारी जी के धन्यवाद दिहनी। एह जलसा के लमहर खुबी ई रहे कि नव भाषा के विद्वान प्रो. सिंह कुछऊ कहीं त सभका बझाउ दुनियाँ के हर बात अपना माई बोली भोजपुरी में समाहित कके बतावल एगो प्रतीक बा, भोजपुरी के माई आ अवरु सभ भाषा के मउसी के संज्ञा देके प्रो. सिंह कई गज छाती भोजपुरिया भाई लोग के ऊँच कइनी, एकरा खातिर 'भोजपुरी माटी', मासिक पत्रिका का ओर से प्रो. साहेब के लाख-लाख बधाई बा। काहे कि जवना माटी में श्री सिंह पैदा भइल बानी, ओही माटी से निकलल पंडित महेन्द्र मिसिर आ भिखारी ठाकुर जी के गुननी। एह अवसर पर भोजपुरी माटी मासिक पत्रिका के क्षेत्रिय प्रतिनिधि आ युवा भोजपुरी कवि बाबू सत्येन्द्र सिंह 'सिवानी' अभिभावक लोग का बीचे जाके पूछनी कि जलसा में आके रउरा सभन कइसन महसूस करतानी। सभे एकर जवाब दिहल कि हमनी अपना के खुशनसीब मानतानी जा कि गुठनी का धरती पर एगो बहुत लमहर विद्वान पवनी जा। जवना के कवनो जोड़ नइखे। गुठनी खातिर ई पहिला मोका बा। शिक्षानुरागी अभिभावक लोग में माननीय श्री काशीनाथ राय अवकाश प्राप्त अधिकारी डिफेंस, ग्राम-भरौली श्री विंध्याचल राय मुखिया मैरीटार, श्री चन्द्रशेखर राय, पूर्व मुखिया मैरीटार, श्री खुर्शीद आलम, पत्रकार, प्रो. प्रेमकुमार सिंह, रसायन विज्ञान विभाग एच.आर.कॉलेज मैरवा, श्री विद्यासागर सिंह, एच.आर.कॉलेज मैरवा, श्री हृदयानन्द मिश्रा पूर्व शिक्षक, ठाकुर रामविलास सिंह, सोंहगरा, श्री रामअवध चौधरी, बिहारी, श्री धनन्जय नाथ तिवारी, विद्यालय के शिक्षक अजय कुमार सिंह, अनिल कुमार सिंह का संघे सब अभिभावक सब लह-लोटत प्रो. सिंह के बखान करत अपना-अपना गृहधाम गइल। एह जलसा से अभिभावक का संघे छात्र-छात्रा लोग के दशा आ दिशा के प्रायोगिक ढंग से समझावत महाराष्ट्र से पधरले शिक्षाविद श्री नीतिश देवड़ेजी भी सराहे जोग बिचार दिहनी।

एकरा खातिर विद्यालय प्रबंधन कमिटि के साधुवाद बा एह क्रम में ई बात जरूर मिलल कि संवाद कार्यक्रम में अभिभावक लोग के भी विचार राखे के मोका मिले के चाही, एतने ना प्रखण्ड गुठनी में आर.बी.टी. स्थापित भइला का नाते क्षेत्रिय लोग जे इच्छुक होखे ओके भी समय-सुविधा का मुताबिक मोका देबे के चाही, जवन कार्यक्रम के पूरक होईत। एही का संघे छात्र-छात्रा, शिक्षक, अभिभावक, प्रबंध कमिटि, संस्थापक का संघे-संघे भोजपुरी माटी मासिक पत्रिका का ओर से कुशल संचालक श्री दयाशंकर सिंह दरौली के बोझन बधाई। कार्यक्रम के शुरुआत विद्यालय के छात्र-छात्रा लोग दीयरी जरा के कइल। एह पत्रिका का माध्यम से प्रो. प्रमेन्द्र रंजन सिंह जी के अभिनन्दन करत क्षेत्रीय प्रतिनिधि श्री सत्येन्द्र सिंह 'सिवानी' —

''युग-युग के भाग जगल हमनी के,
रउरा इहंवा अइनी।
सेवक संत समाज सुधारक,
हमनी का हरसइनी।
रउरा अइसन महापुरुष के,
चमको अमर निशानी।
रउरा युगल चरन में सादर शीश झुकावत बानी।''

ग्रा.-केल्हरुआ, पो.-चित्ताखाल
भाया-गुठनी, जिला-सिवान-841435
(बिहार), मो.-8084660707

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भाषा के प्रगति व उत्थान के लिए हार्दिक शुभकामनायें –

SHAMBHU NATH RAY, LLM *(Cal)*

Advocate, High Court Calcutta

S. N. RAY & ASSOCIATES

Law Professionals Since 1980

(Solution Providers)

BAR ASSOCIATION HIGH COURT

R/No. 6 (2nd Floor) Ph.: 2248 3169/7363

COURT TIME : 10.30 AM TO 4.30 PM

CONFERENCE TIME AT COURT

4.30 PM TO 5.00 PM

(MONDAY THROUGH FRIDAY)

RESIDENCE & CORRESPONDENCE :

174/7, B. L. SAHA ROAD, KOLKATA-700 053

PH.: 2403 2418, M.: 9331812829

CHAMBER :

356A, B. L. SAHA ROAD, KALABAGAN POST OFF.

AHABIRTALA, TOLLYGUNGE, KOLKATA-700 053

PH.: 2403 2418, M.: 9331812829

TIME : 7PM TO 9.30 PM (EXCEPT SATURDAY)

HUMAN RIGHT SERVICES :

SUNDAY 9 AM TO 2 PM (CHAMBER)

www.bhojpurisahityangan.com

फोटो साभार-प्रभात खबर (21/10 2014)

साधारण शोक सभा

शिवकुमार मिश्र के श्रद्धांजलि

शोक सभा में परिषद् सदस्यन द्वारा शिवकुमार मिश्र के श्रद्धांजलि देत

कोलकाता : भोजपुरी भाषियन आ भोजपुरी के विकास के खातिर अतुलनीय काम करे वाला पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् के प्रणेता, संस्थापक आ सचिव स्वर्गीय शिवकुमार मिश्र के याद में सोमवार, दिनांक 20 अक्टूबर 2014 के बड़ाबाजार स्थित महासभा भवन में शोक सभा आयोजित कइल गइल। सभा में परिषद् के संयुक्त सचिव डॉ. राधेश्याम श्रीवास्तव कहलीं कि स्व. शिवकुमार मिश्रजी भोजपुरी के विकास खातिर भोजपुरी परिषद् के स्थापना आज से 42 साल पहिले कइले रहन, अउर एकरा खातिर ऊ लगातार काम करत रहलें आ भोजपुरियन के विकास खातिर सदैव प्रयत्नशील रहले। उहाँ के भोजपुरी भाषा के विकास खातिर **"भोजपुरी माटी"** के प्रकाशन आ मान्यता खातिर सड़क से लेके संसद तक काम बढ़वले रहलीं। उनका स्वर्गवास से संस्था के काफी क्षति भइल बाटे। श्री वीरेन्द्र पाण्डेय, श्री अनिल ओझा नीरद, श्री अनिल कुमार दूबे, श्री विनोद कुमार सिंघानियां, श्री राजेन्द्र पाठक, श्री राधारमण पाठक, श्री पारसनाथ सिंह आदि कार्यकर्त्ता लोग शिवकुमार मिश्र के प्रति आपन श्रद्धांजलि समर्पित करत उनका बारे में आपन विचार प्रगट कइलन। स्व. मिश्र के अनुज (भाई) सभाजीत मिश्र कहलीं कि हमार भइया जइसे अपने परिवार के जनलन-मनलन आ काम कइलन ठीक वइसही ऊहाँ के एह संस्था खातिर ओही तरह सदा काम करत रहीं। भोजपुरी भाषा आ लोगन के विकास आ सांगठनिक रुप में मजबूत बनावे खातिर सदा तत्पर रहलीं आ भोजपुरी संस्कृति के विकास खातिर कई को विराट **'भोजपुरी महोत्सव'** के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन कलकत्ता के मशहूर नेताजी इण्डोर स्टेडियम में करवलीं। मानव कल्याण खातिर **'गंगा सागर तीर्थयात्री सेवा शिविर'** के संस्थापनों के उहां के महानायक रहलीं। शोक सभा में बड़ी संख्या में सर्वश्री प्रयागचन्द अग्रवाल, मंगलचंद नाहटा, संदीप तिवारी, संजय तिवारी, रणविजय सिंह, मनोज मिश्र, शिवजी सिंह, आलोक मिश्र, श्यामनारायण सिंह, दीपक बेगवानी, बाबूलाल दुगड़, सूरजनारायण प्रसाद, प्रदुमन सिंह, विश्वम्भर झा, पवन झा, वीरेन्द्र तिवारी, शिवकुमार प्रसाद, कमल अग्रवाल, राजकुमार अग्रवाल आदि अनेक लोग हिस्सा लिहल आ अपने संस्थापक, सचिव शिवकुमार मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण करके आपन श्रद्धांजलि दीहल। अन्त में दू मिनट खातिर ठाढ़ होके मौन रहि के उहांके आत्मा के शान्ति खातिर प्रार्थना कइल गइल। ओऽम् शान्तिः.....

भोजपुरी परिषद् के उद्देश्य

भोजपुरी भाषा भाषियन के संगठित कइल, उनुका के एकता अउर प्रेम के एगो धागा में पिरोवल, उनुका हर तरह के कल्याण, संरक्षण, पुनरोत्थान, सामाजिक, साहित्यिक, आ सांस्कृतिक उन्नति एवं विकास खातिर काम कइल–इहे प्रमुख उद्देश्य बा।

धर्म भेद, जाति भेद, सम्प्रदाय भेद के मिटा के आपस में प्रेम-परस्पर के वातावरण बनाईं।

स्वत्वाधिकारी पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् 24सी, रवीन्द्र सरणी, कोलकाता-700 073 के लिए, सभाजीत मिश्र द्वारा मिश्रा आर्ट प्रेस 24सी, रवीन्द्र सरणी कोलकाता-700 073 से प्रकाशित एवं मुद्रित। सम्पादक-सभाजीत मिश्र
E-mail : msabhajeet@gmail.com, मोबाइल : 09339747126